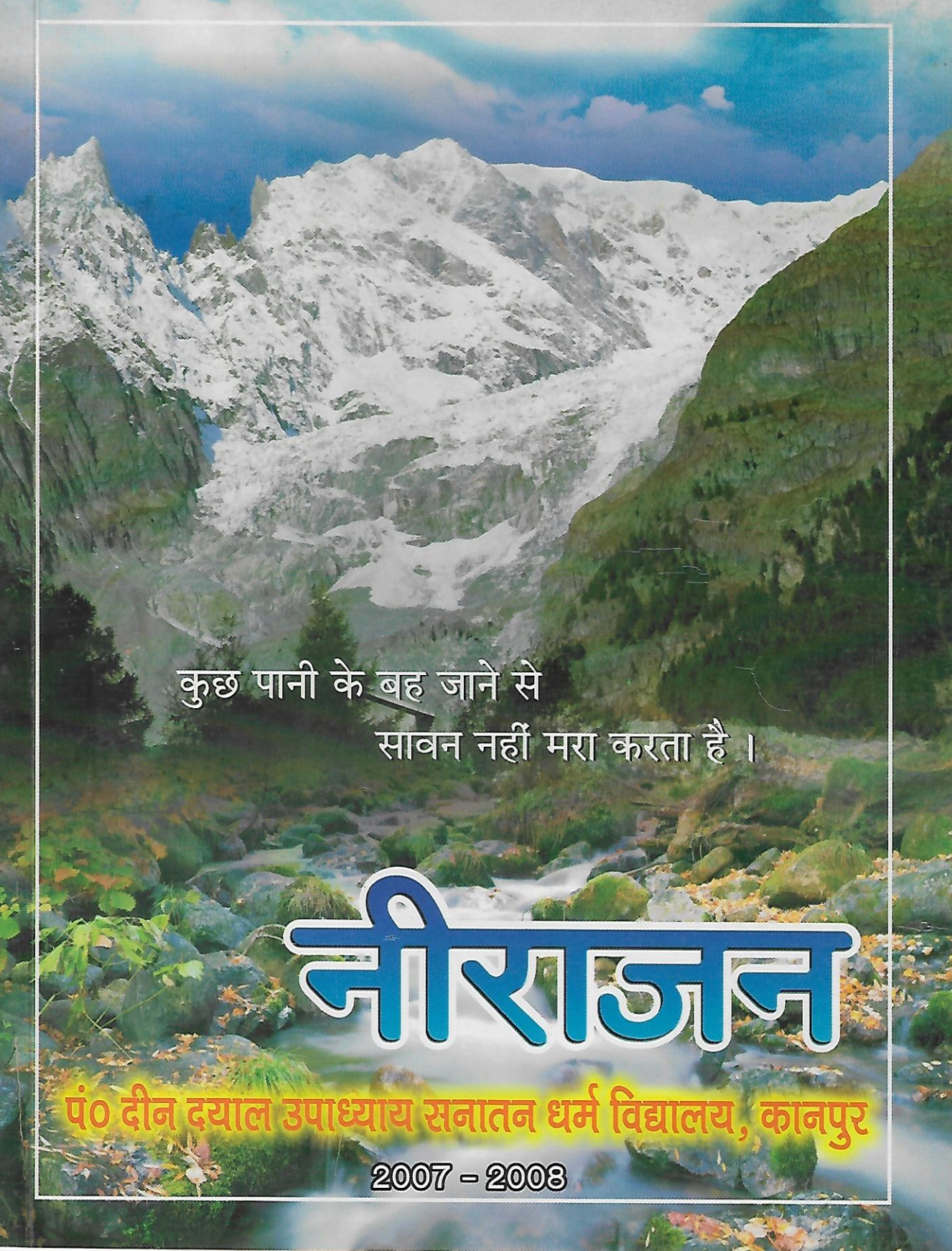
कुछ पानी के बह जाने से
सावन नहीं मरा करता है ।
नीराजन
पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर
2007 - 2008

आराध्या

वरदे वीणावादिनी ! वर दे।

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्यायय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2007 & 2008

-: संपादक :-

श्री दुर्गेश वाजपेयी (हिन्दी)

श्रीमती शारदा राव (अंग्रेजी)

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	अपनी बात	श्री दुर्गेश वाजपेयी (सम्पादक)	9
2.	सुन सको तो ...	श्री ओम शंकर त्रिपाठी	10
3.	वार्षिक आख्या	- -	12
4.	गोमाता का प्रताप	डॉ. कमल किशोर गुप्ता	18
5.	आनन्दमठ और वन्देमातरम्	दुर्गेश वाजपेयी (आचार्य)	26
6.	गुरु महान क्यों है?	अंकुर पटेल (नवम ख)	28
7.	कलियुग की औषधि : चित्रकूट	श्री सुधीर अवस्थी (आचार्य)	29
8.	सेतु समुद्रम पर टकराव	अंकुर पटेल (नवम ख)	32
9.	सरल स्वभाव	गुरुदत्त ओझा (अष्टम ख)	33
10.	एन. सी. सी. का प्रशिक्षण कैम्प	अजय सिंह रावत (नवम ख)	34
11.	धरती की ओर निहार	आकाश सचान (नवम ग)	36
12.	दुनिया में आग लगा देंगे	आकाश सचान (नवम ग)	36
13.	विद्यालय का त्योहार : वार्षिकोत्सव	यश अवस्थी (नवम ख)	37
14.	दशहरा मेला : संस्मरण	आशीष मिश्र (अष्टम क)	40
15.	संवेदन शून्यता (संस्मरण)	निखिल श्रीवास्तव (द्वादश ख)	41
16.	हास्य कविता	शोभित मिश्र (सप्तम् क)	42
17.	परिस्थितियाँ	आनन्द बाबू (द्वादश क)	43
18	परिणाम (दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता)	--	44
19.	रामू की नियति	अखिल मिश्र (द्वादश क)	45
20.	कलियुग की आग	मो. अफजाल अहमद (अष्टम ख)	46
21.	सेतु समुद्रम परियोजना : धार्मिक आस्था पर एक आघात	दिव्यांश त्रिपाठी (द्वादश क)	47
22.	गुमराह होता भारतीय समाज?	शशांक तिवारी (द्वादश ख)	49
23.	संतोष	प्रखर अवस्थी (अष्टम क)	50
24.	अनहोनी	यश अवस्थी (नवम ख)	51
25.	आह्वान	सुयश मधुर दीक्षित (एकादश ख)	53
26.	राम दुहाई, विज्ञान क्यों बनायी?	शीतांशु तिवारी (द्वादश क)	54

27.	सत्य की खोज	शोभित मिश्र (सप्तम् ख)	55
28.	देश की हालत	विश्वेश शुक्ल (द्वादश क)	56
29.	कोई और आयेगा	संकल्प त्रिवेदी (द्वादश क)	57
30.	दया की महत्ता	वैभव वरीश सिंह (सप्तम ख)	58
31.	'कौन बड़ा है?'	प्रभात सिंह (सप्तम क)	59
32.	गाँधी का रामराज्य	श्वेताङ्क भदौरिया (नवम ख)	60
33.	जादुई पीपा	हर्षित शुक्ल (अष्टम क)	61
34.	आईना दो हजार सात	प्रणव त्रिपाठी (नवम ख)	62
35.	सत्ता के दीवाने	रवि शङ्कर दीक्षित (नवम ख)	63
36.	चम्पा काले-काले अक्षर नहीं चीन्हती	संकल्प (द्वादश क)	64
37.	अवतार	प्रणव त्रिपाठी (नवम ख)	65
38.	आमंत्रण पत्र	रविकान्त वर्मा (अष्टम ख)	66
39.	मेरा विद्यालय है महान	अंकित बाबू (अष्टम् ख)	66
40.	महँगाई का ताण्डव	रविकान्त वर्मा (अष्टम ख)	67
41.	'मेरी गंगासागर यात्रा' (यात्रा विवरण)	प्रतीक मालवीय (सप्तम क)	68
42.	यात्रा का विराम (यात्रा विवरण)	अंकुर मिश्र (द्वादश ख)	69
43.	'भ्रष्टाचार के रूप में शकुनि मामा'	आशीष प्रताप सिंह (नवम ख)	70
44.	शादी पक्की कर दीजिए	तनुज त्रिपाठी (नवम ख)	71
45.	धन	तनुज त्रिपाठी (नवम ख)	72
46.	माँ-बाप को भूलो नहीं	विशाल पाण्डेय (अष्टम क)	72
47.	'शिवार्पण'	वैभव कटियार (अष्टम ख)	73
48.	स्पेस एलीवेटर (अंतरिक्ष का रेलमार्ग)	सौरभ रस्तोगी (द्वादश क)	75
49.	नया सवेरा	हर्षित शुक्ल (अष्टम् क)	76
50.	किससे क्या सीखें?	हर्षित शुक्ल (अष्टम् क)	76
51.	क्या आप जानते हैं?	अखिल गंगवार (अष्टम क)	77
52.	महत्वपूर्ण विचार	अखिल गंगवार (अष्टम क)	77
53.	पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की ईमानदारी	इलेश शुक्ल (नवम ख)	78
54.	रुपया	शुभम वाजपेई (द्वादश ख)	78
55.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान	श्रीपति मिश्र (सप्तम ख)	79
56.	महात्मा गाँधी	आशीष मिश्र (अष्टम क)	80
57.	फौजी	श्रीपति मिश्र (सप्तम ख)	81
58.	कुछ महापुरुषों के श्रेष्ठ वाक्य	आशीष मिश्र (अष्टम क)	82
59.	संस्कृत भाषा	आशीष मिश्र (अष्टम क)	82

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,

प्रबल आत्मविश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता

एवं

निस्सीम भाव संपन्ना मनः शक्ति का

अर्जन कर,

अपने जीवन को निस्पृह भाव से

भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही

हमारा परम साध्य है।

60.	प्लास्टिक पच्चीसा	सौरभ रस्तोगी (द्वादश क)	83
61.	व्यंग्य	उज्ज्वलदीप (अष्टम क)	84
62.	मानव हस्त	आशीष मिश्र (अष्टम क)	84
63.	नयी पक्षी जाति की खोज	हर्षित अग्रवाल (अष्टम क)	85
64.	पहेलियाँ	हर्षित अग्रवाल (अष्टम क)	85
65.	क्या आप जानते हैं?	हर्षित अग्रवाल (अष्टम क)	85
66.	हिन्दी भाषा	अनिल गंगवार (अष्टम क)	86
67.	गणित के दोहे	हर्षित अग्रवाल (अष्टम क)	87
68.	भारत की सुप्रसिद्ध महिलाएँ	अनिल गंगवार (अष्टम क)	87
69.	भूलभुलैया	अखिल गंगवार (अष्टम क)	88
70.	सब्जी मंडी का दंगा	अखिल गंगवार (अष्टम क)	88
71.	कुछ रोचक तथ्य	हिमांशु तिवारी (दशम ख)	89
72.	भौगोलिक ज्ञान	ऋषभ रस्तोगी (अष्टम ख)	89
73.	जिन्दगी की पतंग	संकल्प (द्वादश क)	90
74.	श्रद्धांजलि : कवि त्रिलोचन	संकल्प (द्वादश क)	91
75.	त्रिलोचन जी : एक परिचय	संकल्प (द्वादश क)	92
76.	त्रिलोचन जी के बारे में	संकल्प (द्वादश क)	93
77.	असफलता से हारो मत	सर्वेश वर्मा (नवम क)	94
78.	महाराज़ पृथ्वीराज चौहान	नीलांशु शुक्ल (द्वादश ख)	95
79.	कोशिश करने वालों की हार नहीं होती	आशीष सिंह बुन्देला (दशम ख)	96
80.	हम बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?	विश्वेश शुक्ल (द्वादश क)	97
81.	नया छन्द फिर लिखता हूँ	विश्वेश शुक्ल (द्वादश क)	98
82.	ईश्वर की कृपा समझो	सर्वेश वर्मा (नवम क)	99
83.	किसका प्रेमी है आसमान?	शूरवीर सिंह (दशम ख)	99
84.	कुछ प्रेरक वाक्य	हिमांशु तिवारी (दशम ख)	100
85.	मेरी प्यारी नीराजन	सुप्रिय मणि शुक्ल (अष्टम ख)	100
86.	स्वागत करने का तरीका	सुप्रिय मणि शुक्ल (अष्टम ख)	101
87.	विशेष जानकारियाँ	सुप्रिय मणि शुक्ल (अष्टम ख)	101
88.	वो दशहरे की रात (एकांकी)	प्रणव त्रिपाठी (नवम ख)	102
89.	इनके दुम जो होती	मंगलम मिश्र (सप्तम ख)	104
90.	हे नर! दीनता को त्याग	गौरव मिश्र (सप्तम ख)	105
91.	और क्या लिखूँ?	रौनक कमल (नवम ग)	106
92.	उफ़ ये पढ़ाई	यश कुमार उपाध्याय (सप्तम ख)	106
93.	पढ़ो और हँसो	यश कुमार उपाध्याय (सप्तम ख)	107

94.	श्रद्धांजलि : श्री त्रिलोचन जी	संकल्प (द्वादश क)	108
95.	क्या आप जानते हैं?	यश कुमार उपाध्याय (सप्तम ख)	109
96.	मुझे वोट दो	अक्षत श्रीवास्तव (सप्तम ख)	109
97.	पढ़ना लिखना	आदेश अग्रवाल (नवम ग)	110
98.	वृक्ष पहेलियाँ	सौरभ रस्तोगी (द्वादश क)	111
99.	मूर्ख राजा और बुद्धिमान महामंत्री	रोहन शर्मा (सप्तम ख)	112
100.	हँसना मना है	रोहन शर्मा (सप्तम् ख)	113
101.	अविचल साधना, अक्षत संकल्प	अक्षय अवस्थी (द्वादश क)	114
102.	यदि ऐसा हो जाये	आदेश अग्रवाल (नवम ग)	116
103.	मेहनत	प्रखर अवस्थी 'मृणाल' (अष्टम क)	116
104.	आतंकवाद	आकाश सचान (नवम ग)	117
105.	स्मरण योग्य बातें	आकाश सचान (नवम ग)	118
106.	फूल	अंकित शर्मा (द्वादश क)	118
107.	आओ सेतुबन्ध रामेश्वरम् की रक्षा करें	श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री	119
108	हमारा आचार्य परिवार	- -	123

English Section

1.	Editorial	Sharda Rao	3
2.	Love is life	Vishwesh Shukla (XIIth 'A')	4
3.	Rome was not built in a day	G. P. Verma (Dept. of English)	5
4.	You will Succeed sure	Pushpendra Yadav (9th 'A')	6
5.	Deendayal Ji and Gandhiji : The Best Similarity	V. S. Pandey (Acharya)	7
6.	A fifteen ways to Develop Personality	Avinash Singh (9th 'C')	8
7.	Our Cultural Programme	Sharda Rao (Lect. Deptt. English)	9
8.	Gold	Aditya Pratap (7th 'A')	10
9.	Increasing disobedience among youth	Anand Srivastava (Teacher, Dept. of English)	11
10.	Biodiesel : The Fuel of Future	Shubha Tiwari (Department of Biology, Teacher)	12
11.	Equality	Aditya Pratap (7th 'A')	12
12.	The Pen is mightier than Sword	Ankur Katiyar (12th 'B')	13
13.	What are Friends	Divyansh Chaudhari (9th 'B')	14
14.	Religion and Politics	Sankalp (XII 'A')	15
15.	Slave	Aditya Pratap (7th 'A')	15

16.	Think India Workshop	Sankalp Kumar Dwivedi (XIIth 'A')	16
17.	Sow	Aditya Pratap (7th 'A')	16
18.	The U.N.O.	Padam Ji Omar (XII, 'A')	17
19.	5 Steps to achieve successess in every Endeavour	Prakhar Shukla (12th 'B')	18
20.	My School : 7 Years	Akshay Awasthi (12th 'A')	19
21.	Awareness	Nikhil Gupta (7th 'A')	21
22.	The 37th Annual Function : As I observed	Akshay Awasthi (XIIth 'A')	22
23.	The Paradox of Our Age	Ravi Shanker (9th 'B')	24
24.	Shiva Jee	Padam Shahji (XII 'A')	25
25.	Slip	Aditya Pratap (7th 'A')	25
26.	Ways of Living	Vishwesh Shukla (XIIth 'A')	26
27.	Our School Life	Ravi Shankar Dixit (IXth 'B')	28
28.	Time	Vishal Sharma (XIth 'B')	29
29.	Success : How to Achieve it	Prakhar Awasthi (VIII 'A')	30
30.	A Leader for the Youth of India	Nitesh Kumar Singh (XIth 'B')	31
31.	Indians Brains : Working abroad (A Gain or Drain)	Vibhas Misra (XIth 'A')	32
32.	Kalam's 10 Points Oath for Students	Ravi Raj Verma (XIth 'B')	33
33.	A Strange Conversation	Ravi Raj Verma (XIth 'B')	34
34.	Success	Prasant Patel (7th 'A')	34
35.	Titanic	Pushpendra Pratap Singh (XIth 'B')	35
36.	A Mathematical Joke	Pushpendra Pratap Singh (XIth 'B')	36
37.	Work, Work, Work	Pushpendra Pratap Singh (XIIth 'B')	36
38.	In Brief : Tsunami	Ujjawal Deep (8th 'A')	37
39.	Enhancing the Spiritual Powers	Ajay Anand Yadav (XIth 'B')	38
40.	Tulsidas Ji : A Great Hindi Poet	Aditya Vikram Singi (VII 'B')	39
41.	Reality of Life	Abhinav Shukla (11th 'B')	40
42.	Money & Education	Vishal Sharma (11th 'B')	41
43.	What is Mathematics	Abhay Kumar Pandey (11th 'B')	42
44.	Laughing Corner	Abhay Kumar Pandey (11th 'B')	42
45.	Fact of Life	Hariom Gupta (11th 'B')	43
46.	Life	Aditya Pratap (7th 'A')	43

47.	Ayurveda : A precious gift of Nature	Aditya Kumar Uttam (XIth 'B')	44
48.	Silently	Aditya Pratap (7th 'A')	44
49.	His Holiness - The Dalai Lama	Ujjwal Deep (8th 'A')	45
50.	A Sound mind lives in sound body	Nikhil Gupta (7th 'A')	45
51.	Our Annual Function Night	Arpan Srivastava (Xth 'B')	46
52.	Family of Subjets	Nikhil Gupta (7th 'A')	46
53.	Iron Lady	Pranav Tripathi (9th 'B')	47
54.	Good Health	Prasant Patel (7th 'A')	47
55.	Art is the Life and Life is Art	Pushpendra Yadav (9th 'A')	48
56.	Time	Pushpendra Yadav (9th 'A')	48
57.	Indian Police	Pushpendra Yadav (IXth 'A')	49
58.	NASA	Shwetank Singh Bhadauriya (9th 'B')	50
59.	Do You Know?	Shwetank Singh Bhadauriya (9th 'B')	50
60.	Webcasting	Yash Awasthi (IX 'B')	51
61.	Leader and Boss	Divyansh Chaudhari (9th 'B')	51
62.	Word in its Number	Ram ji Mishra (VIIIth 'A')	52
63.	Never Forget	Ramji Mishra (VIIIth 'A')	53
64.	The Pride of Being an Indian	Shreyansh Tiwari (8th 'A')	54

अपनी बात

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका नीराजन का 2007-08 का अङ्क आपके हाथों में है। विद्यार्थियों की पत्रिका में उनके द्वारा रचित साहित्य है, उनकी सांस्कृतिक तथा खेलकूद की गतिविधियों से सम्बन्धित चित्रावली है। व्यस्त जीवन से हमको कुछ समय साहित्य के अध्ययन के लिए निकालना चाहिए। साहित्य हमको यह प्रेरणा देता है कि जीवन कैसे जिया जाये?

मनुष्य के पास बुद्धि के साथ-साथ हृदय भी है। बुद्धि का सम्बन्ध चित्रकारों से है, तर्क से है, उपयोगी ज्ञान से है, हृदय का सम्बन्ध अनुभूति और भावनाओं से है। जीवन में दोनों का महत्व है, किन्तु उनके क्षेत्र अलग-अलग हैं। किसी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में कर्म-कौशल प्रकट करने और इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि का ज्ञान प्राप्त करने में बुद्धि का काम होता है; किन्तु स्वार्थरहित मानव सम्बन्धों, किसी सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उल्लसित होने, किसी की दीन-हीन दशा देखकर करुणा से द्रवीभूत होने आदि में हृदय काम आता है। माँ जब अपने पुत्र को प्यार करती है तो बुद्धि से नहीं हृदय से प्यार करती है। अस्तु, मानव जीवन के बुद्धि पक्ष और हृदय पक्ष को ध्यान में रखते हुए साहित्य के व्यापक और विशिष्ट दो अर्थ ग्रहण किये जाते हैं। व्यापक अर्थ के अन्तर्गत मनुष्य की बुद्धि और हृदय दोनों से सम्बन्धित सार्थक और लिपिबद्ध सामग्री को साहित्य कहते हैं। इस अर्थ के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, विज्ञान, जीवनी, नाटक, कविता, उपन्यास, कहानी, एकांकी आदि सभी कुछ 'साहित्य' है। सीमित या विशिष्ट अर्थों में वही साहित्य 'साहित्य' है जिसका सम्बन्ध हमारे हृदय से है जिसमें हमारे हृदय को उल्लसित कर, हमारी भावनाओं और अनुभूतियों को तीव्र करने की शक्ति है, जिसमें भाव-लालित्य है, कल्पना है।

साहित्य के बिना जीवन नीरस हो जायेगा। साहित्य में तर्क और प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है। उससे जिस आनन्द की सृष्टि होती है; उससे दो व्यक्तियों के बीच का, दो देशों के बीच का पार्थक्य नष्ट हो जाता है। ऐक्य की अनुभूति वैसे भी सुखकर होती है। साहित्यकार जब सबमें अपने को देखता है तो वह अपने जीवन में पूर्णत्व का, संतुलन का अनुभव करता है। संसार में जहाँ कहीं यह पूर्णत्व है, संतुलन है, वहीं सौन्दर्य की सृष्टि होती है। हृदय-वृत्ति का उज्ज्वल पक्ष ही सौन्दर्य है। जहाँ सौन्दर्य है वहाँ रस है और रस-मग्न मनुष्य ही आनन्द की भूमि पर स्थित होकर मानव मात्र के साथ एकात्मता का अनुभव करता है। यह क्रम चिर पुरातन होते हुए भी चिर नवीन है। साहित्यकार अपने चारो ओर भावों का एक ऐसा संसार बसा लेता है जो देश काल से परे है। साहित्य मनुष्य के लिए नित्य एवं अखण्ड विराटत्व का प्रतीक है।

- दुर्गेश वाजपेयी

सुन सको तो .....

- श्री ओम शंकर त्रिपाठी
(प्रधानाचार्य)

सुन सको तो सुनो गीत मेरे, फिर न शायद सुना पायेंगे।
चल सको तो चलो साथ तुम भी, फिर न वापस कभी आयेंगे।।

दोपहर ढल चली पूस का दिन,
रोशनी गिन रही बैठ चंद पल-छिन।
साज-सामान बिखरा पड़ा है,
प्यास है किन्तु रीता घड़ा है।।

है अजानी डगर रात का है सफर साथ वाले न आ पायेंगे।
सुन सको तो सुनो ....

जब सबेरा हुआ क्यों न जागा,
व्यर्थ सोता रहा मैं अभागा।
उठ गया जो समय पर खुशी से,
वास्ता रख रहे सब उसी से।।

भीड़ तो है मगर मैं इधर, वे न शायद भुला पायेंगे।
सुन सको तो सुनो ....

भीड़ जब रास आयी न उनको,
कह हटे 'अब हँसो या कि तुनको'
वे अकेले इधर मैं अकेला,
दो घड़ी हो गया एक मेला।।

मोह था इस कदर मैं हुआ दरबदर वे उन्हें फिर लिवा जायेंगे।
सुन सको तो सुनो ....

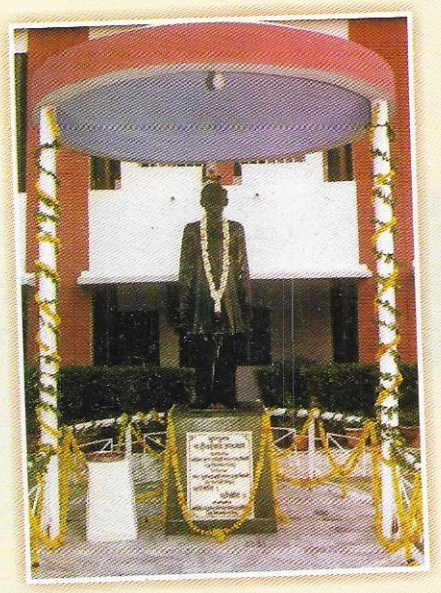

(पंडित दीनदयाल उपाध्याय)

हम सब की हैं प्रेरणा, पंडित दीनदयाल।
सत्य-मार्ग पर हम चलें, दूर रहें जंजाल।।

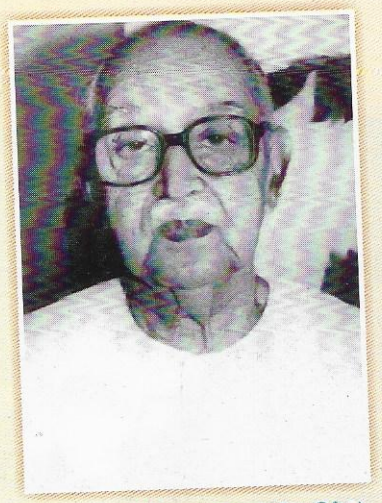

(ब्रह्मलीन बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह)

नर में थे एक 'नरेन्द्र' आप
जीता मन सबका जीत हुए
दे दिया समाज को निज जीवन
ऐसे एक यती पुनीत हुए।

(प्रधानाचार्य जी की विदाई का कार्यक्रम)

"मुझे भावनाओं के आँसुओं से नहीं
संकल्प के अंगारों से विदा करें।

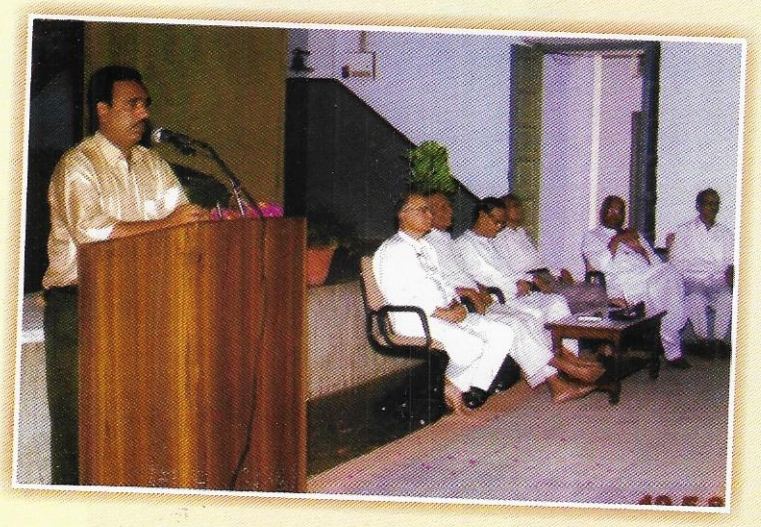

विदाई कार्यक्रम में करुणा–कलित हृदय से भाव–सुमन
अर्पित करते आचार्य श्री दिनेश जी

"प्यारे जू है जग की यह रीति,
बिदा के समय सब कंठ लगावें

(प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी को विदाई देते
सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, पार्श्व में डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल)

आचार्य श्री गया प्रसाद जी को विदाई देते विद्यालय
प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी

प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी तथा आचार्य श्री गया प्रसाद जी
के विदाई कार्यक्रम में उपस्थित प्रबंध समिति के सदस्य

विदाई कार्यक्रम में उपस्थित आचार्य–गण

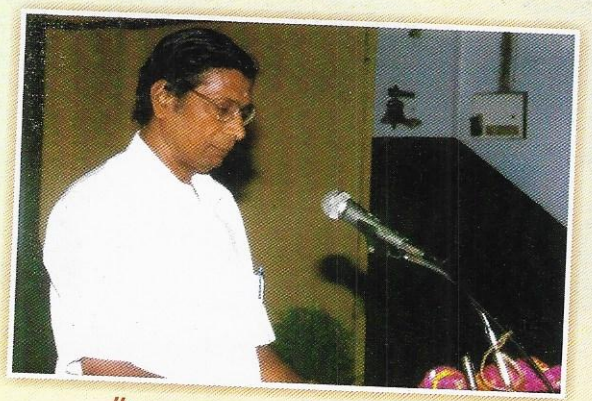

"अब इन कंधों पर भार"
विदाई भाषण का वाचन करते आचार्य श्री प्रकाश जी

परीक्षा परिणाम वितरण तथा बैरिस्टर साहब का जन्मोत्सव

'बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह निबंध प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र
चि0 अभिषेक शुक्ल को पुरस्कृत करते हुए डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल

विद्यालय के सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता मेधावी छात्र
चि0 सौहार्द नंदन चौरसिया प्रधानाचार्य जी से पुरस्कार लेते हुए

पुरस्कार लेते हुए नवम 'ख' के छात्र चि0 प्रणव त्रिपाठी

अष्टम 'क' के मेधावी छात्र चि0 राम जी त्रिपाठी
को पुरस्कार करते हुए डॉ0 ज्ञानचंद्र अग्रवाल

शांतिकुंज हरिद्वार की संस्कृति ज्ञान परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र
चि0 प्रखर अवस्थी को पुरस्कृत करते हुए डॉ0 ज्ञानचंद्र अग्रवाल
पार्श्व में आचार्य श्री हेमन्त शुक्ल

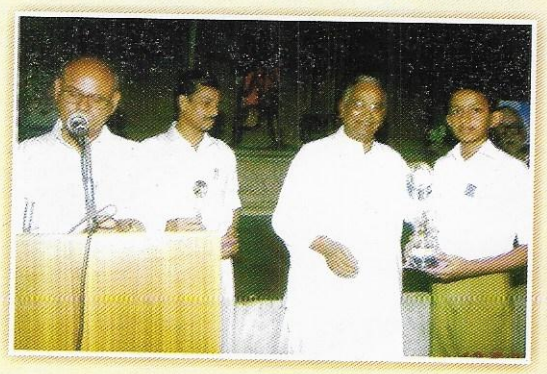

अष्टम 'क' कक्षा के मेधावी छात्र चि0 प्रशान्त श्रीवास्तव
को पुरस्कृत करते प्रधानाचार्य जी

चि0 हरनारायण (कक्षा–8ख)
वाद्ययंत्र प्रतियोगिता में
तृतीय स्थान

चि0 प्रखर अवस्थी (कक्षा–8क)
- कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान
- पं0 दीनदयाल उपध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

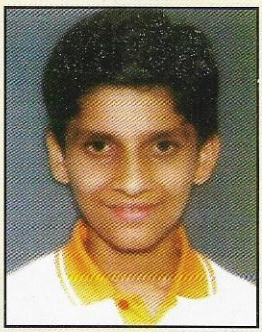

चि0 प्रणव त्रिपाठी (कक्षा–9ख)
- गीता रामायण परीक्षा में कानपुर महामण्डल में द्वितीय स्थान
- टैलेण्ट डेवलपमेण्ट काउंसिल में चयन
- गीता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

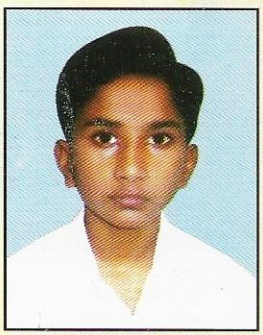

चि0 यश अवस्थी (कक्षा–9ख)
- ऐतिहासिक प्रदर्शनी में द्वितीय स्थान
- वाद विवाद प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

चि0 हर्षित शुक्ल (कक्षा–8क)
- कहानी लेखन प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में तृतीय स्थान

वार्षिक खेलकूद

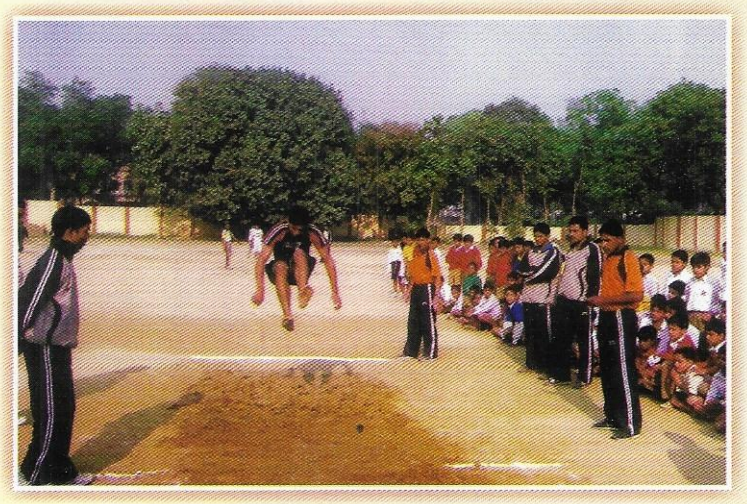

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में उछल कदम कूद में छलांग
लगाते चि0 अनुराग मिश्रा

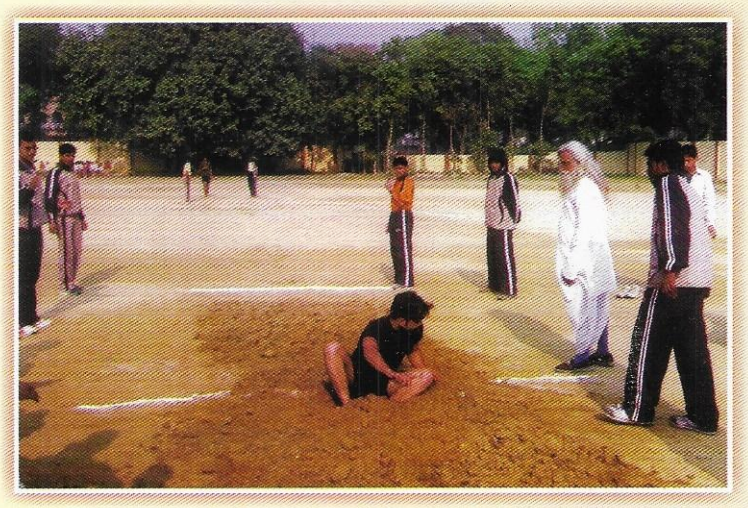

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में 'लम्बी कूद' कूदने के बाद जमीन पर गिरे
असीम निगम को देखते प्रभारी आचार्य श्री दीपक जी तथा
वी.एस. एस. डी. कॉलेज के बी. पी. एड. के विद्यार्थी

सत्रांत कार्यक्रम

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो

द्वादश 'क' कक्षा के छात्र विदाई समारोह के बाद सामूहिक छायांकन में

द्वादश 'ख' कक्षा के छात्र विदाई समारोह
के बाद सामूहिक छायांकन में

उत्तर भारतीय संघ पुणे द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में
एच.बी.टी.आई. के निर्देशक श्री आर. पी. सिंह
आचार्य श्री हेमन्त शुक्ल को सम्मानित करते हुए

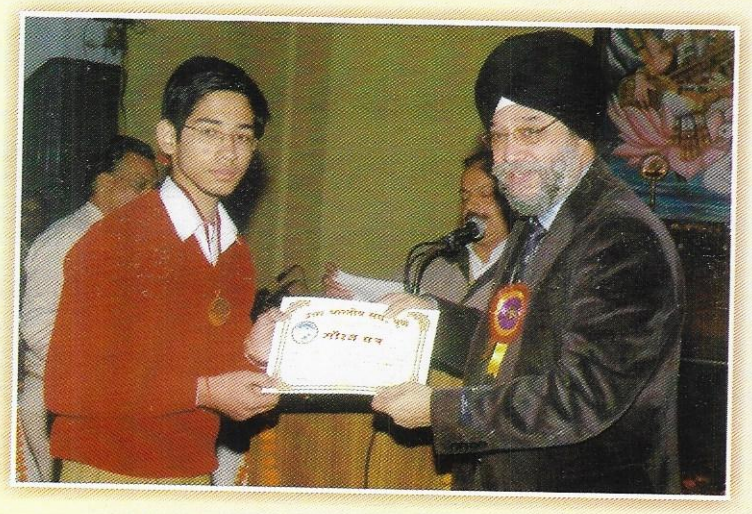

मेधावी छात्र चि0 सात्विक को पुरस्कृत करते हुए
एच.बी.टी.आई. के निर्देशक श्री आर. पी. सिंह

वार्षिकोत्सव

पं0 दीनदयाल उपाध्याय स्मृति व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि के रूप में मा0 श्री माधव गोविन्द वैद्य जी, प्रबन्ध समिति के मान्य सदस्य, प्रधानाचार्य जी तथा संचालन करते आचार्य श्री दिनेश जी

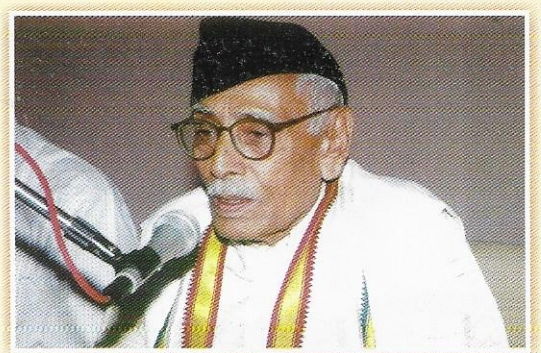

''पंडित दीनदयाल उपाध्याय की धर्मराज्य की परिकल्पना'' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान देते राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व प्रवक्ता तथा संप्रति अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य मा0 श्री माधव गोविन्द वैद्य

मुख्य अतिथि मा0 माधव गोविन्द वैद्य जी के साथ डॉ0 ज्ञान चन्द्र अग्रवाल

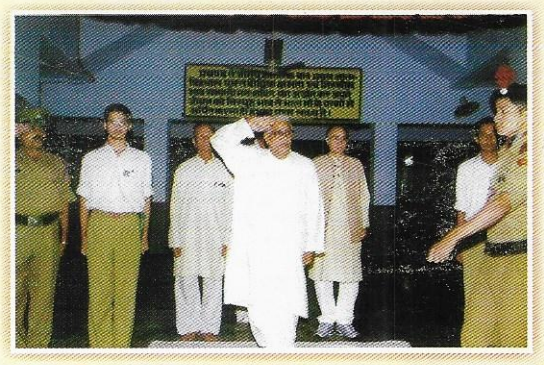

एन.सी.सी. छात्रों की सलामी स्वीकार करते मुख्य अतिथि
श्री के. बी. पाण्डेय (कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति)
पीछे खड़े हैं मा0 श्री वीरेन्द्र जी तथा डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल

मंच पर विराजमान मुख्याभ्यागत श्री के.बी. पाण्डेय मध्य
में विद्यालय के सचिव मा0 श्री वीरेन्द्र जी तथा
मा0 श्री हरिकृष्ण सेठ

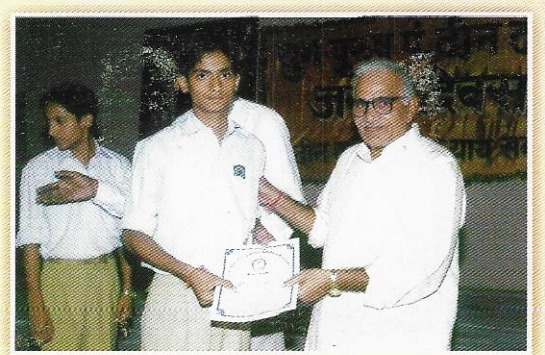

वार्षिकोत्सव में निबंध प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त छात्र
चि0 देवेश बाजपेई को पुरस्कृत करते मा0 श्री के0 बी0 पाण्डेय

राष्ट्रगीत के समय मंच पर खड़े दायें से श्री ओमप्रकाश भार्गव,
श्री हरिकृष्ण सेठ, श्री वीरेन्द्र जीत सिंह, श्री के. बी. पाण्डेय,
डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल तथा आचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेई

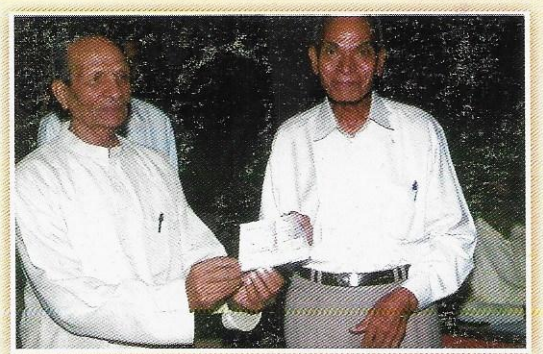

उदार दानदाता श्री ओमप्रकाश भार्गव विद्यालय के निर्धन
छात्रों के सहायतार्थ विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष
डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल को चेक देते हुए

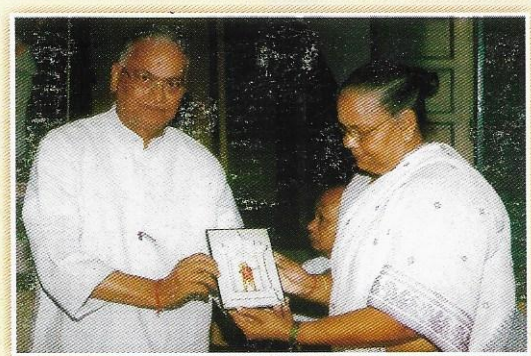

राष्ट्रीय गीत गायन प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में
पधारीं विधायक प्रेमलता कटियार जी का अभिनंदन करते प्रधानाचार्य जी

रंगमंचीय कार्यक्रम

लोकगीत प्रस्तुत करते छात्र

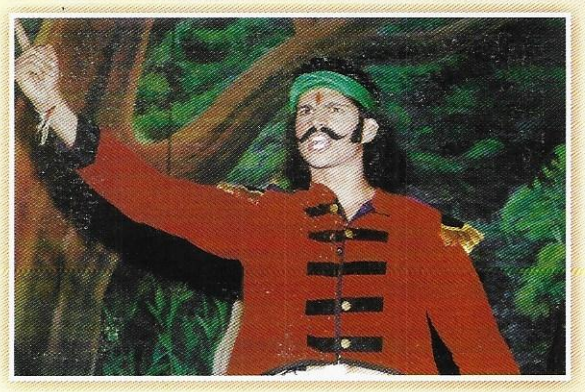

1857 के स्वतंत्रता समर पर आधारित नाटक में
मंगल पाण्डेय के विद्रोह का दृश्य

विद्रोही मंगल पाण्डेय को गिरफ्त में लेते जल्लाद
तथा फिरंगी अधिकारी

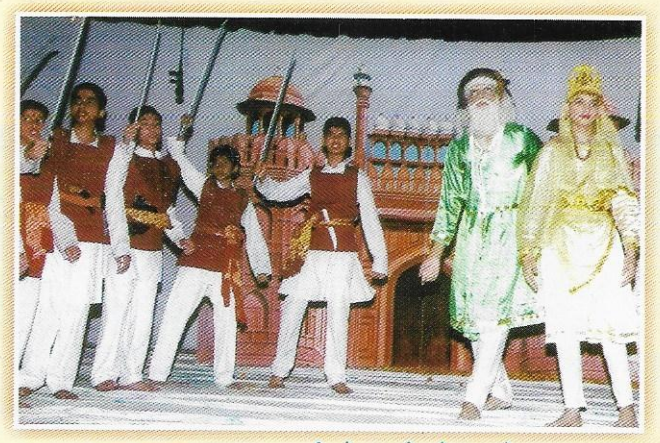

बहादुरशाह जफर अपनी सेना और बेगम के साथ

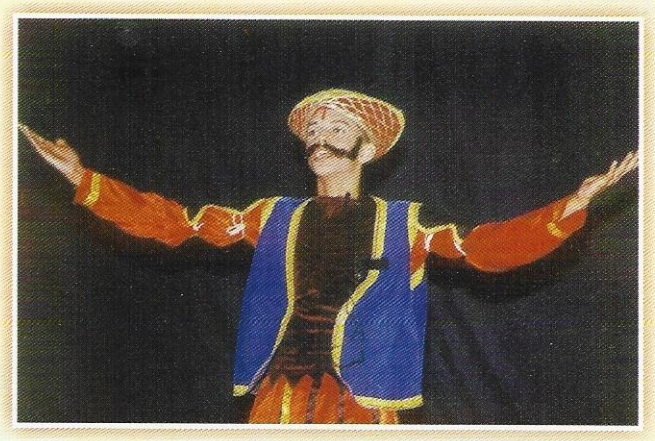

क्रांतिकारी तात्या टोपे का ऐलान

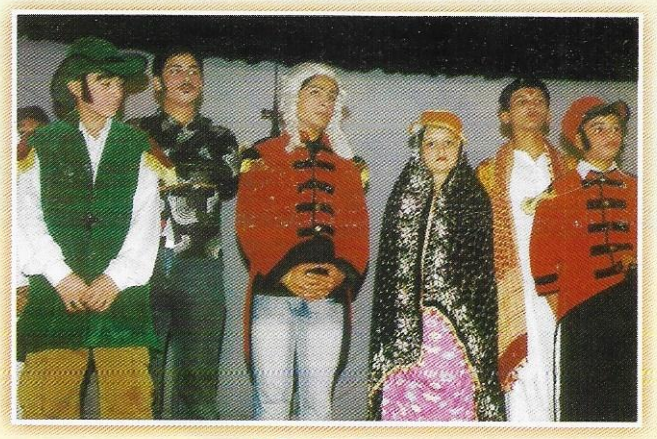

भारत में फिरंगियों का राज्य

तात्या टोपे के नेतृत्व में
क्रांतिकारियों का दल

अंग्रेज अधिकारी की भूमिका
में चि0 उज्ज्वल दीप

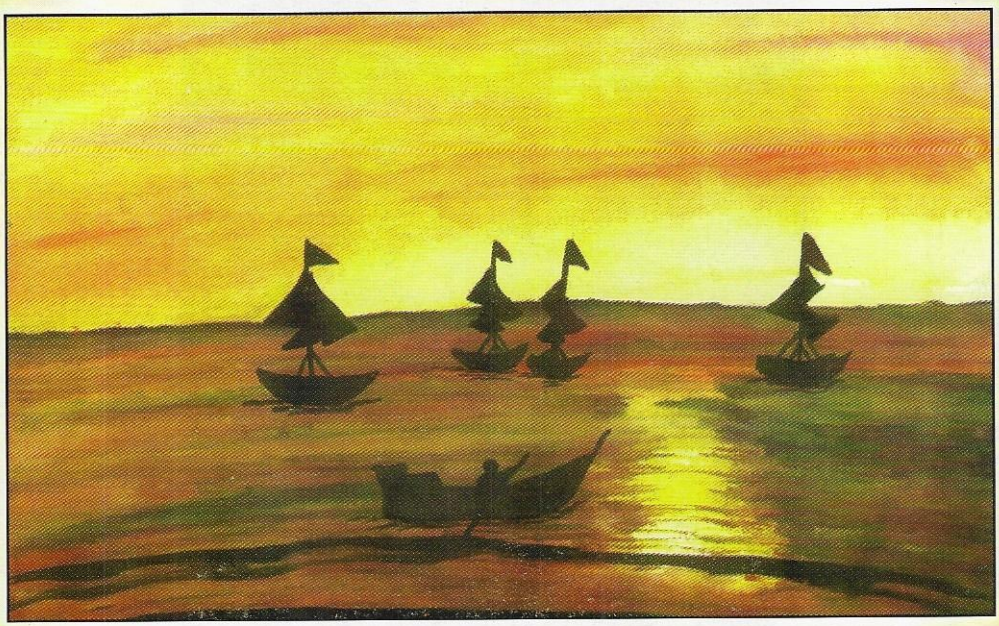

चिराग मौजों से पूछते होंगे।
अखिर वो कौन हैं, जो किश्तियाँ डुबोते हैं ?

चित्रांकन : रविकान्त वर्मा
अष्टम 'ख'

अब बियावान चारो तरफ है,
चौंक कर देखता हर तरफ है।
अब सपन भाप से हो गये हैं,
आप से आप सुख सो गये हैं।।

'अब मैं न वह रहा' सिर्फ इतना कहा, 'सो न आँसू कभी पायेंगे'
सुन सको तो सुनो ....

रूठ कर स्वर विदा हो गये हैं,
दूसरों पर फिदा हो गये हैं।
गीत अब भी खड़े साथ मेरे,
काम आये उजेरे - अँधेरे।।

कोई कुछ भी कहे या 'अवाँ' देह अब न इनको हिला पायेंगे।
सुन सको तो सुनो ....

❖

प्रिय सान्ध्य गगन

प्रिय सान्ध्य गगन
मेरा जीवन!

यह क्षितिज बना धुँधला विराग,
नव अरुण-अरुण मेरा सुहाग,
छाया सी काया वीतराग,
सुधिभीने स्वप्न रँगीली घन!

साधों का आज सुनहलापन,
घिरता विषाद का तिमिर सघन,
सान्ध्य का नभ से मूक मिलन,
यह अश्रुमती हँसती चितवन!

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

वार्षिक आख्या - 2006-2007

युगद्रष्टा पं. दीनदयाल उपाध्याय के 92वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गयी प्रेरणा अनन्तकाल तक आदर्श उद्धरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिए एक चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य-प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिवर्चनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाऊराव, इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष परम पूज्य श्रीगुरू जी, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी और इसकी कंचन काया में प्राण संचरित करने वाले श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिए पाथेय हैं वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीन जैन जी की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई, 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपने जीवन का सैंतीसवाँ बसन्त देख रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न आदर्श प्राण पीढ़ी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोद्दीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत अडिग शैल-शृंग।

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बू जी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया। यथा- विज्ञान-वीथी, भाऊराव भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य आवास, माधव-स्मृति क्रीड़ा परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का 'पंडित दीनदयाल सभागार'।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक 7 कक्षाओं के 16 अनुभागों में छात्रों की संख्या 786 है। इनमें से 206 छात्रावासीय हैं जो विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तरांचल, बिहार, झारखंड, बंगाल मध्य प्रदेश तथा अरुणाचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य अक्षीक्षकों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में 28 है। लगभग सभी प्रशिक्षित स्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रुपये से अधिक मूल्य की 15,000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में 7 दैनिक, 2 साप्ताहिक तथा 11 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ : परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश का 1981 में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (33 वर्षों का)		द्वादश (27 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3087		2558	
उत्तीर्ण	3071	99.48	2541	99.34
ससम्मान	1168	37.83	670	26.19
प्रथम श्रेणी	1551	50.24	1531	59.85
द्वितीय श्रेणी	0342	11.07	367	14.35
तृतीय श्रेणी	0010	00.32	05	00.202

प्रदेश में स्थान	105 (लगभग 4%)	85 (लगभग 4%)

वर्ष 2007 का परीक्षा परिणाम निम्नांकित है -

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	123	109
उत्तीर्ण	123	109
ससम्मान	57	50
प्रथम श्रेणी	64	59
द्वितीय श्रेणी	02	00
तृतीय श्रेणी	00	00

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

1. वर्ष 1988 में इस संस्था से इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण आई. ए. एस. चि. रंजन खन्ना इस समय वर्षों से बंद पड़ी कानपुर मिलें चलवाने में विशेष प्रयासरत हैं।

2. वर्ष 1988 में इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले चि. संतोष मल्ल इस समय बिहार प्रान्त के सिवान जनपद में जिलाधिकारी हैं और आतंक के पर्याय बने इस जनपद में अपराध नियंत्रण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। साथ ही शैक्षिक उन्नयन की दिशा में इनकी जागरुकता और व्यावहारिकता भी सराहनीय है।

3. चि. दिव्य मिश्र आई. पी. एस. में चयनित होकर इस समय प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

4. वर्ष 2002 में इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले चि. अभिषेक अग्निहोत्री इस वर्ष लेफ्टिनेन्ट का प्रशिक्षण पूर्ण कर उक्त पद पर कार्य रत हैं।

प्रतियोगी परीक्षाएँ

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। प्रतियोगी परीक्षाओं के अद्यावधि समेकित परिणाम की एक झलक निम्नांकित है-

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2558	गणित 2234	आई. आई. टी.	271	12.1%
		अन्य इंजीनियरिंग संस्थान	1390	62.22%
	जीव विज्ञान 324	मेडिकल परीक्षायें	80	24.69%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं -

जे. ई. ई./संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई. आई. टी., मर्चेण्ट नेवी तथा

धनबाद खनन महाविद्यालय हेतु) तथा (सी. बी. एस. ई.)	12
यू. पी. टी. यू. (क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	95
अन्य (AMEETY चैन्नई, NIFT आदि	15
कुल (इंजीनियरिंग) में चयनित	**122**
सी. पी. एम. टी. / संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कालेजों हेतु) चयनित)	05
अन्य	03

NDA और CDS के माध्यम से सेना में पहुंचे हुए लगभग 36 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 20 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सब के विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म मण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 73 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं -

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरिमोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्री इन्द्रजीन जैन स्मारक छात्रवृत्ति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

आई. जे. एस. ट्रस्ट, कानपुर

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर, कानपुर

श्रीमती संजना मित्तल

पूर्व छात्र चि. प्रवीण भागवत

पूर्व छात्र चि. संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि. हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि. अजय गुप्त

श्री डी. के. सोमानी मैनेजिंग ट्रस्टी सोमानी फाउंडेशन, नई दिल्ली

कुल मिलाकर 40 छात्र इन सभी न्यासों और संरक्षकों के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्तशरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेलकूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन. सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवन चर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रति वर्ष ही देश-दर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देश दर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदंडों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र विकसित विकास

निर्भीक-सुचारू अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएं कार्य करती हैं - अष्टम कक्षा तक बाल भारती, नवम-दशम में किशोर भारती और एकादश-द्वादश में तरुण भारती, जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित सॉफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से

इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट को सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issue की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Databeae को Computerised करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है। जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendane एवं Result को Computerised कर सकेंगे।

युग-भारती

बाल, किशोर और तरुण भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण भारती की स्थापना हो गयी थी जो कि अब युग भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है।

माँ सुशीला वात्सल्य-मंदिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित शिशुओं को जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी. एस. एस. डी. महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। विद्यालय प्रबन्ध समिति के सहसचिव श्री यतीन्द्रजीत सिंह जी के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मंदिर के द्वारा पालित-पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा। इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर, 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 24 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

भारतीय चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है। अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करे जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रहकर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

गोमाता का प्रताप

- डॉ. कमल किशोर गुप्ता रीडर, रसायन विभाग,
विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय, कानपुर

दिसम्बर, 2007 में तिरुपति में गोमाता पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन **'Glory of Gomata'** *नाम से हुआ जिसमें एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई। वी. एस. एस. डी. कालेज के प्रवक्ता डॉ. कमल किशोर गुप्त जी ने इस सम्मेलन में न केवल भाग लिया बल्कि उपर्युक्त स्मारिका का सम्पूर्ण अध्ययन करके सारांश तैयार किया। गोमाता के धार्मिक पहलू के अतिरिक्त उसके आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व की जानकारी भी इस आलेख में मिलेगी।*

- संपादक

भारत एक ऋषि और कृषि प्रधान देश है। यहां के ऋषियों ने शाश्वत जीवन शैली विकसित की है जिसमें मानव के साथ-साथ चराचर जगत एवं प्रकृति का संतुलन व समन्वित विकास, संरक्षण तथा संवर्धन अन्तर्निहित है। 'जियो और जीने दो' इसका सुभाषित है। इन्हीं ऋषियों ने मानव की आवश्यकताओं, सुख-सुविधा हेतु जरूरतों की पूर्ति हेतु कृषि की महत्ता बतलाई। धरती माता और गोमाता इसका आधार बनी। गाय इस देश की अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड बनी और गोमाता कहलायी। देवताओं का वास है इसमें। वह औषधि का भण्डार है, तभी लोग गाय को चलता फिरता औषधालय कहते हैं।

आज के वैज्ञानिक व वाणिज्यिक युग में गोमाता की भूली-बिसरी महत्ता की पुनः स्थापना के लिए देश भर के वैज्ञानिकों, मूर्धन्य विद्वानों, समाज सेवियों, गोभक्तों, गोपालकों, सरकारी व गैर सरकारी योजकों एवं साधु-सन्तों ने 1-3 दिसम्बर, 2007 को तिरुपति की पवित्र भूमि पर 1000-2000 प्रतिनिधियों के साथ चिन्तन-मनन किया। तिरुपति तिरुमाला देवस्थानम् (टी. टी. डी.) आन्ध्र प्रदेश तथा श्री भाष्यकारा चैरिटेबिल ट्रस्ट चेन्नई (तमिलनाडु) द्वारा आयोजित इस दिव्य-भव्य सम्मेलन में श्री तिरुपति बाला जी की कृपा से मुझे भी सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। आयोजक द्वय को धन्यवाद देते हुए सम्मेलन के कुछ प्रमुख विचारों, सुझाओं व शोधों आदि को लेखक आप जैसे सुधी पाठकों के साथ बांटना चाहता है। आशा है कि पाठक पसन्द करेंगे।

गोमाता के पूजन, अर्चन से सम्मेलन का श्रीगणेश हुआ। उद्घाटन की औपचारिकताओं को उद्धृत किये बगैर सीधे प्रथम सत्र की चर्चा शुरू करते हैं।

1. पद्म भूषण प्रो. एन. एस. रामास्वामी (National Professor in Management, Bangalore) ने कहा कि वाणिज्यिक युग में गोमाता के प्रति मात्र पूजा व संवेदना से कोई कार्य फलीभूत नहीं होगा। हमें गोदुग्ध बढ़ोत्तरी, गोवंश की ऊर्जा के उपयोग के कार्य को विकसित करना

होगा।

कामधेनु व नन्दी के रूप में पूज्य गाय व वृषभ की इस पवित्र धरती पर बड़ी ही दयनीय व शर्मनाक स्थिति है। हमें पता है कि गोदुग्ध, गोबर आदि द्वारा सही पशु धन सकल राष्ट्रीय उत्पाद में रु. 1.6 लाख करोड़ का योगदान करता है। यह कृषि की कुल आय रु. 4.8 लाख करोड़ का एक तिहाई है। फिर भी वह भारत सरकार की घोर उपेक्षा का शिकार है। राष्ट्रीय बजट में समस्त पशुधन के विकास के लिए मात्र रु. 10 करोड़ का प्रावधान ऊँट के मुंह में जीरा के समान है। प्रो. रामास्वामी ने 11वीं पंचवर्षीय योजना में इसके लिए और अधिक धन के प्रावधान की मांग की है। योजना आयोग की आकांक्षानुसार उन्होंने एक आख्या भारत सरकार को सौंपी है जिसमें NDDB की भाँति कुल पशु धन के विकास तथा आधुनिक प्रबन्धन सहित उनकी ऊर्जा सम्बन्धी विकास बोर्ड के गठन का प्रस्ताव रखा है।

भारत का दुग्ध उत्पादन 8.8 करोड़ टन है। जिसकी कीमत रु. 1 लाख करोड़ है। ये आँकड़े दुधारु पशुओं की क्षमता दर्शाते हैं। ऊर्जा की दृष्टि से बैलों की उपयोगिता बहुत है। कार्टमैन द्वारा विकसित कृषि यंत्रों और बैलगाड़ियों की सहायता से किसान काफी लाभ उठा सकते हैं। बैलों द्वारा की गयी जुताई व माल ढुलाई से 6 मिलियन टन पेट्रोलियम अर्थात् रु. 20000 करोड़ की विदेशी मुद्रा बचा सकते हैं। पश्चिमी विद्वानों ने सिद्ध किया है कि 1 एकड़ भूमि से दस शाकाहारी अपना पूर्ण पुष्ट आहार पाते हैं जब कि इतनी ही भूमि से मात्र एक मांसाहारी को भोजन प्राप्त होता है।

कम्युनिस्ट शासित पश्चिम बंगाल व केरल तथा पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़कर सभी प्रान्तों में गोहत्या पर पाबन्दी है। गोवंश को लाकर इन्हीं प्रान्तों में बड़ी क्रूरता से काटा जाता है। बांग्लादेश व पाकिस्तान ले जाकर वध किया जाता है। 'अहिंसा परमो धर्मः' के पथ के पथिक हिन्दू समाज से मांसाहार के विरुद्ध आन्दोलन चलाने की अपील की।

2. पूज्य स्वामी रेवतीरमण दास (President Shri Radha Krishna Temple, ISKCON, Tirupati) ने अपने विस्तृत व्याख्यान में कहा कि गाय संरक्षण में मानव की समृद्धि निहित है। 'मातराः सर्वभूतानाम् गावः सर्व सुख प्रदा' उद्धृत करते हुए उन्होंने आज के आर्थिक युग में गाय की उपेक्षा पर चिन्ता व्यक्त की । भारतीय लोगों के मानस को विभिन्न प्रसंगों से झकझोरा, आगाह किया। इस्कान संस्थान के संस्थापक पूज्य श्रील प्रभुपाद जी के अमृत वचनों को दोहराया - "We want to stop those slaughter houses, it is very sinful, therefore, in Europe they have so many wars, Every ten, fifteen years there is a big war, a wholesale slaughter of human. But these rascal, they do not see it. The reaction must be there. Nature will take revenge, to kill cows means to end human civilization."

गोभक्त की सभी मनोकामनायें पूर्ण करने वाली गोमाता सेव्य, पूज्य और संरक्षणीय है। गो संरक्षण से विश्व शान्ति की स्थापना हो सकेगी।

3. प्रो. एम. जी. गोविन्दइया (Karnatak Veterinary, Animal & Fisheries Sc. University Bangalore) तथा डॉ. के. हरनाथ रेड्डी (तिरुपति) का वक्तव्य 'पवित्र गाय' की संरक्षण सम्बन्धी समस्यायें व समाधान' पर केन्द्रित था। प्राचीन भारत से वर्तमान भारत की तस्वीर परदे पर प्रस्तुत कर प्रतिनिधियों को प्रभावित किया। राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 1993-94 से लेकर 2004-05 तक कृषि, पशुपालन, दूध, गोबर, खाद व मांस की हिस्सेदारी आँकड़ों के साथ बतायी।

इसमें 1993-94 में दूध का योगदान 64.8 प्रतिशत से बढ़कर 2002-03 में 68.9 प्रतिशत हो गया। 2004-05 में यह 66.9 प्रतिशत ही रहा। यह प्रतिशत कृषि और पशुधन से प्राप्त कुल आय का 100 प्रतिशत हिस्सा है। पशुओं की संख्या में 1951-56 तक 10.7 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई थी। 1997 से 2003 तक यह दर नकारात्मक यानि 6.9 प्रतिशत हो गयी।

भारत की पशु गणना 2003 के अनुसार कुल पशुधन 18.51 करोड़ में से 16.05 करोड़ देशी पशु धन है। उत्तर प्रदेश में 1.69 करोड़ देशी पशुधन है। पर उत्तर प्रदेश में कुल देशी गाय की संख्या नहीं बतलायी। दुग्ध उत्पादन में अपने देश में सर्वोच्च स्थान 1.736 करोड़ टन, जो कुल दुग्ध उत्पाद का 17.88 प्रतिशत है, उत्तर प्रदेश का है। तत्पश्चात् पंजाब (9.18 प्रतिशत), राजस्थान (8.97 प्रतिशत), आन्ध्र प्रदेश (7.85 प्रतिशत), गुजरात (7.17 प्रतिशत) व महाराष्ट्र (6.97 प्रतिशत) का नम्बर है। उन्होंने आगे बताया कि भारत में 2005-06 में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 240 ग्राम दूध की खपत से बढ़कर यह 2020 में 340 ग्राम हो जायेगा।

4. डॉ. एन. गंगा सत्यम् (M. D. Ex. Principal, Hyderabad) ने पंचगव्य में निहित विष निरोधक क्षमता का वर्णन किया। पंचगव्य को मानव स्वास्थ्य व स्वस्थ फसलों का राम बाण बताया।

5. डॉ. ए. ओबेरेड्डी (Principal Scientist, NDRI, Bangalore) ने देश में देशी पशु धन विशेषकर देशी गाय की घटती संख्या पर चिन्ता व्यक्त की। 2003 के बाद देशी गौवंश में तेजी से घट रही आबादी का कारण बूचड़खानों की बढ़ती संख्या व उनका आधुनिकीकरण और गौ मांस का निर्यात है। सूखा, बाढ़, जैसे प्राकृतिक प्रकोपों का प्रभाव नगण्य है। सरकार को अपनी नीति बदलनी होगी और स्थानीय नस्लों यथा ओंगोल (आंध्र प्रदेश), लाल सिंधी (तमिलनाडु), देवनी (महाराष्ट्र), साहिवाल (करनाल), वेचुर (त्रिचूर), अमृत महल (कर्नाटक), हरियाण्वी (हरियाणा) और थारपाकर (राजस्थान) आदि को बचाने हेतु किसानों, सरकारों से जोरदार अपील की।

6. डॉ. डी. के. सादना व अन्य (National Bureau of Animal Gnetic Resources, Karnal) द्वारा जैविक विविधता तथा उनकी बढ़ती उपयोगिता पर शोध पढ़ा गया। भारत में देशी पशुओं की भावी सकारात्मक बढ़ोत्तरी की चर्चा की। 1987 से 2003 तक भारत में देशी पशुओं की प्रांतशः घटती जा रही आबादी के आंकड़े व रुझान दर्शाया। देशी गाय के दूध के श्रेष्ठ व औषधीय गुण बताये।

7. डॉ. एस. महेश्वरी व अन्य (Tamilnadu Agriculture University Coimbatore) ने पंचगव्य पर अपने अध्ययनों व परिणामों को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। पंचव्य की पौराणिक ग्रन्थों में वर्णित गुणों की चर्चा करते हुए इसे शोध के रूप में प्रतिपादित किया। कृषि मानव की आधारभूत आवश्यकता है। पंचगव्य को इन्होंने कृषि का वाणिज्यिक सहायक बताया। कीटनाशक व फसल पोषक पंचगव्य मिश्रण बनाने की निम्नवत् विधि बताई -

20 लीटर पंचगव्य मिश्रण बनाने हेतु चाहिए - गोबर (5 किग्रा.), गोमूत्र (3 लीटर), गो दुग्ध (2 लीटर), गो दधि (2 लीटर), गोघृत (1 लीटर), गन्ने का रस (3 लीटर), नारियल का पानी (3 लीटर), पका केला (1 किलो)। सुबह शाम प्रतिदिन दो बार बीस-बीस मिनट तक इस मिश्रण को अच्छी तरह से हिलायें। पन्द्रह दिन लगातार ऐसा करें। तत्पश्चात् इस मिश्रण का तीन प्रतिशत सान्द्रता का घोल (पानी मिलाकर) तैयार करें। 500 लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से फसल पर हस्त चालित स्प्रेयर से छिड़कें। यह सर्वोत्तम जैविक कीटनाशक का काम करेगा। साथ ही फसल को बढ़ाने में सहायक

होगा। यह पौधों की बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का भी कार्य करेगा। फलतः फलों, सब्जियों की पैदावार में गुणात्मक व संख्यात्मक बढ़ोत्तरी होगी। इस घोल से धान की फसलों को विशेष लाभ मिलता है। सूरजमुखी, टमाटर आदि अनेक सब्जियों व फूलों की फसलों में फलदायी है। इस मिश्रण की 35 रुपये प्रति लीटर लागत आती है। यदि किसान अपनी गाय के उत्पाद का प्रयोग करें तो यह लागत और कम हो जायेगी।

शोधार्थियों ने इस मिश्रण के भौतिक-रासायनिक एवं जैविक गुणों का विशद् विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। गैस कोमोटोग्राफी व अन्य विधियों द्वारा इसमें उपस्थित नये तत्वों, यौगिकों का अध्ययन किया है। इस दिशा में और अधिक शोध की जरूरत है।

8. वैद्य नन्दनी भोजराज (गौ विज्ञान अनुसंधन केन्द्र देवलापार, नागपुर) का अध्ययन विषय पंचगव्य ही था। पंचगव्य की मानव जीवन में दैनिक उपयोगिता पर प्रकाश डाला। पंचगव्य मानव त्वचा के रंग को साफ करने में सहायक सिद्ध हुआ है। इसकी कुछ बूंदें अपने चेहरे पर हल्के-हल्के 15-20 मिनट तक मालिश करें, फिर 5-7 मिनट भाप से सिकाई करें। कामधेनु उपटन लगाकर पानी से धोयें। गौ दुग्ध या गुलाब जल चेहरे पर लगायें। सूखने के बाद चेहरा पुनः धोयें और अन्तर अनुभव करें। त्वचा चमक उठेगी।

9. डॉ. सत्य शंकर वरमूडी (M.B.B.S., D.L.O., E.N.T., Head & Neck Surgeon and member Cancer Research Center, Kasaragod, Tamil Nadu) ने गोमूत्र अर्क थेरेपी द्वारा पिछले चार वर्ष में कैंसर के 36 रोगियों के सफल उपचार सम्बन्धी सप्रमाण, सचित्र सभी सहभागियों के पक्ष रखे। रोगियों के नाम, पते व परीक्षण प्रस्तुत किये। उन्होंने हरे चारागाह पर चरने, शुद्ध, स्वच्छ पानी पीने वाली स्वस्थ देशी गाय का प्रातःकाल का मूत्र लेकर गोमूत्र अर्क बनाया। जिसकी 10-15 मिली. मात्रा प्रारम्भ में एक बार तथा धीरे-धीरे उस मात्रा को दिन में तीन बार गोदुग्ध या गोघृत के साथ रोगी को दी। उससे रोगी स्वस्थ हुए। डॉ. वरमूडी के अनुसार गोमूत्र अर्क में अन्य तत्वों के साथ Bioenhancing effect & Anti cancer substane प्रमुखता से पाया जाता है जो कैंसर को ठीक करने में प्रभावी है और अधिक अनुसंधान किये जाने की जरूरत बतलाई।

10. वैद्य के. जयकृष्णा (SRF, IICT, Hyderabad) का विषय था- मानव के स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद के सन्दर्भ में गो संरक्षण की महत्ता। विषय को आगे बढ़ाते हुए पंचगव्य को सोने की खान बताया। जितनी खुदाई गहरी करोगे उतना ही अधिक पाओगे। गोघृत और कोलेस्ट्राल पर भी प्रकाश डाला। चूहे पर किये गये अध्ययन व प्राप्त परिणामों का सन्दर्भ व आंकड़ों द्वारा बताया कि गोघृत देने से रोगी में कोलेस्ट्राल का स्तर 8 से 15 प्रतिशत घटता है।

11. प्रो. आर. एस. चौहान (Ph. D., F.N.A.V.S., F.S.I.I.P., F.I.A.V.P., Joint Director, Veterinary Research Institute Izzat Nagar, Gujrat) ने अत्यन्त प्रभाव ढंग से मानव स्वास्थ्य पर पंचगव्य की महत्ता पर प्रकाश डाला। गोमूत्र की विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधात्मक क्षमता का ग्राफिकल विवरण प्रस्तुत किया। गोमूत्र व पंचगव्य पर अध्ययन व अनुसंधान सिर्फ भारत में हो रहा है, अन्यत्र कहीं नहीं। स्वयं के 12 शोध पत्रों के माध्यम से गोमूत्र में छिपे गुणों का आंकलन व समीक्षा प्रस्तुत की। विभिन्न पशुओं के मूत्र की तुलना गोमूत्र से की और बताया कि देशी व पहाड़ी गाय के मूत्र के अतिरिक्त किसी भी अन्य मूत्र में 'रसायन' नामक तत्व नहीं होता। बकरी में इसकी मात्रा गोमूत्र की तुलना में आधी है। प्रो. चौहान ने बी. औ. टी. लिम्फोसाइट्स का गोमूत्र के साथ अध्ययन किया और पाया कि गौमूत्र में पेस्टीसाइड्स के विषैले प्रभाव में 55 प्रतिशत की कमी लाने की क्षमता है।

12. श्री चन्द्रशेखर नौटियाल (National Botanical Research Institute, Lucknow) ने गाय को कामधेनु की सार्थकता बतायी। कृषि और गोसंरक्षण में कामधेनु की वैज्ञानिक आधारभूमि प्रस्तुत की। गैर सरकारी संस्थाओं (जो मिशनरीज भाव से कार्यरत है) की सहायता की आवश्यकता बतायी।

13. श्री जी. नम्मालवर (President, Tamil Nadu Organic Agriculturist Movement) ने समाज को जाग्रत करने को कहा। गाय और किसान को साथ-साथ मिलकर कार्य करना होगा। देश की प्रगति का इसे प्रमुख स्रोत बताया।

14. श्री जी. सी. यादव एवं श्री एस. के. रौटरे (Central Institute of Agricultural Engineering, Bhopal) के भिन्न व्याख्यानों का सारतत्व यह था कि पशु ऊर्जा और मैकेनिकल ऊर्जा एक दूसरे के पूरक हैं। जैविक कृषि एवं कृषक के लिए बैलों की उपयोगिता पर जोर दिया और ट्रैक्टर से हो रही कृषि हानियों को चेताया। श्री रौटरे ने बताया कि सूखी गायों व बैलों की व्यय आधारित उपयोगिता तथा उनकी ऊर्जा का निपुणतापूर्वक दोहन कृषि को जीवन्तता प्रदान करेगा।

15. डॉ. पी. एम. वी. सुब्बाराव एवं श्री वी. के. विजय (I. I. T., New Delhi) ने बड़े ही रुचिकर व आकर्षक अध्ययन की ओर ध्यान आकृष्ट किया। पशुओं द्वारा प्राप्त बायोगैस से कार्बनडाईआक्साइड अलग कर एक बेहतर वैकल्पिक ईंधन खोज निकाला। उन्होंने इस ईंधन से एक कार को 55 किलोमीटर तक चलाया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ गेयर पर कार की गति क्रमशः 40, 50, 80 व 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक देखी गयी। इतनी दूरी तय करने में कुल गैस 6.00 किलो खर्च हुई। अर्थात् 9.09 किलोमीटर प्रति किलो गैस का औसत रहा। प्रदूषण रहित, कम खर्चीली, पर्यावरण हितैषी वाला यह ईंधन गो संरक्षण में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा। डॉ. विजय ने तो गोशालों को एक कुटीर उद्योग और ग्रामीण विकास का एक केन्द्र बताया।

16. डॉ. जी. एस. कौशल (पूर्व निदेशक - कृषि, मध्य प्रदेश) ने मध्य प्रदेश में हो रही जैविक कृषि की जानकारी दी। सन् 2001-2002 में प्रदेश के कुल 313 ब्लाकों में एक-एक गांव का चुनाव कर जैविक कृषि योजना लागू की गयी। ऐसे गांवों को जैविक गांव (Bio-village) कहा गया। इस समय प्रदेश में 3130 जैविक गांव हैं। प्रारम्भ में 10 गायें लेकर Bio-centre जैविक केन्द्र खोले गये, जिनमें प्रशिक्षण सुविधा प्राप्त है। भोपाल में 2003-2004 में जैविक हाट लगाये गये। इन्टरनेशनल फेडरेशन फार आरगैनिक एग्रीकल्चर मूवमेन्ट के अनुसार सन् 2002 में 23 बिलियन डालर की जैविक खाद से उत्पन्न खाद्यान्न की मांग थी जो 2006 में 40 बिलियन डालर की हो गयी। सर्व कल्याणार्थ एवं प्रदूषण हितैषी भारतीय जीवन शैली वाले किसान को जैविक कृषि करने को कहा। स्वयं स्वस्थ रहें और दूसरे भी स्वस्थ रहें।

17. डॉ. हितेश जानी एवं डॉ. दर्शन पांड्या (गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जाम नगर) का व्याख्यान विज्ञान, चिकित्सा और तकनीकी तीनों को गो रक्षण में समेटे था।

18. डॉ. आर. कोतन्दुपाणि (Ex. Additional Director, Animal Husbandry, Tamilnadu) ने बताया कि विभिन्न आकार व संख्या वाली गोशालाओं का रखरखाव कैसे करना चाहिए, इसे बड़ी ही सहजता व सरलता से करने के तरीके बताये।

19. डॉ. लक्ष्मण सिंह (सचिव ग्राम विकास नवयुवक, जयपुर) ने अपने 30 वर्षों के अनुभव व अनुसंधान और आर्थिक स्वावलम्बन सम्बन्धी प्रयोगों की जानकारी दी। जयपुर जिले के ग्राम लोपड़िया

के सर्वविकास की चर्चा की। विकास का आधार एक मात्र गोवंश है। ऊसर वाली जमीन पर लगभग 30 प्रजातियों की घास पैदा कर पूरे क्षेत्र को हरा-भरा कर दिखाया है। परिणामस्वरूप गांव के लोग खुशहाल हुए हैं और गांवों से शहर को ओर पलायन रुका हुआ है। गाँवों के लोगों को रोजगार मिला और शहरों पर जनसंख्या का दबाव घटा।

चौका पद्धति से वर्षा के पानी का संरक्षण कर प्राकृतिक तरीके से ऊसर भूमि को हरा-भरा कर दिखाया। बड़े-बड़े चरागाह बन गये और गायें वहाँ चरने के बाद स्वस्थ फलदायी हो गयी। वहाँ की पारिवारिक आय रु. 500-700 से बढ़कर अब रु. 17,000 या अधिक हो गयी।

लापोडिया गाँव ने 20 वर्षों बाद गेहूँ की फसल काटी। खेतों में आयी समृद्धि से खुशहाल गाँव का नाम 'अन्न सागर' रखा गया। चौका विधि से बने पानी के टैंकों का नाम 'देव सागर' और 'फूल सागर' रखा गया यह स्थान ग्रामीणों को सामूहिक मनोरंजन के केन्द्र बन गये।

20. श्री पी. विवेकानन्द (सेवा, मदुरै) ने जड़ी बूटियों द्वारा पशुओं के विभिन्न रोगों के उपचार के सफल प्रयोग किये। बाँझपन का निदान भी जड़ी बूटियों से किया। उन्होंने 75 पशुओं में से 44 पशुओं में गर्भ धारण कराकर 60 प्रतिशत सफलता पायी।

21. डॉ. ई. वाडीवेल (Ph. D., Tamil Nadu Agricultural University, Coimbtore) का शोध पत्र बेहद रुचिकर था। उन्होंने प्रयोगों से सिद्ध किया कि पंचगव्य पौधों की कोशिकाओं के लिए पोर्टेशिएटर का कार्य करता था।

22. डॉ. वी. एन. विश्वनाथ रेड्डी (Ex. Professor, Veterinary College, Bangalore) कर्नाटक में पशुओं के रोगों के निदान का विवरण दिया। उन्होंने मीठी नीम, पालक आदि की पत्तियों द्वारा हीमोग्लोबिन बढ़ाने की दवा बतायी। होम्योपैथिक दवाइयाँ अनेक पशुओं के कुछ रोगों के उपचार में कारगर साबित हुई।

23. डॉ. तपन चक्रवर्ती (Director-Scientist, Environmental Engineering Research Institute Nagpur) का भूमण्डलीय ऊष्मा पर व्याख्यान था। विकसित देशों द्वारा किये जा रहे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से भूमण्डलीय ऊष्मा बढ़ी है। इससे समुद्र का जल स्तर बढ़ा है और वातावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र सहित सभी की चिन्ता, चेष्टा की चर्चा की। क्योटो प्रोटोकाल (जापान, 1997) के अनुसार इन गैसों के उत्सर्जन में कमी ला कर 5.2 प्रतिशत का लक्ष्य रखा गया है। सी. डी. एम. (Clear Development Mechanism) इसमें बहुत सहायक है। इसकी जानकारी दी।

24. श्री आर. के. पाठक एवं श्री आर. ए. राम (National Harticulture Mission, New Delhi) ने समन्वित जैविक कृषि कार्य में गाय की क्रान्तिकारी भूमिका बतलायी। प्राकृतिक ढंग से खेती हेतु उपयोगी 'जीवामृत' और 'बीजामृत' की जरूत बतायी। जीवामृत बनाने की विधि है- किसी बड़े पात्र में 100 लीटर पानी में 10 किलो गोबर घोलें। उसमें गुड़ के टुकड़े ($\frac{1}{2}$ किलो) या चार लीटर गन्ने का रस, 2 किलो चोकर तथा एक किलो अच्छी मिट्टी मिलायें। अच्छी तरह मिलाने के बाद उसे कपड़े से ढक दें। तीन दिनों तक नित्य इसे दो-तीन बार अच्छी तरह से मिलायें। पांच-सात दिन बाद इस मिश्रण को एक एकड़ खेत में सिंचाई करते वक्त पानी में मिला दें या छिड़काव करें।

इससे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और पैदावार की गुणवत्ता व पौष्टिकता बढ़ती है।

25. श्री ए. के. मिश्रा व श्री उमेश सिंह (Project Director on cattle, ICAR, Meerut) का कथन है कि अमृत सदृश दूध देने वाली गोमाता से हमें स्वास्थ्य, समृद्धि, शोहरत सहित सम्मान प्राप्त होता है। इन पाँच गुणों की खान गोमाता के विकास, संरक्षण व सम्वर्द्धन सम्बन्धी शोध बतलाये। ई. टी. अर्थात् Embro-Transfer Technology के माध्यम से एक चुनी हुई गाय से उसके जीवन काल में 10-12 के स्थान पर 100 संताने पैदा की जा सकती हैं। इस तकनीक के कई फायदे बतलाये। एक गाय से एक बार में 4, 5 यहाँ तक कि 11 बच्चे देने वाली गोमाताओं के चित्र भी दिखलाये।

26. राजू आप्टे (Mumbai) ने गो संरक्षण के लाभ के आठ क्षेत्र गिनाये। ये हैं- कृषि, भोजन, सौन्दर्य, विज्ञान, औषधि, पर्यावरण, अर्थशास्त्र, मृत्योपरान्त खाल, सींग, हड्डी आदि तथा धर्म। अनेक पर विस्तार से प्रकाश डाला।

27. एस. एन. वी. राव (Professor & Head, Rajeev Gandhi Colege of Veterinary and Animal Science, Pondcheri) ने बतलाया कि देशी गाय के भौतिक वस्तुओं के अलावा पराभौतिक चीजें भी प्राप्त होती हैं जब कि अन्य गायों में यह गुण नहीं होता है। अतः किसानों को देशी गाय पालने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

28. श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद (Retd. I.A.S. Hyderabad) ने ग्रामों में समविचार के लोगों की गोसंरक्षण समितियाँ बनाने का सुझाव दिया। गो उत्पाद व गो ग्रास निकालने की रीति-नीति पर जोर दिया।

29. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं सहयोगी (I.I.T., New Delhi) का शोध पत्र गोमूत्र के अध्ययन, विश्लेषण पर आधारित था। त्रिस्तरीय अध्ययन द्वारा गोमूत्र के गुणों की समीक्षा की। गोमूत्र के मानकों की जानकारी दी।

30. श्री सुनील मानसिंहका (Nagpur) ने देश के विभिन्न भागों में सफल गोशालाओं द्वारा किये जा रहे शोधों व प्रयोगों की जानकारी दी। कानपुर गोशाला सोसाइटी : गोविज्ञान केन्द्र, नागपुर, आदर्श गो सेवा अनुसंधान केन्द्र अकोला, राजस्थान गो सेवा संघ जयपुर, बाफना गो सेवा केन्द्र जलगांव, गायत्री शक्ति पीठ संधवा, गोपाल गोशाला पथमेडा, जालौर, श्रीकृष्ण गोशाला दुर्ग, केशव सृष्टि गोशाला मुम्बई, शारदा बिहार भोपाल, दीन दयाल शोध संस्थान चित्रकूट आदि द्वारा किये गये सफल प्रयोगों की संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत की। सूखी बूढ़ी गायों वाली गोशालों के स्वावलम्बी होने की विसम्यकारी गाथा सुनाई।

31. श्री सुरेश पाठक (Chairman, Shri Ram Govigyan Samvardhan Seva Trust, Badodara, Gujraj) ने पाँच बिन्दुओं- हमारी गोमाता, हमारी गोशाला, हमारी पंचगव्य औषधियाँ, हमारे वैद्य और हमारे चिकित्सालय की चर्चा के साथ आत्मनिर्भर गोशाला बनाने में पंचगव्य की महत्ता बताई। पाठक जी ने उत्साहवर्धक आंकड़े रखे। उनकी गोशाला की 30 गायों में मात्र 5 दूध देती हैं। इस छोटी गोशाला से खर्चे निकालकर 21 परिवारों का भरण-पोषण होता है। देखें- गोपालक (2), औषधि निर्माण के कर्मचारी (4), वैद्य (4), घर-घर पंचगव्य औषधि के प्रचारक (10) एवं प्रबन्धक (1) कुल = 21

32. डॉ. एम. मूर्ति (Ex. Nuclear Scientist, Phone - 040-27733366, Mob. 09440596188) का अध्ययन व शोध दूसरों से बिल्कुल भिन्न था। उनकी प्रस्तुति भी अत्यन्त प्रभावी

थी। पूरा सभागार मन्त्रमुग्ध होकर उन्हें सुन रहा था, गुन रहा था।

गाय की सकारात्मक ऊर्जा जैसे नये विषय के प्रयोगों को वैज्ञानिक तरीके से डॉ. मूर्ति ने प्रतिपादित किया और दर्शाया। प्राचीन भारत के ऋषियों (वैज्ञानिकों) ने तीन माताओं- (1) जन्म देने वाली माता, (2) धरती माता और (3) गो माता का आदर करना सिखाया जो आज तक विद्यमान है। इसके वैज्ञानिक कारणों को समझाते हुए डॉ. मूर्ति ने कहा कि हर देवी देवता का अपना आभा मण्डल होता है। यह आभा मण्डल (सकारात्मक ऊर्जा) हर जीव, पशु, पक्षी, वनस्पति आदि भी होता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि यह किसी का कम या किसी का ज्यादा होता है। उनके द्वारा विकसित यूनवर्सल थर्मल स्कैनर नामक एक विद्युत यंत्र से उन्होंने एक स्वस्थ महिला का आभा मण्डल (Aura) नापा जो 2.5 मी. था तथा तुलसी के पौधे का आभा मण्डल 7 मी. था। उस महिला द्वारा तुलसी के पौधे की प्रदक्षिणा (परिक्रमा) सात बार करने के बाद जब नापा गया तो उसका आभा मण्डल 2.5 से बढ़कर लगभग 5 मी. हो गया। डॉ. मूर्ति के अनुसार पीपल, बरगद, आंवला, तुलसी आदि का अपना आभा मण्डल होता है। इनकी परिक्रमा से व्यक्ति में उस आभा मण्डल का कुछ प्रभाव आ जाता है जो विभिन्न रोगों व अस्वस्थता के कारण उसके अन्दर उपस्थित नकारात्मक ऊर्जा को उदासीन कर देता है। फलतः व्यक्ति निरोगी, स्वस्थ हो जाता है। इच्छुक पाठक उनकी पुस्तक (Building Biology and Energy Vastu) पढ़ सकते हैं।

33. डॉ. एस. कामराज (Ph. D., Tamil Nadu Agriculture University, Coimbtore) ने गोशाला का लाभकारी अर्थशास्त्र समझाया। उन्होंने 100 और 1000 गायों वाली गोशाला का प्रत्येक मद में होने वाले व्यय और गोशाला की कुल आय का विवरण देकर होने वाले लाभ की जानकारी दी।

34. श्री फणि कुमार I. A. S. ने गोरक्षार्थ हुए कूका आन्दोलन व स्वामी दयानन्द सरस्वती की चर्चा करते हुए स्थानीय स्तर पर गोसंरक्षण हेतु self help group का गठन कर कार्य करने की आवश्यकता बतायी और टी. टी. डी. के समक्ष इस आदर्श कार्य हेतु अपने जिले चित्तूर को चुनने का प्रस्ताव रखा।

35. श्री सी. बी. जगदीश्वरा रेड्डी (Chitoo) ने गोबर द्वारा धुँआ रहित ग्रामों की बात बताई। प्रथम धुँआ रहित गांव - व्यसनापल्ली, जिसमें 36 परिवारों के 223 लोग रहते हैं, की जीविका का साधन कृषि व दुधारु पशु हैं। वहाँ 23 बायोगैस प्लान्ट हैं और 26 सोलर कुकर से हो रहे लाभ की जानकारी दी। कार्बन डाई आक्साइड की 104 टन कमी के साथ लकड़ी की 72 टन बचत, एल. पी. जी. की 5.8 टन बचत, जैविक खाद का 550 टन उत्पादन का लाभ होता है। दो अन्य ग्रामों का भी विवरण रखा।

36. श्री जसराज श्री श्रीमल (Advocate, Hyderabad) ने भारतीय संविधान की धारा 48 आदि की चर्चा करते हुए गोरक्षा के नियमों व उनके कड़ाई से अनुपालन पर जोर दिया।

'गोमाता का प्रताप' विषयक इस राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन तिरूमाला तिरूपति के देवस्थानम् के मुख्य कार्यकारी श्री रमणाचारी आई. ए. एस. ने प्रमुख सुझावों, प्रस्तावों को भारत सरकार के पास भेजने के आश्वासन के साथ हुआ। 'गाय और शेर' के पौराणिक कथानक पर आधारित अत्यन्त मनमोहक व कारुणिक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति से सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

आनन्दमठ और वन्देमातरम्

- दुर्गेश वाजपेयी (आचार्य)

आनन्दमठ, यानी बांग्ला के विख्यात उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का वह कालजयी उपन्यास जिसने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में लाखों-करोड़ों हृदयों को आन्दोलित किया और सहस्त्रों युवक-युवतियों को अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष की प्रेरणा दी। उल्लेखनीय है कि इसमें प्रयुक्त 'वन्देमातरम्' गीत क्रान्ति का बीजमंत्र तो बना ही आसेतु हिमालय एक विशिष्ट अभिवादन के रूप में भी स्वीकारा गया। इसके बावजूद सन् 1920 के बाद मुस्लिम कट्टरपंथियों तथा मुस्लिम तुष्टीकरण के समर्थक नेताओं ने इसे विवाद और विरोध के कर्दम में घसीट लिया।

कथावस्तु के नाते यह उपन्यास सन् 1770-71 के दौरान उत्तरी बंगाल में पड़े भयानक विद्रोह की महागाथा है। प्रेम, त्याग, करुणा और बलिदान जैसे मानवीय गुणों से ओत-प्रोत यह कथाकृति अपनी ज्वलंत सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय भावना के लिए हमें आज भी झकझोरने में समर्थ है।

उन्नीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध बंग्ला उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय (1838-1894) के महत्वपूर्ण उपन्यास 'आनन्दमठ' का प्रकाशन पहली बार 15 दिसम्बर, 1882 को हुआ था। इस उपन्यास का महत्व इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि भारत की शायद ही कोई भाषा हो जिसमें इसका अनुवाद न हुआ हो और कई संस्करण न प्रकाशित हुए हों। इस उपन्यास के प्रकाशन के साथ ही पूरे देश में राजनीतिक विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। यह उपन्यास सन् 1905 से पूरे राष्ट्रीय आन्दोलन, (सशस्त्र या अहिंसात्मक) की मशाल बना रहा और उसी उपन्यास में संयोजित गीत 'वन्दे मातरम्' उस मशाल की प्रज्वलित लौ थी। यही गीत अन्ततः सारे राष्ट्रवादी आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय गीत बना। विश्व साहित्य के इतिहास में यह एक अनोखी घटना रही कि एक उपन्यास को राष्ट्रीय संग्राम में एक हथियार के रूप में प्रयोग किया गया हो और इसी उपन्यास का एक गीत स्वतंत्रता आन्दोलन में शहीद हुए हजारों वीरों के लिए राष्ट्रीय मंत्र रहा हो।

बंकिम साहित्य शुरू से ही कभी उच्च प्रशंसा और कभी तीव्र समालोचना का विषय रहा है। विशेषतः आनन्दमठ के बारे में साहित्यकार, इतिहासकार, राजनीतिक समालोचक, हिन्दू-मुसलमान सभी ने इस उपन्यास में कुछ न कुछ पाया और उस पर कुछ न कुछ कहा है। यहाँ पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि विवाद के उस युग में भी कुछेक मुस्लिम विरोधी उक्तियों के कारण मुस्लिम लीग समर्थकों ने इस उपन्यास की सार्वजनिक होली भी जलाई।

बंग्ला भाषा और साहित्य के आधुनिकीकरण और विकास की धारा में जिन महारथियों का प्रमुख स्थान रहा है उनमें बंकिमचन्द्र का नाम सर्वोपरि है। उपन्यास, गद्यकार ही नहीं एक विचारक के रूप में आधुनिक भारतीय चिन्तन जगत में उनका अपना स्थान है। अपने चौदह उपन्यासों में से अन्तिम तीन उपन्यास 'आननदमठ' (1882), देवी चौधरानी (1884) और सीताराम (1887) में बंकिमचन्द्र ने देशप्रेम और राष्ट्रीय भावना को उजागर करने की सफल चेष्टा की।

आनन्दमठ पुस्तकाकार प्रकाशित होने से पहले ही उनके भाई संजीव चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा सम्पादित 'बंग दर्शन' पत्रिका में धारावाहिक (1881 के मार्च-अप्रैल से 1882 के मार्च-अप्रैल तक)

प्रकाशित होता रहा। बीच में कुछ महीने पत्रिका का प्रकाशन स्थगित रहा। सन् 1880 में जिन दिनों बंकिमचन्द्र हुगली के जिला मजिस्ट्रेट का पद सँभाल रहे थे, उन्हीं दिनों बंग्ला के प्रख्यात कवि नवीन चन्द्र सेन को लिखे गये पत्र से ज्ञात होता है कि उन दिनों उन्होंने 'आनन्दमठ' लिखना शुरू कर दिया था। 'आनन्दमठ' के पहले संस्करण का प्रकाशन कलकत्ता के जॉनसन प्रेस से हुआ। मुद्रक थे राधानाथ बन्द्योपाध्याय और मालिक थे बंकिमचन्द्र के भाई संजीवचन्द्र।

अब इस उपन्यास की कथावस्तु पर संक्षेप में विचार कर लिया जाये। एक ऐतिहासिक दुर्भिक्ष के भयानक वर्णन के साथ उपन्यास का आरम्भ होता है। इस परिप्रेक्ष्य में संन्यासी दल का गठन, एक ओर भूखी और त्रस्त जनता और दूसरी ओर अत्याचारी अंग्रेज और मुस्लिम शासक हैं। इस अराजक परिस्थिति में गाँवों के किसान अपनी रक्षा के लिए संतान दल का गठन करके अंग्रेजों और मुसलमान राजशक्ति के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह करते हैं और अन्तिम युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध संन्यासियों की विजय होती है।

'आनन्दमठ' की कथावस्तु तीन धाराओं में प्रवाहित है। पहली धारा है संन्यासी या सन्तान दल के कार्य-कलाप जिसके नायक हैं सत्यानन्द। दूसरी धारा है भवानन्द और कल्याणी की और तीसरी कथा जीवानन्द और 'शान्ति' से सम्बन्धित है। उपन्यास के जिस अंश में सत्यानन्द अर्थात् संन्यासी हैं उसमें युद्ध, लूटपाट आदि का काल्पनिक कथासूत्र है। सत्यानन्द का चरित्र आदर्शवादी कहा जा सकता है लेकिन उसके चरित्र के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आदर्शवाद के साथ मानव चरित्र की दुर्बलताओं का सम्यक् मिश्रण भी उनके चरित्र में है। बाकी दोनों धाराएँ मानवीय गुणों और दुर्बलताओं से सम्पन्न सार्थक उपन्यास के रोमांटिक तत्त्वों से समृद्ध है। आनन्दमठ का मुख्य तत्त्व है देशभक्ति। इस देशभक्ति के काव्यात्मक स्वरूप का ऐसा सुन्दर निरूपण विश्व के बहुत कम उपन्यासों में हुआ है।

बंकिमचन्द्र ने जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाया उसमें एक ओर शासन के पतनोन्मुख युग का इतिहास है तो दूसरी ओर अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना का प्रारम्भिक युग है। इसी समय घटित भयंकर दुर्भिक्ष भी ऐतिहासिक घटना है। इस शासनहीनता, अराजकता और दुर्भिक्ष की पृष्ठभूमि पर उपन्यास की कथावस्तु आधारित है। उपन्यास का मुख्य सन्देश है अत्याचार के विरुद्ध शक्ति साधना और अनुशीलन के द्वारा सशस्त्र आन्दोलन। इसी को आधार बनाकर देश के मुक्ति संग्राम को जाग्रत करने में बंकिम चन्द्र सफल हुए हैं। उस समय इस राजनीतिक उपन्यास को लिखने के पीछे तात्कालिक प्रेरणा के बारे में कुछ विद्वानों का विचार है कि वह शायद महाराष्ट्र के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी वासुदेव बलवंत फड़के की अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह की घटना थी। सन् 1879 फड़के के विद्रोह का समय था। फड़के की गिरफ्तारी मुकदमा आजीवन कारावास आदि की घटनायें देश भर में धूम मचा रही थीं। निश्चित रूप से इन घटनाओं ने बंकिन बाबू को प्रभावित किया होगा।

सन् 1770 के कराल दुर्भिक्ष का विवरण केवल उपलब्ध दस्तावेजों से ही नहीं अपितु ऐसे लोगों की जुबानी भी उन्होंने अपने बचपन में सुना था जो अकाल के जमाने में जीवित थे। यह अकाल बंकिम के 70 वर्ष पूर्व घटित हुआ था। इस उपन्यास में बंकिम चन्द्र ने जिस पृष्ठभूमि को लिया उसमें जनजीवन की उस भीषण दुर्दशा के लिए जिम्मेदार तत्कालीन मुसलमान शासक रहे हों या अंग्रेज कलक्टर, किसी को भी क्षमा न कर सके।

उपन्यास का प्रारम्भ लेखक ने किस प्रकार से किया है, जरा देखें -

'सन् 1769 के ग्रीष्मकाल में एक दिन पदचिह्न नामक गाँव में धूप बहुत तेज थी। मकान उसमें

वहुत से थे, किन्तु लोग नहीं दिखाई पड़ते थे। बाजार में दुकानों की कतारें थीं और हाट में छप्परों की पंक्तियाँ। बस्ती में सैकड़ों कच्चे मकान थे किन्तु आज सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। दुकानें बन्द पड़ी थीं। दुकानदार कहाँ चले गये थे, किसी को पता नहीं था। आज हाट का दिन था किन्तु हाट नहीं लगी थी। भीख का दिन था किन्तु भिखारी नहीं घूम रहे थे। जुलाहा करघा बन्द करके कमरे में बैठा रो रहा था, व्यवसायी व्यवसाय समेटकर बच्चे को गोद लिए रो रहा था। दाता ने दान देने से हाथ खींच लिया था, अध्यापक ने पाठशाला बन्द कर दी थी। राजमार्ग सुनसान था, सरोवर में नहाने वाले नहीं थे, किसी घर की चौखट पर कोई चेहरा नहीं था। वृक्षों पर पक्षी नहीं थे, चारण भूमि में गायें नहीं थीं, सिर्फ श्मशान में सियार और कुत्ते दिखाई पड़ रहे थे।'

उपन्यास का एक दूसरा अंश देखें- '1769 में बंगला प्रदेश तब भी अंग्रेजों के शासनाधीन नहीं आया था। अंग्रेज उस समय केवल दीवान थे। वे लगान वसूल करते लेकिन बंगाल की जनता के जीवन, धन और सम्पत्ति की रक्षा की जिम्मेदारी उन्होंने तब भी अपने हाथों में नहीं ली थी। उस समय रुपये उगाहने का भार अंग्रेजों पर और जान-माल की रक्षा का भार पापी, नराधम, विश्वासहंता, मानव-कुल-कलंक मीरजाफर के ऊपर था। मीर जाफर अपनी रक्षा करने में भी अक्षम था, बंगाल की रक्षा क्या करेगा? मीरजाफर गोली खाता और ऊँघता रहता। अंग्रेज रुपया वसूलते और डिस्पैच भेजते। बंगाली रोते और नष्ट होते।'

उपन्यास का प्रारम्भ बंगाल के ऐतिहासिक दुर्भिक्ष के मर्मस्पर्शी विवरण से आरम्भ होता है। देश में व्याप्त दुर्भिक्ष के कारण लोग घर छोड़कर शहर की तरफ जाते हैं, भोजन और सुरक्षा की तलाश में। उधर सहानुभूतिहीन शासक के अत्याचार और भीषण दुर्दशा से मुक्ति दिलाने के लिए संन्यासी दल का संगठन होता है। देश की इस दुर्दशा के लिए तत्कालीन मुस्लिम और अंग्रेज राजशक्ति समान रूपसे जिम्मेदार थी। इस ऐतिहासिक सत्य और पृष्ठभूमि का प्रयोग उपन्यास में बखूबी हुआ है।

❖

गुरु महान क्यों है?

- अंकुर पटेल (नवम 'ख')

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्मः, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु अज्ञान का नाश कर ज्ञान का प्रकाश करता है। गुरू सृष्टि नहीं बदल सकता, क्योंकि इसमें वह भी असमर्थ है परन्तु गुरु दृष्टि बदलता है। गुरु की कृपा से शिष्य को दुःख भी सुख की भाँति मीठे लगते हैं, तभी तो काँटा चुभने पर दर्द से रोने वाला बालक गुरु कृपा से काँटों की सेज पर चलता हुआ उस पार उतर जाता है।

अर्थात् गुरु से ही व्यक्ति को ज्ञान का अनुभव होगा। गुरु सृष्टि नहीं दृष्टि बदलते हैं, जो विधि का विधान है परन्तु सहने वाले की सहनशीलता में अंतर आ जाता है। गुरु पग-पग पर शिष्य की रक्षा करता है। परलोक के मार्ग में पड़ने वाले संकटों, कांटों इत्यादि से रक्षा करता हुआ भवसागर पार उतार देता है।

❖

कलियुग की औषधि : चित्रकूट

- श्री सुधीर अवस्थी (आचार्य)

चित्रकूट परम तीर्थ है। तुलसीदास जी ने चित्रकूट का महत्व विशेष रूप से गाया है। सुधीर जी को चित्रकूट से विशेष प्रेम है और वे प्रायः वहाँ चले जाते हैं। स्फटिक शिला और हनुमान धारा पर विशेष आध्यात्मिक शान्ति मिलती है। - संपादक

तुलसी जो राम सों सनेह साँचो चाहिए,
तो सेइए सनेह सो विचित्र चित्रकूट को। (कवितावली)

चित्रकूट केवल ऐसा पावन धाम है जिसके दर्शन मात्र से आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है और कलियुग के प्रभाव से बचा जा सकता है। दिन भर की भागदौड़, सुख-दुख, सच-झूठ से घबड़ाकर जब मन भयभीत होकर कातर दृष्टि से ईश्वर को देखता है, तब अशान्त जीवन से निजात पाने के लिए भटकता है। ऐसे में चित्रकूट की पवित्र भूमि का दर्शन ही आसान उपाय है। गोस्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में अनेक बार चित्रकूट के महत्व का वर्णन किया है।

चित्रकूट एक प्रामाणिक, अचूक चिन्ताहरण रासायनिक औषधि है जिसका रस प्राप्त होने पर सांसारिक कष्टों से मुक्ति प्राप्त होती है। गोस्वामी जी ने लिखा है-

चित्रकूट चिन्ताहरण नदी पयसिनी तीर।
जहाँ अवध तजि रमि रहे सीय सहित दोउ वीर।।

भव भुजंग तुलसी नकुल, डसत ज्ञान हर लेत।
चित्रकूट एक औषधी, चितवत होत सचेत।। (दोहावली)

चित्रकूट के विषय में कहा गया है-

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस।
जा पर विपदा परत है, सो आवत इहि देस।।

कलयुग के पाप झूठ तथा कपट से छुटकारा पाने के लिए गोस्वामी जी ने विनय पत्रिका की पद संख्या 23, 24 में चित्रकूट का वर्णन किया है-

सब सोच विमोचन चित्रकूट । कलि हरन करन कल्यान बूट।। (विनय पत्रिका)

(चित्रकूट सब तरह के शोकों को छुड़ाने वाला है यह कलियुग को नाश करने वाला हरा-भरा

वृक्ष है।)

अब चित चेति चित्रकूट हि चलु।
कोपित कलि, लोपित मंगल मगु, बिलसत बढ़त मोह मायामलु।।
भूमि बिलोकि राम पद अंकित, बन बिलोकु रघुबर-बिहार थलु।।
सैल-सृंग भवभंग हेतु लखु दलन कपट-पाखंड-दम दलु।। **(विनय पत्रिका)**

गोस्वामी जी ने चित्रकूट में राम जी के नित्यवास होने का उल्लेख किया है -

चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लखन समेत।
राम नाम जप जाप कहि, तुलसी अभिमत देत।। **(दोहावली)**

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन, सिय रघुवीर बिहारु।। **(बालकाण्ड)**

आखिर राम जी के निवास के लिए भी वाल्मीकि जी ने चित्रकूट ही चुना था जिसका अयोध्याकाण्ड में वर्णन है -

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।। **(अयोध्या काण्ड)**

चित्रकूट के माहात्म्य का ऋषियों द्वारा वर्णन होने के साथ-साथ सभी देवता, किन्नर, दिगपाल चित्रकूट आये।

चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाई।
आइ नहाए सरित बर, सिय समेत दोउ भाई।। **(अयोध्या काण्ड)**

अमर नाग किन्नर दिसिपाला। चित्रकूट आए तिहिकाला।।
चित्रकूट रघुनन्दन छाए। समाचार सुनि-सुनि मुनि आए।। **(अयोध्या काण्ड)**

चित्रकूट की भूमि में कण-कण में जहाँ राम जी हैं, जहाँ पर उनका साढ़े ग्यारह वर्ष का वनवास रहा। चित्रकूट अपने प्राकृतिक वैभव के कारण भी विशेष महत्व रखता है। यहाँ सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला कामदगिरि तथा पापों का नाश करने वाली मंदाकिनी गंगा है। मानस में कामदगिरि तथा मंदाकिनी का महत्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित है -

कामद में गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत विषादा।। **(अयोध्या काण्ड)**

नदी पुनीत पुरान बखानी। अभिप्रिया निज तप बल आनी।।
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनी। जो सब पातक पोतक डाकिनी।।

(मन्दाकिनी गंगा पापों को खाने के लिए डाईन रूप है।) **(अयोध्या काण्ड)**

नदी पनच सर सम दाना। सकल कलुष कलि साइज नाना।।
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी।। **(अयोध्या काण्ड)**

(चित्रकूट मानों एक अचल शिकारी है जिसका निशाना कभी चूकता नहीं और सामने से मारता है।)

चित्रकूट के समान तीर्थ ब्रह्माण्ड में नहीं है -

चित्रकूट समं नास्ति तीर्थं ब्रह्माण्ड गोलके।
पर्वत्यान्तरालेऽसो विहारं कुसते सदा।।

कामदगिरि की प्रशस्ति में श्लोक में लिखा है -

सुवर्ण कूटं रणताभि कूटं माणिक्य कूटं, मणिरत्न कूटं।
अनेक कूटं बहु वर्णकूटं श्री चित्रकूटं शरण प्रपद्ये।।

❖

प्रिय मेरे गीले नयन

प्रिय मेरे गीले नयन बनेंगे आरती!

श्वासों में सपने कर गु म्फित,
बन्दनवार वेदना - चर्चित,
भर दुख से जीवन का घट नित,
मूक क्षणों में मधुर भरूँगी भारती!

दृग मेरे यह दीपक झिलमिल,
भर आँसू का स्नेह रहा ढुल,
सुधि तेरी अविराम रही जल,
पद-ध्वनि पर आलोक रहूँगी वारती!

यह लो प्रिय! निधियोंमय जीवन,
जग की अक्षय स्मृतियों का धन,
सुख-सोना करुणा-हीरक-कण,
तुमसे जीता आज तुम्हीं हो हारती!

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

सेतु समुद्रम पर टकराव

- अंकुर पटेल
(नवम ख)

क्या है राम सेतु?

उत्तरी पश्चिमी श्रीलंका में मन्नार के द्वीपों और भारत में रामेश्वर के दक्षिणी तट पर चूना पत्थर की चट्टानों की शृंखला है। 48 किमी. लम्बी यह शृंखला मन्नार की खाड़ी और पाक जल डमरू मध्य को अलग करती है। विद्वानों का मत है कि 15वीं शताब्दी तक यहाँ पैदल चलना सम्भव था किन्तु तूफानों के कारण यह जल में डूब गया। रामायण के अनुसार यह पुल राम की सेना द्वारा बनाया गया था।

नासा का कथन

रामसेतु की अंतरिक्ष द्वारा ली गयी तस्वीर द्वारा नासा ने मात्र इतना कहा है कि अंतरिक्ष से यह नहीं कहा जा सकता है कि इसके निर्माण में मनुष्यों का हाथ है। भारतीय पुरातत्व विभाग के पूर्व निर्देशक डॉ. बद्रीनारायण के अनुसार रामसेतु प्राकृतिक रचना नहीं है। उनके अनुसार ऐसा होना असंभव है जब तक कि कोई चट्टानों को वहाँ न लाए।

क्या है सेतुसमुद्रम परियोजना?

भारत और श्रीलंका के मध्य पाक जल डमरू मध्य और मन्नार की खाड़ी के बीच स्वेज नहर जैसी नहर बनाने की परियोजना है। इसके अन्तर्गत उथले समुद्र में 83 किमी. लम्बे जहाजों के आवागमन योग्य गहरी नहर बनायी जायेगी। इसकी सर्वप्रथम परिकल्पना 1860 में ब्रिटिश इंजीनियर अल्फ्रेड डुंडाज टेलर ने की थी।

परियोजना का श्रीगणेश

स्वतंत्रता के पश्चात् 1955 में डॉ. ए. रामास्वामी मुदालियर के नेतृत्व में सेतु समुद्रम् कमेटी बनी। 13 मार्च, 2003 को अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार ने इसे मंजूरी दी। अन्ततः 2 जून, 2005 को यूपीए सरकार ने इसकी शुरुआत की।

परियोजना के लाभ

ऐसा अनुमान है कि सेतु समुद्रम परियोजना पूर्ण होने के बाद सारे अन्तर्राष्ट्रीय जहाज कोलम्बो के लम्बे जलमार्ग के स्थान पर इसी नहर से गुजरेंगे। एक अनुमान के अनुसार 2000 या इससे अधिक जलपोत इसी नहर का प्रयोग करेंगे। 19 वें वर्ष तक परियोजना 5,000 करोड़ से अधिक का व्यवसाय कर लेगी, जब कि इसके निर्माण में 2,000 करोड़ की राशि व्यय होगी।

सेतु समुद्रम परियोजना पर टकराव

धार्मिक नेताओं का कथन है कि नहर का स्थान पौराणिक रामसेतु का स्थान है, नहर से इसका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। इसके अतिरिक्त पर्यावरण के दृष्टिकोण से समुद्र में खनन और विस्फोटों से क्षेत्र का पर्यावरण और जीव-जन्तु तंत्र प्रभावित होने की आशंका है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार बाल्मीकि कृत रामायण तथा तुलसीदास कृत रामचरित मानस भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। परन्तु इसके पात्र ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक नहीं हैं।

केन्द्र सरकार ने श्रीराम के अस्तित्व पर सवालिया निशान लगाकर जनमानस को गहरे तक आहत किया है। देश में व्यापक जनरोष को भाँपकर केन्द्रीय विधि व न्यायमंत्री हंसराज भारद्वाज ने सरकार की गलती स्वीकारते हुए कहा कि सरकार की राम में पूर्ण आस्था है। अन्ततः 14 दिसम्बर को केन्द्र सरकार ने भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा अदालत में दाखिल हलफनामे को वापस लेने की बात कही।

❖

रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता (कहानी) में बाल वर्ग में तृतीय स्थान

सरल स्वभाव

- गुरुदत्त ओझा (अष्टम 'ख')

किसी गाँव में एक जमींदार रहता था। वह बहुत ही दुष्ट व कठोर स्वभाव का था। वह कभी भी अपने से बड़ों का आदर नहीं करता था। गाँव के अधिकतर लोग उससे दुःखी रहते थे। गाँव के सभी लोग उस जमींदार को तुच्छ (बुरी) दृष्टि से देखते थे। गाँव के बुजुर्गों ने कई बार ज़मीदार को समझाया भी था परन्तु वह कभी किसी की बात सुनता ही कहाँ था। कुछ दिनों बाद उस गाँव में एक किसान रहने के लिए आया। उसका नाम महादेव था। वह बहुत ही अच्छा और सरल स्वभाव का था। गाँव के सभी लोग उससे प्रसन्न रहते थे। कुछ दिनों बाद जमीदार को भी महादेव के आने की खबर मिल गयी। वह महादेव से झगड़ा करने का बहाना सोचने लगा। महादेव को भी जमीदार और उसके स्वभाव के बारे में पता चल गया था। अगले दिन जमीदार ने महादेव के खेत में अपने बैल छोड़ दिये। महादेव ने चुपचाप बैलों को हाँक दिया। फिर जमींदार ने उसके खेत में मरा हुआ जानवर फिकवा दिया परन्तु महादेव ने उसे भी हटवा दिया। महादेव ने झगड़ा करने का एक भी मौका जमीदार को नहीं दिया। एक बार उस जमींदार की बैलगाड़ी एक नाले में फँस गयी। गाँव के लोगों ने उसकी सहायता करने से यह कह कर मना कर दिया कि 'उस दुष्ट जमींदार को यही सजा मिलनी चाहिए।' परन्तु महादेव ने कहा कि 'वह जमींदार को मार ही डालेगा' लेकिन गाँव के लोगों को महादेव की बातों पर विश्वास ही नहीं हुआ। इतना कहकर महादेव उस नाले की ओर चल दिया। महादेव को आता देखकर जमींदार आश्चर्यचकित हो गया। महादेव उसके पास आया और बोला कि तुम बैलों को हाँको और मैं पीछे से धकेलता हूँ। जब बैलगाड़ी नाले से बाहर आ गयी तो जमींदार ने महादेव से माफी माँगी और यह निश्चय किया कि वह कभी भी किसी से कठोरता का व्यवहार नहीं करेगा। जब वे दोनों गाँव वापस आये तो गाँव के लोग उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हो गये। जब गाँव के लोगों ने यह पूछा कि महादेव! तुमने तो कहा था कि तुम इस जमींदार को मार डालोगे। इस पर महादेव बोले मैंने तो कठोर स्वभाव वाले जमींदार को तो कब का मार डाला अब तो केवल सरल स्वभाव और अच्छे स्वभाव वाला ही जमींदार बचा है।

शिक्षा - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सदैव सरल स्वभाव का होना चाहिए।

❖

एन. सी. सी. का प्रशिक्षण कैम्प

- अजय सिंह रावत
(नवम 'ख')

एन. सी. सी. का कैम्प कैडेट्स को सैन्य जीवन से परिचित कराने तथा उनमें भी इस प्रकार के गुणों के विकास हेतु आयोजित किया जाता है। इस दौरान कैडेट्स को हथियारों तथा विभिन्न विषयों के बारे में ट्रेनिंग दी जाती है। कैम्प में विभिन्न प्रतियोगितायें भी होती हैं जिनमें सभी भाग लेते हैं। जैसे- फायरिंग, वाद-विवाद, निबन्ध लेखन व विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ।

इस वर्ष हमारा कैम्प कैम्प में 59 BN NCC द्वारा आयोजित हुआ। इसको ATC 123 नाम दिया गया। इसके कमांडिग ऑफीसर ले. कर्नल ए. के. ठाकुर थे। यह दस दिवसीय कैम्प 7 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2007 तक चला।

प्रथम दिवस - हम सभी (J.D. व S.D. के कैडेट्स) बस द्वारा विद्यालय से रवाना हुए। वहाँ पहुँचने पर सबसे पहले हम लोगों के सामान की चेकिंग हुई। तत्पश्चात् हम लोग अपने-अपने बैरक में गये। जब हम लोगों ने बैरक के अन्दर प्रवेश किया तो वहाँ की दशा देख कर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ मानो कई साल बाद वहाँ कोई रहने आया हो। परन्तु फिर हमारे Second Officer श्री सतीश जी ने हमें बताया कि इसी का नाम कैम्प है, विभिन्न विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष करके जीना ही वास्तव में एक सैन्य जीवन है।

तब सभी ने हिम्मत बांधी और सफाई करने में जुट गये। लगभग 3-4 घंटे में हम लोगों ने मिलकर उसे साफ कर दिया। फिर वहाँ सामान व्यवस्थित किया। तब तक शाम के 7 बज चुके थे और हम लोगों को बताया गया कि इस समय रोल कॉक परेड होगी। हम सभी वहाँ गये। वहाँ अनेक विद्यालयों के S.D. व J. D. दोनों के कैडेट्स उपस्थित थे। सभी के सीनियर कमांडर C.H.M. को रिपोर्ट करते हैं तथा इस प्रकार पूरी उपस्थिति ली जाती है। उसके बाद सभी N.C.C. गान करते हैं। फिर सभी भोजन के लिए जाते हैं, वहाँ भोजन लेने के लिए एक लाइन में लगना पड़ता था। सभी दिन भर की थकान से टूट चुके थे। इतनी लम्बी लाइन देखकर हम सभी निराश तो हुए परन्तु इतनी तेज भूख सभी को लगी थी कि सब चुपचाप लाइन में लगे रहे।

फिर रात्रि को 10 बजे हम सब सोने को तैयार हुए तभी C.H.M. आया तथा सभी विद्यालयों के लड़कों से बैरक के विभिन्न जगह की सफाई करवाई तथा सब को सुबह छः बजे पीटी परेड में शमिल होने के लिए कहा। सफाई करते-करते 1 बज गया। सब थके से थे और सभी जल्दी से सो गये। सबके मन में यह विचार आने लगा था कि ये 10 दिन कैसे कटेंगे हालांकि जैसे-जैसे दिन बीते सभी को यहाँ अच्छा लगने लगा परन्तु पहला दिन बहुत कष्टकारी साबित हुआ।

अगली सुबह सभी 4 बजे उठे, प्रातःकालिक क्रिया करने के लिए जब गये तो वहाँ भी लाइनें लगीं थी, सभी को सुबह-सुबह बाल्टी लेकर पानी की तलाश करनी पड़ी। जब नल मिले तो इतनी भीड़, जैसे-तैसे सब नित्य क्रिया करके छः बजे तक तैयार हो पाए, हालांकि कोई स्नान नहीं कर सका। तभी सुबह एक सीटी बजती है, सब ग्राउण्ड में फॉल इन होते हैं। वहाँ प्रातःकालीन योगा कराया जाता

था, यह योगा, योग इंडिया ज्योति सोसाइटी के ज्योति बाबा द्वारा करवाया जाता था जिसमें प्रमुख रूप से अनुलोम-विलोम, कपाल भति, मस्तिका, प्राणायाम जैसे योग करवाये जाते थे।

बाबा का उद्देश्य नशा मुक्ति के प्रति सबको जागरुक करना था। अन्त में बाबा द्वारा नशा मुक्ति गीत 'स्वस्थ जीवन स्वस्थ आत्मा .....' गाया जाता था और ये गीत कैम्प में काफी प्रचलित भी था। आज प्रथम दिवस था तो C.O. सर द्वारा सभी को कैम्प के उद्देश्य तथा कैम्प में होने वाली विभिन्न घटनाओं को वर्णित किया। उसके बाद फिर सभी को नाश्ता मिला, फिर नाश्ते के बाद लेक्चर, परेड, ड्रिल परेड होती थी। उसके बाद फिर दोपहर का भोजन मिलता। अन्त में सायंकाल गेम पीरियड होता था। इसी प्रकार पूरे दिन की दिनचर्या रहती थी।

कैम्प में प्रशिक्षण के अलावा भ्रमण का कार्यक्रम भी होता था, इसी के तहत आई. आई. टी. भ्रमण हेतु सब गये थे। कैम्प में चल रहे शिविर के योगाचार्य द्वारा रैली भी निकाली गयी। जो नशा मुक्ति अभियान के लिए कैन्ट से फूलबाग तक चलाई गयी।

कैम्प के दौरान सायंकाल गेम पीरियड में बास्केट बॉल, फुटबाल, बालीबाल जैसे खेल होते रहते थे। अन्तिम दिनों जब विभिन्न खेलों की प्रतियोगिता हुई तो सभी के अन्दर उत्साह था। इन प्रतियोगिताओं में हमारे विद्यालय के छात्रों ने कई पुरस्कार प्राप्त किये। 100 मीटर में अभिनव आनन्द ने तृतीय, हमारे कमांडर आकाश प्रताप सिंह ने 200 मीटर में प्रथम तथा अभिनव कुमार ने भी 400 मीटर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सभी छात्र ग्राउण्ड को देख थोड़ा डरे हुए थे। उनके ग्राउण्ड का ट्रैक बहुत बड़ा था जिसका एक चक्कर 400 मीटर का था। इनके अतिरिक्त वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्वेतांक सिंह ने प्रथम व निबन्ध प्रतियोगिता में राघव अवस्थी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ड्रिल प्रतियोगिता में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अन्तिम दिन जब सांस्कृतिक कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण होना था, सब खुश थे। सबसे अधिक पुरस्कार अपने विद्यालय को प्राप्त हुए और हम लोगों को इस वर्ष चैम्पियन भी घोषित किया गया।

इस प्रकार इस वर्ष कैम्प में प्रत्येक विद्यार्थी ने उत्साह से सहयोग दिया। जिस कारण विद्यालय को वहाँ सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। इस विजय में सबका सहयोग था। कमांडर का नेतृत्व वास्तव में बहुत अच्छा था। हमारे N. O. ने भी हमारा मार्गदर्शन किया, जिस कारण हम इस विजय तक पहुंचे।

वास्तव में एक सैन्य जीवन क्या होता है, उसका एक अंश हम लोगों ने जाना ही नहीं बल्कि आचरण में भी उतारा। ये कैम्प हम सब के लिए एक विशेष अनुभव लाया। एक ऐसा अनुभव जो वास्तव में किसी-किसी को प्राप्त होता है।

❖

राग भीनी तु सजनि निश्वास भी तेरे रँगीले!
लोचनों में क्या मन्दिर नव?
देख जिसको नीड़ की सुधि फूट निकली बन मधुर रव!

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

धरती की ओर निहार

- आकाश सचान
(नवम 'ग')

आसमान से नजर उतार। इस धरती की ओर निहार।।
चाँद सितारे छूने वाले। तुझको माटी रही पुकार।।

जिसने तन में फूँके प्राण। उसकी भी पीड़ा पहचान।।
कर लें कर्तव्यों का बोध। क्यों तू बनता है अनजान।।

भू का भी कुछ मंगल सोच। दे उपकारों का प्रतिकार।।
ओ जननी के पुत्र प्रवीर। मानवता की हर ले पीर।।

निज पौरुष के दिखा प्रमाण। शुभ कर्मों की खींच लकीर।।
कर ले मन का दर्पण साफ। अपना बिगड़ा रूप सँवार।।

यह जीवन है बड़ा अनमोल। इसको मत कागज से तोल।।
दुविधाओं के देख पहाड़। सुविधाओं के पीट न ढोल।।

जो न किसी के आता काम। उस जीवन को सौ धिक्कार।।
आसमान से नजर उतार। इस धरती की ओर निहार।।

दुनिया में आग लगा देंगे

तुम भोगभूमि पर रहते हो, हम कर्मभूमि के वासी हैं।
तुम सुरासुन्दरी के कीड़े, हम भारत के संन्यासी हैं।।

तुम मौलिकता के मयखाने, हम मानवता के दीवाने।
तुम आक्रान्ता-हिंसक जालिम, हम अमन शक्ति के परवाने।।

आदर्श हमारा ऊँचा है, संकल्प हमारा ऊँचा है।
हम जान हथेली पर रखते और सर से कफन बाँधते।।

हर युग में युद्ध रचाते हैं, पर सीमा नहीं लाँघते हैं।।
इस नस्लवाद की दुनिया से हम नाम निशान मिटा देंगे।।

यदि भारत में आग लगी दुनिया में आग लगा देंगे।।

❖

विद्यालय का त्योहार : वार्षिकोत्सव

(वार्षिकोत्सव की रपट)

- यश अवस्थी
(नवम 'ख')

जैसे भारतीय समाज में दीपावली, होली, विजयादशमी का पर्व, मुस्लिम समाजम में ईद तथा सिक्ख समाज में प्रकाशोत्सव अत्यधिक हर्षोल्लास से मनाया जाता है तथा इसकी प्रतीक्षा में जिस प्रकार का परिवेश रहता है, ठीक उसी प्रकार का वातावरण उल्लास व श्रम दीन दयाल विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अन्य सदस्यों में रहता है क्योंकि इन्हीं सब पर्वों की भाँति होता है दीनदयाल विद्यालय का वार्षिकोत्सव। हमारा वार्षिकोत्सव हमारे व्यक्तित्व में प्रेरणा उत्साह, उल्लास व उमंग का संचार करता है। यह समय सभी की प्रज्ञा, कला, मेधा, योजना, व्यक्तित्व तथा ज्ञान के प्रदर्शन का होता है। 18 जुलाई, 1970 को स्थापित दीनदयाल विद्यालय ने इस बार अपना 37वाँ वार्षिकोत्सव मनाया।

इस वर्ष वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ विज्ञानं प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि श्री दिलीप सरदेसाई तथा श्री एच. सी. मेहरोत्रा थे जिन्होंने छात्रों के प्रदर्शों का आकलन किया। ऐतिहासिक-भौगोलिक, कला, विज्ञान तथा कम्प्यूटर प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं थीं। विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रस्तुत किए। प्रदर्शनी के छात्रों ने अनेक प्रकार के मॉडल्स प्रदर्शित कर सराहना एवं मार्ग दर्शन प्राप्त किया। इस बार कम्प्यूटर प्रदर्शनी में छात्रों ने अपने-अपने विषय का प्रस्तुतीकरण सहाहनीय ढंग से किया। 'भौतिकी का महत्व', 'विज्ञान की नवीन उपलब्धियाँ', 'विश्व की सुन्दरता', 'जलवायु', 'सुंदर भवन' एवं कलाकृतियाँ आदि विषयों पर छात्रों ने अपने ज्ञान का प्रस्तुतीकरण कर अपनी मेधा का प्रमाण दिया। वहीं ऐतिहासिक व भौगोलिक प्रदर्शनी में छात्रों के अनेक प्रदर्श, चित्र, संकलन एवं छायांकन के समूह का प्रदर्शन हुआ। विज्ञान एवं कला प्रदर्शनी में भी छात्रों ने प्रदर्श बनाए एवं मुख्य अतिथियों से मार्ग दर्शन प्राप्त किया। विगत वर्ष की प्रदर्शनी में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को कनिष्ठ व वरिष्ठ वर्ग के अनुसार पुरस्कृत किया गया। भैया उज्वल दीप, शिवम् पाण्डेय, यज्ञप्रिय मधुकर, यश उपाध्याय, शीतांशु तिवारी, अंकित शर्मा, यश अवस्थी, निखिल श्रीवास्तव, दिग्विजय, अनुराग भदौरिया आदि छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

वार्षिकोत्सव के दूसरे चरण में 'युग भारती' जो विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था है, के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्रथम बैच 1975 से 2007 तक के सभी बैच के सदस्य सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के ही एक पूर्व छात्र ने किया। फिर प्रधानाचार्य जी ने सभी को प्रेरणापूर्ण उद्बोधन देकर मार्गदर्शन प्रदान किया। इसके पश्चात् इन सभी सदस्यों ने सहभोज भी किया।

वार्षिकोत्सव के अगले चरण में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक व्याख्यान माला के कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में श्री माधव गोविन्द वैद्य जी थे। श्री वैद्य जी ने रामसेतु के विषय पर कहा कि 'रामसेतु आन्दोलन पर संघ संतों के साथ है, केन्द्र सरकार कहती है कि जिसे वह तोड़ना चाहती है वह रामसेतु नहीं है; तो वह बताए कि रामसेतु कहाँ है? संतों के आन्दोलन से सरकार ने अब रामसेतु न तोड़ने का निर्णय किया है जो जनभावनाओं की विजय है।' अमेरिका से परमाणु करार पर उन्होंने कहा कि 'जिस नीति में आप हथियार बना नहीं सकते हैं, वह समझौता करने की जरूरत क्या है? इससे तो

विदेश नीति ही कठघरे में खड़ी हो जायेगी।'

पंडित जी की धर्मराज्य की परिकल्पना पर उन्होंने कहा कि 'धर्म, मजहब नहीं है, हिन्दू धर्म मानव धर्म है। लोकतंत्र, धर्मराज्य की स्थापना का माध्यम बन सकता है परन्तु इनमें कुछ संशोधनों की आवश्यकता है। संचालन आचार्य श्री दिनेश जी ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत से हुआ।

वार्षिकोत्सव के चौथे दिन अन्तर विद्यालयीय गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि रूप में श्रीमती प्रेमलता कटियार थीं एवं निर्णायक मण्डल में श्री विचित्र नारायण निगम, श्री सतीश श्रीवास्तव व श्री संजय स्वर्णकार थे। छात्र व छात्रा वर्ग की प्रतियोगिताएँ अलग-अलग हुई। पूरा वातावरण संगीतमय था। स्वर व ताल की लहरें उठ रही थीं। भावनाओं का तट था व संगीत सिन्धु के अनन्त छोर से राष्ट्रीयता का मरीचिमाली झाँक रहा था। छात्र वर्ग में बी. एन. एस. डी. शिक्षा निकेतन के शुभम् दीक्षित को प्रथम, जुगल देवी सरस्वती विद्या मंदिर के प्रशांत मिश्र को द्वितीय, दीनदयाल विद्यालय के चि. अविनाश सिंह एवं ओकारेश्वर सरस्वती विद्यालय के प्रज्वल को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया।

छात्रा वर्ग में शिक्षा निकेतन की कु. अरुणिमा मिश्रा को प्रथम, कु. प्रगति राठौर को द्वितीय व ओंकारेश्वर विद्यालय की कु. सौम्या तिवारी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि माननीया प्रेमलता जी ने छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

वार्षिकोत्सव के चौथे दिन मुख्य कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय कृष्ण बिहारी पाण्डेय जी थे। कदम से कदम मिलाकर चलते हुए स्वागत एवं मान वन्दना के लिए बढ़ते हुए एन. सी. सी. तथा घोष के छात्रों का पथ संचालन अति शोभनीय लग रहा था। कार्यक्रम सायं 5.15 पर आरम्भ हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि एवं मंचासीन महानुभावों द्वारा इष्टदेवों एवं युगद्रष्टा पंडित दीनदयालय उपाध्याय के चरणों में पुष्पार्पण से हुआ। इसके बाद इष्टदेवों का अभ्यर्चन हुआ। कार्यक्रम का संचालन तरुण भारती के अध्यक्ष भैया शीतांशु तिवारी एवं महामंत्री भैया निखिल श्रीवास्तव ने किया। अध्यक्षीय भाषण के उपरान्त छात्रों को प्रोत्साहन के लिए पुरस्कृत किया गया। पंडित दीन दयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में बाल वर्ग, किशोर वर्ग व तरुण वर्ग में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया। घोष में श्रेष्ठ वादक के रूप में भैया शिवम् पाण्डेय व अजय सिंह रावत को पुरस्कृत किया गया। N.C.C. में दृश्यमुनि चाकमा व आकाश प्रताप को बेस्ट कैडेट के रूप में पुरस्कृत किया गया। परिषदीय परीक्षाओं में ससम्मान अंक प्राप्त कर्ता छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। रंगमंचीय पुरस्कारों में भैया अंकुर गुप्त को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का 'गुरुवर शरण अवस्थी' का पुरस्कार दिया गया। भैया प्रत्यूष प्रांजल को प्रथम, शीतांशु तिवारी को द्वितीय, अर्पण श्रीवास्तव, अभिजित शुक्ल व निखिल श्रीवास्तव को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् उपप्रधानाचार्य जी ने वार्षिक आख्या प्रस्तुत की। इसके उपरान्त भैया दिग्विजय ने प्रधानाचार्य जी द्वारा कृत कविता 'ओ तपस्वी! सिंधु से ...' गीत गाकर एक अलौकिक वातावरण का सृजन किया। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि ने विद्यालय के उद्देश्य को श्लाघ्य बताकर पंडित जी के गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि 'पंडित जी जैसे श्रेष्ठ गुणों को धारण करने वाला पुरुष राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकता है।' इसके पश्चात् माननीय सचिव जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा कार्यक्रम का संचालन किशोर भारती के मंत्री भैया ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामशरण द्विवेदी ने पंडित जी के चरणों में पुष्पार्पण किया। प्रार्थना के पश्चात् अध्यक्षीय भाषण हुआ एवं माननीय मुख्य अतिथि ने अपना प्रेरक वक्तव्य देकर छात्रों को प्रोत्साहित किया।

धन्यवाद ज्ञापन सचिव जी ने किया।

इसके पश्चात् रंगमंचीय प्रस्तुतियों का क्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम सरस्वती वंदना प्रारम्भ हुई जिसमें भैया पार्थ, सुयश, कार्तिकेय, अभिनव, आशुतोष ने माँ सरस्वती का स्तवन किया। इसके उपरान्त नाटक का प्रारम्भ हुआ। जिसका शीर्षक था - '1857 : प्रथम स्वाधीनता संग्राम' जिसमें 1857 की क्रान्ति की झलकियों द्वारा युवा वर्ग की भावनाओं को झकझोर कर देशभक्ति की भावना जाग्रत की। नाटक का अभ्यास कई दिनों से चल रहा था। जिसमें मुख्य भूमिका निभाई थी आचार्य श्री बालेश्वर शर्मा एवं आचार्या श्रीमती शारदा राव जी ने। कार्यक्रम का मार्गदर्शन एवं गुरुतर कार्य सदैव की भांति आचार्य श्री गया प्रसाद जी ने किया। कार्यक्रम का निर्देशन आचार्य श्री दुर्गेश जी ने व श्री मयंकमणि जी ने किया। नाटक का प्रारम्भ अभिनय गीत से होता है जिसमें भारतीय का अभिनय सारांश अग्रवाल व अंग्रेज व्यक्ति का अभिनय दृश्यमुनि चाकमा ने किया। गीत के बोल थे- 'न राजा रहेगा न रानी रहेगी' इसके पश्चात् क्रान्ति यज्ञ में शहीद होने वाले वीरों व वीराङ्गनाओं के बलिदान का अभिनीत दृश्य दिखा दिया गया जिसमें मुख्य भूमिका भैया नन्दराज, शशांक कुमार, कुलदीप राजदेव, अभिजीत कुमार, अनुराग त्रिवेदी, यज्ञप्रिय मधुकर, अक्षय अवस्थी, यश अवस्थी, अभिषेक द्विवेदी आदि ने निभाई। नाटक का उद्देश्य भैया यतीन्द्र त्रिपाठी ने तथा पात्र परिचय भैया अर्पण ने प्रस्तुत किया। नाटक का साहित्यिक भाषा में संचालन आचार्या श्रीमती शारदा जी किया और 'राष्ट्रगीत' के साथ ही यह कार्यक्रम समाप्त हो गया।

वार्षिकोत्सव के पाँचवें दिन परम्परागत रूप से अन्तर विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें नगर के बीस प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। छात्र व छात्रा वर्ग की प्रतियोगिता अलग हुई। मुख्य अतिथि के रूप में संयुक्त शिक्षा निदेशक प्रभा त्रिपाठी थीं। छात्र वर्ग का विषय था - 'वर्तमान परमाणु अमेरिकी समझौता राष्ट्रहित में नहीं है।' इस विषय के पक्ष में दीनदयाल विद्यालय के भैया दिव्यांश त्रिपाठी ने कहा- 'परमाणु समझौता करने से राष्ट्र खतरे में पड़ सकता है। इससे अच्छा उपाय है कि हम अपने विद्युत संयंत्रों द्वारा थोरियम को यूरेनियम में बदलकर परमाणु ऊर्जा की आपूर्ति कर सकते हैं।' इस विषय के विपक्ष में इसी विद्यालय के भैया निखिल श्रीवास्तव ने कहा - 'यदि हम अपने देश को विकसित करना चाहते हैं, तो यह परमाणु समझौता करना उचित होगा। हमारे पास यूरेनियम की कमी है। थोरियम से यूरेनियम बनाने पर विद्युत व परमाणु ऊर्जा का विघटन होने की नितान्त सम्भावना है। अतः परमाणु समझौता श्रेयस्कर है।' छात्र वर्ग में दीन दयाल विद्यालय के चि. निखिल श्रीवास्तव एवं चि. दिव्यांश त्रिपाठी को क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान तथा ओंकारेश्वर विद्यालय के चि. शिवशक्ति सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। विद्यालय की परिपाटी के अनुसार शील्ड दीनदयाल विद्यालय को प्राप्त हुई परन्तु ओंकारेश्वर विद्यालय के छात्रों को दे दी गयी। छात्रा वर्ग का विषय था- 'छात्र संघों पर रोक उचित है।' इस विषय में सनातन धर्म बालिका विद्यालय की छात्रा कु. अंकिता त्रिपाठी को प्रथम व बी. एन. एस. डी. शिक्षा निकेतन की छात्राओं को द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन तरुण भारती ने किया।

वार्षिकोत्सव का अन्तिम चरण माँ शारदे के वरद् पुत्रों का होता है। कवि सम्मेलन में देशभक्ति, समाज, दर्शन, ईश्वर प्रेम पर आधारित कविताएं ही विशाल कक्ष में साक्षात् वाग्देवी के रूप में अवतरित होती हैं। कवि गोष्ठी की अध्यक्षता प्रखर कवि पं. दूधनाथ शर्मा 'श्रीष' ने की। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप बाजपेयी जी ने किया। कार्यक्रम के कवि समूह में राघवेन्द्र जी, सुमन दुबे जी, सुरेश अवस्थी, सुबोध तिवारी, प्रमोद तिवारी, प्रधानाचार्य श्री ओम शंकर त्रिपाठी उपस्थित थे। छात्र कवियों में भैया शीतांशु, अर्पण, अभिजीत, यश, यज्ञप्रिय, सुप्रियमणि ने भी कविताओं का पाठन कर श्रेष्ठ कवियों एवं

माँ शारदा से आशीर्वाद प्राप्त किया। कवियों ने ऐसी सरस्वती की धारा को प्रवाहमान किया कि श्रोताओं के हृदय की गंगा तथा प्रज्ञा की यामुनी धारा के मिलने से सभागार ज्ञान संगम जैसा पावन हो गया।

कवि सम्मेलन के स्थगन के साथ ही वार्षिकोत्सव का प्रेरक एवं समापन हो गया तथा वार्षिकोत्सव अपने समाप्त होने की प्रतीक्षात्मक पीड़ा भी हमें दे गया।

❖

दशहरा मेला : संस्मरण

- आशीष मिश्र
(अष्टम 'क')

वैसे तो दशहरा मेला सबके लिए सुखदायी होता है परन्तु अभी बीता हुआ दशहरा मेरे लिए दुःखदायी हो गया। आपको सोचकर ऐसा लग रहा होगा कि दशहरा भला किसी के लिए दुःखदायी कैसे हो सकता है?

इस कहानी को पढ़कर ही आपको इस प्रश्न का उत्तर मिलेगा।

दशहरा! एक ऐसा पर्व जिसे घर के बाहर मनाया जाता है। घर से कुछ दूरियों पर मेले लगते हैं, इन मेलों में दूर-दूर से कलाकार रामलीला करने आते हैं, पकवान, झूले, मिठाइयाँ, सर्कस, स्टंट, जादू सब कुछ यहाँ होता है। यह मेला कई दिनों तक लगा रहता है। हमारा पूरा परिवार कार से मेला देखने के लिए घर से निकला। मेले के मुख्य द्वार पर पहुँचकर पिताजी ने कार पार्क की तथा उन्होंने सबको दो-दो सौ रुपये दिये और कहा- 'एक घंटे बाद सभी यहीं एकत्रित होंगे। सभी अलग-अलग चल दिये। फुटकर नोट थे। मैं उन्हें पर्स में रखते हुए जा रहा था, तभी लगभग 7-8 वर्ष का एक लड़का मेरा पर्स छीनकर भागने लगा। मैं भी उसके पीछे भागा। कुछ दूरी पर मैंने उसे पकड़ा। उस समय मेरा हृदय क्रोध से भरा था। पर धीरे-धीरे उस लड़के की आँखों से अश्रु धारा बहने लगी। यह देख मेरा हृदय करुणा से भर उठा। वह बोला - 'भाई जी, मेरी माँ ने कई दिनों से कुछ नहीं आया। मैंने यहाँ से जब किसी रेस्ट्रा से भोजन चुराया, पकड़ा गया। भाई जी मुझे कुछ पैसे दे दो।' मैंने उसको आवारा समझ पर्स लेकर भगा दिया।

मैंने उन रुपयों से झूला झूले, सामान खरीदा, खाया-पिया और मेले के मुख्य द्वार पर आया। परिवार के सभी लोग एकत्रित हुए और घर चले आये। मैं घर जाकर सो गया। नींद में मुझे उस लड़के के शब्द पूरी तरह कानों में गूँजते रहे। मुझे रात को नींद नहीं आयी। सुबह होते ही मैं सब कुछ भूल गया। दिन धीरे-धीरे ढलने लगा। शाम हो गयी। मेरे पिताजी दफ्तर से आये और बोले- 'दल मेले से मैं एक घड़ी लाया था, वह खराब है आज वापस करने चलेंगे। मैं भी उनके साथ गया। मेले के मुख्य द्वार पर पहुँचते ही मैंने देखा कुछ व्यक्ति एक अर्थी को ला रहे हैं तथा पीछे वह लड़का माँ-माँ कहकर चिल्ला रहा है। पूछने पर पता चला कि पिन्टू नामक लड़के की माँ का भूख से देहान्त हो गया है। मैं अचम्भित हो गया, मैं एक कोने पर गया व सोचने लगा कि अगर मैंने कल रुपये इसको दे दिये होते तो शायद इसकी माँग आज जिन्दा होती। मैं बहुत पछताया। आज तक पछताता हूँ। मैंने प्रण किया कि मैं सदैव गरीबों की मदद करूँगा।

❖

संस्मरण

संवेदनशून्यता

- निखिल श्रीवास्तव
द्वादश 'ख'

कभी दुनिया देखी! कितनी प्रसन्न, कितनी संतुष्ट, कितनी आत्मकेन्द्रित; ऐसा लगता है कि मानों सबको अपना वांछनीय प्राप्त हो चुका है। सबके चेहरों पर हँसी, कर्म में उत्सुकता और भावों में रवानगी देखकर कभी-कभी स्वयं सृष्टा भी दिग्भ्रमित हो जाता है कि क्या यह वही मृत्युलोक हैं जिसे मैने नश्वरता का चोला पहनाकर , इसमें चंद खिलौने डालकर इसे एक जीवन्त इकाई का रूप दिया था और जिसको स्वमनोरञ्जनार्थ मैं आदिकाल से कठपुतलियों के खेल की तरह खलता रहा हूँ। शायद नहीं ...

ईश्वर ने संसार को इतना अधिक सुखी, संतुष्ट और प्रेममय तो नहीं बनाया था। इसमें दुःख भी था, दुःखी भी था, कष्ट था और कष्ट को भोगने वाले मानव भी। संसार का सबसे महान गणितज्ञ अपने हिसाब से इतनी बड़ी त्रुटि तो कर ही नहीं सकता कि वह पूरा संसार एक ही तरह का बना दे। तो फिर उस पूरी इकाई का क्या हुआ जो दुःखी और उपेक्षित थी। क्या वह समय के साथ विलुप्त हो गयी या फिर हमने उसकी आवाज ही सुनना बन्द कर दी?

दूसरा विकल्प शायद अधिक उचित और समीचीन है। हम ही हैं वो कारक और कारण जिसकी वजह से आज हम इतने संवेदनशून्य हो गये हैं कि एक पूरे वर्ग की आह हमारे कर्णपटलों को कम्पित नहीं कर पाती। आज जब इस लेखनी ने विचारों को कागज पर उतारने का हौंसला दिखाया तब मैं आपके समक्ष एक ऐसी घटना प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जिसने मेरे मन, हृदय और मष्तिष्क तीनों को ही एक विषय प्रदान किया।

यही कोई दो साल पहले की बात है, मैं रेलगाड़ी से लखनऊ होकर कानपुर वापस आ रहा था। मेरे साथ मेरे पिता जी एवं मेरा अनुज था। आम दिनों की भाँति उस दिन रेलगाड़ी में अधिक भीड़ न थी किन्तु फर्श पर कूड़ा-करकट उसी मात्रा और स्वरूप में था। जैसा कि साधारण रेलगाड़ी के डिब्बे में होता है। अजगैन नामक स्टेशन से गाड़ी चलने के कुछ क्षण पश्चात् वहाँ एक बालक आया। उसकी उम्र लगभग तेरह वर्ष, शरीर पर कपड़ा जो मलिनता में उसके वेश को भी परास्त कर रहा था। वह अचानक आया और डिब्बे के एक सिरे से लेकर वह फर्श की सफाई करने लगा और देखते ही देखते अगले कुछ ही क्षणों में उसने पूरी फर्श की सफाई कर दी। यह मेरे जीवन का प्रथम अवसर था जब मैंने किसी रेलगाड़ी की फर्श इतनी स्वच्छ देखी थी। इसके बाद वह बालक खड़ा हुआ और उसी निर्भीकता और स्वाभिमान के साथ लोगों से धन याचना करने लगा। उसने माँगा भी तो बहुत अधिक नहीं - केवल एक या दो रुपये, लेकिन आप लोगों की दिलदारी तो देखिये, एक तो वे उस बालक को रुपये देने से इन्कार करते हैं और ब्याज के तौर पर उसे दो-तीन बातें यह कहकर सुना देते हैं कि उन्होंने इस बालक से सफाई करने के लिए नहीं कहा। जेब में रुपये न होने की वजह से मैं भी मूकदर्शक की तरह यह सब देखता रहा।

कुछ देर बाद वह बालक चला गया। उसके जाने के कुछ समय बाद एक अंधा व्यक्ति डिब्बे में चढ़ा। उस अंधे आदमी को देखा तो मुझे तुरन्त ध्यान आ गया कि यह तो लखनऊ से कानपुर की रेलगाड़ियों में प्रायः भीख माँगता है और सब जगह अपना वही पुराना और कृत्रिम दीन स्वर अलापा करता है। उसके आते ही अधिकांश लोगों की मुट्ठियाँ और जेबें खुल गयीं और थोड़ी ही देर में उसने पर्याप्त सिक्के जुटा लिये फिर वह भी दूसरे डिब्बे में उतर गया।

उसके जाने के बाद मैं सोचने लगा कि क्या विवशता, कर्म की महत्ता से बलवती है या फिर गरीबी का भी कोई स्तर है जिसके कारण लोगों ने उस आँख से बेबस अंधे को तुरन्त रुपये दे दिये और उस बेचारे लड़के के लिए एक रुपया निकालने में उन्हें अपने विचार कपाट खोलने पड़े।

शायद यही कारण था कि जो वास्तविकता में दुःखी हैं और सहायता का अधिकारी है वह हमें दिखाई नहीं देता और दीनता एवं करुणा जैसे भाव केवल मुख से (मन से नहीं) प्रकट करने वाला व्यक्ति हमारी सहायता का पात्र बन जाता है।

इसलिए उस गरीब इकाई की वास्तविक आह हमारे कानों तक नहीं पहुँचती, उसके दर्द हमारी आँखों के स्वप्न नहीं बनते और हम उसका सहारा बनकर उसको वास्तविकता में सुखी नहीं बनाते हैं। यही हमारा दोष है और इसका निवारण करने पर ही हम अपना विकास कर सकेंगे।

❖

हास्य कविता

- शोभित मिश्र (सप्तम 'क')

आजकल के भ्रष्टाचारी नेताओं को देखकर मैंने उन पर एक हास्य कविता लिखी जो इस प्रकार है -

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
जनता सारी भूखी मरे नेता खायें मेवा।।

कुर्सी के खेल में,
अन्धे भए नेता।
वादों की नाव को,
कोई नहीं खेता।।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

एक नहीं दो नहीं,
सब भ्रष्टाचारी।
जुल्म इनके सह रही,
जनता बेचारी।।

गरीबन के खून से करें टी कलेवा।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।।

प्यासन को लोटा देत,
भूखन को थाली।
चमधुन को मौका देत,
औरन को गाली।।

चुनाव के टाइम पर करें देश सेवा।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।।

❖

कहानी लेखन प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में द्वितीय स्थान

परिस्थितियाँ

- आनन्द बाबू
(द्वादश 'क')

परिस्थितियाँ मनुष्य को देवता से दानव बना देती हैं, यह इस कहानी में देखने को मिलता है। परिस्थितियों की चोट या प्रभाव से मानव शून्य से शिखर तक तथा शिखर से पाताल तक जा सकता है।

- संपादक

यह समय भारतवर्ष के इतिहास का स्वर्णयुग था। मालवा के महाराज वीरसिंह का प्रताप समस्त दिशाओं में व्याप्त था। उनके शौर्य की सीमा न थी। उनके गुणों के कारण उनके शत्रु भी खुले हृदय से उनकी प्रशंसाक करते थे। महाराज स्वयं तो गुणी थे ही, गुणवानों का सम्मान भी करते थे। उनके दरबार में एक से एक योद्धा, कवि और चित्रकार सदा उपस्थित रहते थे। किन्तु महाराज जिनका सर्वाधिक सम्मान करते थे वे थे- चित्रकला विशेषज्ञ चित्रसेन।

चित्रसेन की कला का हर कोई कायल था, उनके चित्र तो मानों बोलते थे।

एक बार की बात है - महाराज वीरसिंह ने चित्रसेन को आज्ञा दी कि आप हमारे लिए दो चित्र बनाइए -

एक चित्र दुनिया के सबसे मासूम चेहरे का और दूसरा संसार का सर्वाधिक क्रूर चेहरा।

अगले ही दिन चित्रसेन अपने चित्रों के लिए चेहरा ढूँढने में निकल पड़े। वे कइयों से मिले, कई शहरों में घूमे परन्तु उन्हें वो चेहरा न मिला, वे जिसकी खोज में थे। तकरीबन दो माह के बाद शाम के वक्त एक गाँव से गुजरते वक्त उनकी नजर धूल में खेलते एक छोटे से बच्चे पर पड़ी, उन्हें लगा कि उनकी खोज समाप्त हुई। उससे मासूम चेहरा न तो उन्होंने कभी देखा था और न ही देखने की उम्मीद थी।

अगले ही दिन उन्होंने महाराज के सम्मुख उस बालक का चित्र प्रस्तुत किया। महाराज मुग्ध हो उठे और चित्रसेन को एक लाख स्वर्ण मुद्राएं दी किन्तु कह उठे, 'चित्रसेन! अभी तक आपने हमारा आधा ही कार्य किया है, अभी तो आपको एक और चित्र बनाना है।'

चित्रसेन को महाराज की बात प्रभावित कर गयी और वे अगले ही दिन संसार के सबसे क्रूर चेहरे की खोज में निकल पड़े। चित्रसेन ने हर गांव, हर शहर को छान मारा। लाखों कोशिशें कीं, यहाँ तक कि अपनी कल्पना से भी चित्र बनाने की कोशिश की किन्तु किसी चेहरे पर उन्हें वे भाव न मिले जिसकी खोज उन्हें थी।

वर्षों बीत गये परन्तु वे अपना दूसरा चित्र प्रस्तुत न कर सके। एक दिन उन्होंने महाराज से

निवेदन किया, 'महाराज! मैंने संसार का हर कोना देख लिया किन्तु मुझे वो चेहरा न मिला जो मैं संसार का क्रूरतम चेहरा कहकर आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दूँ। अतः मैं एक दिन राजकारागार में जाकर कैदियों को देखना चाहता हूँ।'

महाराज ने स्वीकृति दे दी। अगले ही दिन चित्रसेन कारागार में गये और वहाँ के सबसे खूँखार कैदियों को देखने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने एक के बाद एक कई चेहरे देखे और एक चेहरे पर उनकी नजरें अटक कर रह गयीं। उस चेहरे से टपकती थी तो सिर्फ क्रूरता और आँखों से आग। चित्रसेन की तलाश पूरी हुई। वे अपना सामान रखकर उस कैदी का चित्र बनाने लगे। वे अपना चित्र बनाने में व्यस्त थे और वह कैदी वर्षों पुराना बनाया गया उस मासूम बालक का चित्र देख रहा था किन्तु अचानक वह फूट-फूट कर रोने लगा। चित्रसेन इसका कारण न समझ सके और पूछ उठे कि वह क्यों रो रहा है? उसने बताया कि वह मासूम बालक वह स्वयं ही है जो आज उनके सामने इतने क्रूरक रूप में हैं।

चित्रसेन हतप्रभ रह गये। उन्होंने आश्चर्य से उससे उसकी कहानी पूछी, वे जानना चाहते थे कि आखिर वह कौन सा कारण था, जिसने उसे इतना बदल दिया। किन्तु वह एक शब्द के अलावा कुछ न बोल सका- 'परिस्थितियाँ'

❖

परिणाम

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता 2007

बाल वर्ग

(1)	चि. प्रखर अवस्थी अष्टम 'क'	प्रथम स्थान
(2)	चि. प्रियम सिंह अष्टम 'ख'	द्वितीय स्थान
(3)	चि. यज्ञप्रिय मधुकर अष्टम 'क'	तृतीय स्थान

किशोर वर्ग

(1)	चि. यश अवस्थी नवम 'ख'	प्रथम स्थान
(2)	चि. अर्पण श्रीवास्तव दशम 'ख'	द्वितीय स्थान
(3)	चि. देवेश बाजपेई नवम 'ख'	तृतीय स्थान

तरुण वर्ग

(1)	चि. निखिल श्रीवास्तव द्वादश 'ख'	प्रथम स्थान
(2)	चि. प्रशान्त कुमार एकादश 'क'	द्वितीय स्थान
(3)	चि. दिव्यांश त्रिपाठी द्वादश 'क'	तृतीय स्थान

❖

कहानी लेखन प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम स्थान

रामू की नियति

- अखिल मिश्र
(द्वादश 'क')

चि. अखिल की इस रचना में समाज के अभिजात्य एवं धनी वर्ग की संवेदनहीनता तथा सर्वहारा वर्ग की विवशताओं के दर्शन होते हैं। कहानी कला की दृष्टि से रचना सफल नहीं है परन्तु प्रयास ठीक है। - संपादक

सर्वत्र एक अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ है चारो तरफ सिर्फ कुत्तों के भौंकने की आवाजें आ रही हैं। कुछ लोग अपना बिस्तर बिछाकर सड़क के किनारे की भूमि पर सोने की तैयारी में हैं। शहर के बीचोबीच इस प्रकार का दृश्य बहुत ही अचंभित करने वाला है परन्तु जीवन के अन्य पहलुओं की भाँति यह भी एक यथार्थ है। किसान रामू के परिवार में उसकी पत्नी के अतिरिक्त दो पुत्र व एक पुत्री है। पुत्रों की उम्र (7 या 8 वर्ष) लगभग समान है। पुत्री मात्र दो माह की है। सामान्य गाँव के लोगों की मानसिकता के विपरीत रामू व उसकी पत्नी को अपनी पुत्री से बहुत प्यार है, उसको इच्छानुसार एक सुन्दर पुत्री की प्राप्ति हुई।

परन्तु नियति का दस्तूर देखिये - ईश्वर ने उनको अभीप्सित पुत्री तो दी पर उसकी श्वाँस नलिका सामान्य नवजात शिशुओं की भाँति न होकर अवरुद्ध थी। जन्म वाले दिन से ही उसका इलाज होने लगा। पत्नी की तो अस्पताल से छुट्टी हो गयी पर लड़की वहीं भरती हो गयी। चूँकि अस्पताल में रामू व उसके परिवार के ठहरने की व्यवस्था नहीं हो पाई क्योंकि वहाँ का किराया (ठहरने का) बहुत ज्यादा था। वह बेचारा तो जैसे-तैसे अपना पेट काट कर अपनी छोटी-सी पुत्री का इलाज करा रहा था। इसलिए उसने अस्पताल के पास ही में लगे वृक्षों के नीचे ठहरना उचित समझा। अतः रामू परिवार सहित वहीं सोने की तैयारी में था। जाड़े की सर्द रातों में ऊँची-नीची इमारतों वाले मुहल्ले में सभी लोग अपने आलीशान घरों के अन्दर रजाई में बैठे थे। परन्तु अस्पताल के स्टाफ की भाँति वे बाहर ठण्डक में बैठे निरीह रामू की दवा-दारू का प्रबन्ध करता तथा उसकी पत्नी भी अपनी छोटी सी बच्ची के पास रहती। चूँकि पुत्री की बीमारी बहुत भयंकर थी तथा इलाज भी बहुत महंगा था। रामू तो एक किसान था, घर-बार, खेत बेंचकर जैसे-तैसे एक ऑपरेशन करा पाया था, परन्तु अभी भी दो ऑपरेशन बाकी थे। रामू के लिए यह सम्भव नहीं था परन्तु वह इसे विधाता का लिखा हुआ समझकर असाध्य समस्याओं का सामना करता है। दस दिनों तक यही क्रम चलता रहा। दिन में वे लोग उस लड़की के पास रहते तथा रात में ठण्ड में ही खुले में बगैर रजाई के चादर बिछाकर तथा पास में अलाव जलाकर सो जाते।

चूँकि उसकी पत्नी ने भी ऑपरेशन द्वारा लड़की को जन्म दिया था। इसलिए उसकी भी हालत ठीक नहीं थी। इन परिस्थितियों में उसकी हालत बिगड़ती चली गयी। उधर रामू की पुत्री तो पैसों की व्यवस्था न हो पाने के कारण इलाज से मरहूम तथा मरणासन्न थी। रामू द्वारा लाख दुहाई देने का

बावजूद डॉक्टरों ने उसका (पुत्री का) ऑपरेशन नहीं किया। ग्यारहवें दिन रात को रामू अस्पताल से अपनी मृत पुत्री का शव लेकर वहीं फुटपाथ पर आया, जहाँ वह ठहरा था तो उसने अपने पुत्रों को रोते हुए देखा। पास जाकर देखा तो उसके होश उड़ गये। रामू की पत्नी जमीन पर बेसुध पड़ी थी, वह मर चुकी थी। चूँकि वह पहले से ही गम्भीर रूप से बीमार थी, ऊपर से सर्दी में खुले में रहने के कारण उसकी भी मृत्यु हो गयी थी। रामू को उसके दोनों अबोध बालक अपने परिवार के दो सदस्यों की मृत्यु पर जोर-जोर से रोने लगे। परन्तु करुण क्रन्दन भी अस्पताल के डॉक्टरों को तथा समाज के तथाकथित अमीर लोगों के कठोर हृदय को पिघला न सका तथा किसी को कोई परवाह भी नहीं थी कि उनके आस-पास क्या हो रहा है। रामू भी उनका अन्तिम संस्कार करने का प्रबन्ध करने लगा जो कि उसकी नियति थी।

❖

कविता लेखन प्रतियोगिता में बाल वर्ग में द्वितीय स्थान

कलियुग की आग

- मो. अफजाल अहमद
(अष्टम 'ख')

प्राक्कथन - मैं इस कविता को लिखते समय भावुकता के उस सागर में लीन हो गया था जिससे उबर पाना मेरे लिए मुश्किल था। इस कविता से मैं देश को समस्याओं से मुक्त करवाने का आग्रह कर रहा हूँ।

'कलियुग तो आज उलटी गंगा बहा रहा है,
खुद माँ-बाप को बेटा ठोकर लगा रहा है।
बहनों से आज कहना तुम होशियार रहना,
क्योंकि पापी तो आज छुपकर राखी बँधा रहा है।
पिता विवाह करवाता सोने की तितलियों से,
और खुद बाप अपनी बेटी जिन्दा जला रहा है।।
कलियुग तो ...
मजदूर का तो बेटा रोटी को तरस रहा है,
और वहीं लालाजी का नौकर मक्खन ब्रेड खा रहा है।
कलियुग तो ...
कौन लिखेगा महाभारत की कहानी,
क्योंकि आज का तो अर्जुन रिक्शा चला रहा है।
कलियुग तो ...

❖

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम स्थान

सेतु समुद्रम परियोजना : धार्मिक आस्था पर एक आघात

- दिव्यांश त्रिपाठी
(द्वादश 'क')

भारत देश जब से विकास की ओर अग्रसर है तब से अनेकों परियोजनाओं की भागीदारी की सार्थकता इस विकास में निहित हो रही है। सर्वप्रथम बाँध परियोजना, तत्पश्चात् नदियों के जल शुद्धीकरण सम्बन्धी परियोजना इत्यादि। जैसे-जैसे देश विकास की दिशा में बढ़ता गया, इन परियोजनाओं के महत्व में भी वृद्धि हुई। ऐसी ही एक परियोजना वर्तमान में हमारे सकल राष्ट्र में विवाद का एक ज्वलन्त मुद्दा बनी हुई है। परियोजना है- सेतु समुद्रम् परियोजना। वैसे तो विवाह एवं वाद हर विषय के पहलू हैं लेकिन जब यह विवाद हमारी धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं और प्राचीन अस्मिता के सन्दर्भ में हो तो एक बड़े वर्ग विशेष समूह द्वारा उस पर उठायी जाने वाली आवाज समीचीन है।

भारत देश सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, मान्यताओं और परम्परागत तरीकों के चलते ही आज 'विश्व गुरू' के पथ पर अग्रसर है। ऐसे में हमारे यहाँ सामान्य जन भी अपनी भगवत्-भक्ति में आस्था रखता है यदि किसी कारणवश उसकी इस भक्ति में बाधा आती है तो उसको दुःख होगा और वह क्रान्ति हेतु विवश होगा।

क्या है परियोजना?

सेतुसमुद्रम् परियोजना के अन्तर्गत भारत एवं श्रीलंका के बीच में बने रामसेतु को तोड़ा जाना होगा ताकि जल-परिवहन की सुचारुता हेतु जो जहाज श्रीलंका से घूमकर भारत के दक्षिणी प्रान्त पर स्थित बंदरगाहों पर पहुँचते थे, वे सीधे ही भारतीय प्रान्त तक पहुँच सके। इस परियोजना की सफलता को परिवहन विभाग अपनी एक बडी जीत मानता है। परन्तु इसके दूरगामी परिणाम कुछ और ही बयाँ करते हैं।

परियोजना से लाभ

लाभ के कारणों को गिनाया जा सकता है क्योंकि उनका संख्यात्मक मान निश्चित ही कम है। यदि इस विषय पर दृष्टिपात करें तो हम यह पाते हैं कि सिर्फ यह लाभ कि जो जहाज श्रीलंका से घूमकर भारत तक पहुँचते थे वे सीधे ही बंदरगाहों पर आ सकेंगे। यद्यपि इससे समय व दूरी कम होगी और धन की बचत होगी, तथापि इसके दुष्प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता।

परियोजना से हानियाँ

कारगिल युद्ध से पूर्व जब भारत भारत पाकिस्तान युद्ध हुआ तब अमेरिका ने पाकिस्तान को सैन्य मदद देने की कोशिश की थी। अगर वह अपने इस प्रयास में नाकाम रहा तो कारण था सिर्फ एक - रामसेतु द्वारा अवरोध। जरा सोचें यदि उस समय महाशक्ति अमेरिका पाकिस्तान के साथ मिलकर हमारे दम्भ को परास्त कर देता है तो वर्तमान में वैश्विक परिदृश्य पर भारत की जो छवि है वैसी कभी न रहती। रामसेतु द्वारा ही यह रोकना सम्भव हुआ है।

सर्वविदित है कि केरल के तटों को थोरियम अर्थात् काली रेत का विशाल भण्डार माना गया है। इस परियोजना को कार्यान्वित कर हम एक प्रकार से विदेशी शक्तियों को इस संसाधन का उपयोग करने हेतु आमंत्रण दे रहे हैं। रामसेतु को तोड़ना यानी तमिल शरणार्थियों की संख्या में वृद्धि करना या इस प्रकार कहें कि 'लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम' के अनाचारों को बढ़ावा देना है। मत भूलें कि श्री राजीव गाँधी जी की हत्या के षडयंत्र में लिट्टे का भी सहयोग था।

इतनी सारी खामियों के बावजूद भी यदि हम इस परियोजना को मूर्त रूप देते हैं तो यह हमारे आत्म-सम्मान और हमारे गौरवशाली अतीत पर एक चोट होगी।

धार्मिक आस्था पर विवाद

इस परियोजना को लेकर उठा विवाद और भी ज्वलन्त मुद्दा बन गया जब प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हमारी धार्मिक आस्थाओं एवं मान्यताओं पर संशय उत्पन्न हो गया। कुछ स्वार्थपरक नेता इस मसले को लेकर भगवान श्रीराम के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाने लगे। हद तो तब हो गयी जब कुछ स्वार्थलोलुप राजनीतिज्ञों ने राम के अस्तित्व को मानने से इंकार कर दिया। पौराणिक कथाओं के नायक, स्वयं के सत्य, शील, सौन्दर्य समन्वित रूप से दूसरों को प्रेरणा देने वाले, मर्यादा और पुरुषतत्व के पालक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जिस नाम को जपकर न जाने कितने लोगों में असीम ऊर्जा संचरित होती है, उसी राम के अस्तित्व को कोई कैसे नकार सकता है।

सदियों से वर्तमान तक हर युग में जो राम पूजा गया, जिसकी आस्था पर लोग असंभव कार्य भी करने में सफल हो जाते हैं उसके अस्तित्व को न मानने वाले सिर्फ अपनी मूढ़ता का परिचय दे रहे हैं। 'राम झूठे हैं', 'राम एक काल्पनिक चरित्र है', 'रामसेतु प्राकृतिक निर्माण है न कि नल-नील निर्मित' यदि इन्हीं बातों को सच्चाई मानें तो आज तक हमारी जो भी आस्थाएँ थीं, मान्यताएं थीं उनका क्या होगा? जिस अवतार को आधार बनाकर तुलसीदास जी ने रामभक्ति की पावन मंदाकिनी बहा दी कैसे उस मंदाकिनी के जल को कल्पना के बुलबुले मान लें।

कहते हैं- 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' ऐसी ही दशा वर्तमान में कुछ राजनीतिक चिन्तकों की भी है। जिस परियोजना की कपोल-कल्पना को लेकर वे आशा के भँवर में जा रहे हैं, वहाँ सिवाय निराशा के कुछ हाथ नहीं लगेगा। इस प्रसन्नता में वे भूल गये कि इसी रामसेतु ने भारत के दक्षिणी तट को सुनामी की लहरों से बचाया था। सुनामी की तबाही से विश्व परिदृश्य में जहाँ बड़ा उलटफेर हुआ था वहीं भारत को तनिक भी आँच न आई।

समाहार

जिस आस्था के दम पर आधा भारत अपना जीवन जीता है उसी आस्था को समाप्त करना सम्भव नहीं। जरूरत है युवा वर्ग को आगे आने की। अपने बुजुर्गों और आदर्शों के सान्निध्य में एक ऐसी आग की आवश्यकता है जो जन समूह में इस भावना का संचार कर सके-

'धर्म, आस्था पर हम जीते, इस पर ही मर जायेंगे।
रामसेतु की रक्षा में हम, संघर्षों से टकरायेंगे।।'

रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में द्वितीय स्थान

गुमराह होता भारतीय समाज?

- शशांक तिवारी
(द्वादश 'ख')

भारतीय संस्कृति सदैव ही पारम्परिक बन्धनों व रीति-रिवाजों को मानने की पक्षपाती रही है तथा इसके साथ ही साथ क्षमा, दया, त्याग, प्रेम, करुणा आदि मानवीय गुण रत्न इसके महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। परन्तु आज के इस आधुनिक परिदृश्य में ये भावनाएं तथा भाव तिरोहित हो रहे हैं। इसका कारण है- समाज में बढ़ती धनलोलुपता और ईर्ष्या की भावना। आधुनिक भारतीय समाज पुरातन समाज की तुलना में अत्यधिक भौतिकतावादी तथा झूठे सांसारिक प्रलोभनों जो कदाचित् पश्चिम की देन हैं, के आकर्षण में लिप्त होकर अपने मार्ग से भटक गया है। आज सामाजिक रिश्तों में तो दूर अपितु रक्त सम्बन्धों में भी स्वार्थपरता का भाव इतना गूढ़ रूप से मिश्रित हो गया है कि उससे समाज को निकाल पाना असंभव सा हो गया है। आज भाई-भाई में द्वेष का कारण अर्थ है। पिता अपने पुत्र को इस लालच में पालता है कि वह बड़ा होकर उसके बुढ़ापे की लाठी बनेगा। आज पूरी सरकारी प्रक्रिया भ्रष्टाचार में सनी हुई है तथा अपने कर्तव्य निर्वाह के लिए भी रुपयों की माँग की जाती है। इस प्रकार इस अर्थसंचय की अंधी दौड़ में भारतीय समाज अपने नैतिक मूल्यों से इतना पतित हो गया है कि शायद ही इसकी कल्पना पहले कभी की गयी हो।

समकालीन भारत में धार्मिक उन्माद भी लगातार सामाजिक अलगाववाद के विष का रोपण कर रहा है। आज देश के एक भाग में फैली धार्मिक अस्थिरता चंद समय में ही पूरे देश में पहुँचकर आग उगलने लगती है। कल तक जो व्यक्ति समूह परस्पर प्रेम व सद्भाव के साथ रहता था वह आज एक दूसरे के लिए द्वेष व घृणा का खंजर लेकर खड़े हो जाते हैं।

आज धर्म का संकुचित अर्थ कागज के कुछ पन्नों से लगाया जाता है। इन पन्नों को जलाकर या इनकी अवमानना करके कोई भी देश में अस्थिरता व रक्तपात का वातावरण उत्पन्न कर सकता है। इस कारण अस्थिरता उत्पन्न करने का साधन बन गयी है।

आधुनिक भारतीय समाज में कर्मकाण्ड व आडम्बर धर्म पालन या धर्म पोषण करने के साधन बन गये हैं, परन्तु इन कार्यों को भी लोग बोझिल मन या सामाजिक प्रतिष्ठा का झूठा प्रदर्शन करने के लिए करने लगे हैं। उनके लिए जागरण या धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन करना 'स्टेटस सिंबल' बन गया है। इस प्रकार आधुनिक समाज पूर्णरूपेण धर्मान्ध होकर झूठी प्रतिष्ठा व आदर्शों का ढोल पीट रहा है।

समकालीन भारत में नवयुवकों के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन व सुधारवाद देखने को मिला है। परन्तु इस सुधारवादी परिवर्तन का उद्देश्य इस भौतिक संसार में खो जाना तथा नश्वर भौतिक संसाधनों के उपभोग में ही अपने बहुमूल्य मानव जीवन को नष्ट कर देना है। भौतिकता व विकास की इस अंधी दौड़ में समाज की रूढ़िवादी विचारधारा में तो परिवर्तन आया है परन्तु इस दौड़ में लोग मानवीय मूल्यों व आदर्शों को भुलाने लगे हैं। लोगों के लिए त्याग, करुणा, प्रेम, आदर्श आदि की बातें एक प्रभावपूर्ण 'फिल्मी डॉयलॉग' बन गये हैं। भारतीय उच्चादर्शों की स्थापना करने वाला 'सनातनधर्म'

आज भाषण व लेख में शोभा बढ़ाने वाले शब्दों के रूप में प्रयुक्त होने लगा है। ज्यादातर लोग इस शब्द के अर्थ को तो दूर यह तक बताने में सक्षम नहीं हैं कि वह इसको सुन चुके हैं अथवा नहीं।

आज के नवयुवक अपने इस नश्वर शरीर को सँवारने लगे हैं। देश को सँवारने का जज्बा रखने वाले नवयुवक 'सागर में तिनके के समान हैं' जो ढूँढने से ही मिलते हैं। झूठे विकासवादी आदर्शों का पोषण करने की आड़ में नवयुवक अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंक रहे हैं तथा पश्चिम की आकर्षणयुक्त दुनिया को पाने के लिए पगलाए घूम रहे हैं। इस प्रकार के अत्यधिक भौतिकतावादी समाज में अध्यात्मवाद एक कोने में रहकर अपना पालन-पोषण करने के लिए मजबूर है।

इस प्रकार सम्पूर्ण भारतीय जीवनधारा भौतिकतावादी कठोर शिलाओं के सामने पड़न से पूर्णतः अपने मार्ग से विचलित हो चुकी है तथा अपने मार्ग पर वापस आने के लिए कोई पथ-प्रदर्शक या युगद्रष्टा की तलाश कर रही है। वैश्वीकरण के इस युग में यदि कोई व्यक्ति भटकी हुई भारतीय मनीषा का मार्ग प्रशस्त करता है तो यह भारतीय समाज का सौभाग्य होगा।

अन्त में भारत के मंगलकारी भविष्य की कामना करते हुए अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

❖

कविता लेखन प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रथम स्थान

संतोष

- प्रखर अवस्थी
(अष्टम 'क')

हम दुनिया जिसको कहते हैं,
जादू का एक खिलौना है।
जो मिल जाये वह मिट्टी है,
जो नहीं मिले वो सोना है।।

इस सोने के पीछे-पीछे,
प्रत्येक आदमी जाता है।
निज इच्छा पूरी करने में,
वह अपने प्राण गँवाता है।।

दुनिया की सारी चीजों पर,
एकाधिकार चाहे अपना।
चाहे जिसका जो कुछ होवे,
अपनाने का देखे सपना।।

जीवन का ये ही आकर्षण,
मानव को बस में कर लेता।
फिर बन कर जोंक जिन्दगी को,
धीरे-धीरे वह हर लेता।।

इसलिए अगर बचना चाहो,
तो इस माया से दूर रहो।
बस उठने में संतोष करो,
जो कुछ भी पास तुम्हारे हो।।

❖

यह कथा नहीं यथार्थ है

'अनहोनी'

- यश अवस्थी
(नवम 'ख')

दोपहर का समय था। एक छात्र टहलते हुए जा रहा था। सहसा एक पुकार आती है, 'अरे तुम यहाँ हो, तुम्हें घर नहीं जाना है क्या?' छात्र उत्तर देता है 'मैं पानी पी रहा था, आचार्य जी!' आचार्य जी बोले- 'अच्छा तुम घर जाओ, अरे इधर नहीं उधर जाओ। अपने घर जाकर आराम करो .... और हाँ शाम को सवा पाँच बजे आना है ना!' एकाएक स्मरण करते हुए' और हाँ सन्ध्या को मैं प्राचार्य जी से बात कर तुम्हारे यहाँ रुकने का प्रबन्ध करा दूँगा, ठीक है।' छात्र जाने लगता है।

घर जाते-जाते बेचैनी बढ़ती जा रही थी, मगर आँखों में एक आशा थी। मन बार-बार सोचता था - 'क्या होगा, पर एक पल बाद फिर सकारात्मक सोच उत्पन्न होती थी - 'जो होगा अच्छा होगा, ईश्वर है ना। और जो कुछ होता है, अच्छा होता है। ईश्वर की दया से होता है।'

एक-एक पल भारी लग रहा था। प्रयास यह था कि जल्द से जल्द घर पहुँच कर खबर ली जाय। घर पहुँचने के बाद ही आवाज आयी - 'आ गया मेरा बेटा!' उत्तर मिला - 'हाँ दादी!' दादी बोली- 'जाओ खाना खा लो।'

खाना खाने के बाद मन में प्रश्न उठा और वह प्रश्न सहसा वाणी से निकल गया - 'दादी! क्या वो लोग अस्पताल पहुँच गये।'

कुछ देर मौन रहने के बाद दादी बोली- 'बेटा, अभी वो लोग रास्ते में हैं, थोड़ी देर बाद पहुँच जायेंगे। ठीक है, अब तुम सो जाओ।

सोते-सोते यह सोच रहा था 'ठीक हो जायेगा सब कुछ, बस वो अस्पताल पहुँच जाये और पहुँच गये तो सही इलाज भी हो जायेगा।

सोने के कुछ समय पश्चात् एक आवाज उसके कानों में पड़ी। पर ये आवाज कैसी? दिल में हलचल सी होने लगी, फिर दिमाग में कुछ सूझ नहीं रहा था। अचानक मैं बिस्तर से उठा, एक झटके में उठा एवं चारो ओर दृष्टि डाली। ये क्या हो गया?

चारो ओर चीत्कार ही चीत्कार और आर्तनाद! एक पल में सब कुछ टूट गया। क्या हो गया? कैसे हो गया? कुछ पता न चला। कुछ समय पहले मन में जिज्ञासा थी, लेकिन अब ... ।

अब आँसुओं की धारा बहती जा रही थी, मन में दुःखों का सैलाब इतना था कि ये सैलाब कभी जायेगा ही नहीं।

'नहीं! ... ये नहीं हो सकता, वह ऐसा नहीं कर सकता, वह मेरे पिता को मुझसे नहीं छीन सकता।' छात्र दुःखी होकर बोल रहा था।'

'ऐसा ही हुआ है, बेटा! तुम्हारा पिता इस संसार को छोड़कर जा चुका है।' परिजनों ने दुःखपूर्वक उसे बताया।

एक पल में सब कुछ टूट चुका था। ऐसा लग रहा था, सब कुछ खत्म हो गया।

विधाता के इस कठोर दण्ड को किसी को आशा नहीं थी। जिसने दिन-रात ईश्वर के चरणों में अपना जीवन समर्पित कर दिया, जो उस स्रष्टा ईश्वर की ज्योति जलाकर अपना जीवन व्यतीत कर रहा था, वही दीपक बुझ चुका था।

वृद्धावस्था में अपने माता-पिता असहाय बनाकर उनहें यह दुःख भोगने के लिए छोड़ गया। युवावस्था में सिर्फ अपनी पत्नी को अश्रु बहाने के लिए छोड़ गया था। बाल्यावस्था में अपनी संतानों को बेसहारा छोड़ गया था। भगवान की यह लीला उस परिवार ने कभी नहीं देखी थी। जहाँ दिन का अर्द्ध भाग उस सर्वव्यापी ईश्वर के जप-कीर्तन तथा भजन में निकल जाता था, उसी परमात्मा ने आज ऐसा दण्ड दिया है। किस्मत के इस घनघोर अन्याय ने सबको झकझोर कर रख दिया।

ईश्वर पर अतीव विश्वास होने के बावजूद भी वह ऐसा कैसे कर सकता है? ईश्वर कृत यह अकल्पनीय घटना कैसे हुई? उस भक्त के प्राण कैसे गये जो अभी तक अपनी बीमारी से जिन्दगी और मौत के बीच लड़ रहा था।

माता-पिता का आर्द्र-स्वर में रुदन सिर्फ यही स्पष्ट कर रहा था कि किसी पक्षी के पंख काट लेने पर छटपटाता है, ठीक उसी प्रकार वे अपने पुत्र के वियोग में पछाड़ खा रहे थे क्योंकि उनके जीवन का श्रवणकुमार जा चुका था।

शव के आते ही उस घर में कोहराम मच गया, चीत्कार की ध्वनि अब मात्र आँसुओं में परिवर्तित हो गयी।

परिजनों ने रूंधे हुए स्वर से बताया कि उस अस्पताल में वह मशीन नहीं थी, जिससे उसकी जान बच सकती थी। सृष्टि का नियम कोई भी नहीं बदल सकता है कि जो आया है, वह एक दिन इस दुनिया से चला जायेगा।

और वह दिन क्रूर बनकर उस परिवार को दुःखों के सागर में डुबो गया। जिनका जीवन प्रकाश में था, वह अंधकार की काली छाया में छिप गया। इस भ्रष्ट समाज से एक ईमानदार व्यक्ति जो अपने व्यवसाय में किसी भी प्रकार की बेईमानी नहीं करता था, जो अपने परिवार से पहले समाज को महत्व देता था, वही इन्सान इस दुनिया से चला गया। यह अति विडम्बना है और इस 'अनहोनी' को कोई भुला नहीं सकता।

❖

आह्वान

- सुयश मधुर दीक्षित
(एकादश 'ख')

तमस का कद बढ़ गया है,
झूठ सच पर चढ़ गया है।
सत्य घायल क्यों हुआ है,
न्याय विस्मित क्यों हुआ है।।

चहुँदिश निराशा ही निराशा,
मन में नहीं है प्राप्याशा।
रवि वर्ण भी धूमिल हुआ है,
दिन में अंधेरा घोर हुआ है।।

है भेदने की बात क्या,
जब लक्ष्य ही दिखता नहीं है।
हरिण है सम्मुख पड़ा,
पर, सिंह ही उठता नहीं है।।

अज्ञान की विपदा बड़ी है,
अंध कूपों की लड़ी है।
आसक्ति बाधा बन खड़ी है,
चिन्तन मनन की यह घड़ी है।।

हो रात्रि में संघर्ष अब,
और दुंदुभी जयघोष हो।
अब द्वंद्व होना तय हुआ,
क्यों आन को तुमने छुआ।।

❖

राम दुहाई, विज्ञान क्यों बनायी?

- शीतांशु तिवारी
(द्वादश 'क')

हे प्रभो! तूने विज्ञान क्यों बनाया,
क्यों न्यूटन को तू धरती पर लाया।
क्यों भेजा तूने आइंस्टीन को,
क्यों पैदा किया बेंजामिन फ्रैंकलीन को।।

ये सब तो सिद्धान्त बनाकर हो गये फरार,
छोड़ गये हमारे लिए दुःख अपार।
अब तो सपनों में भी विज्ञान ही नजर आती है,
यहाँ तक कि जब कोई गाय चारा खाती,
तो खूँटे के परितः अभिकेन्द्र बल पर ही नजर जाती है।।

भगवान्! इसका भी नरक में जुगाड़ लगाओ,
किसी भी तरह इसे ऊपर पहुँचाओ।
हम बच्चों को इससे मुक्ति दिलाओ,
बदले में अपना कमीशन भी पाओ।।

भगवान का उत्तर -

बेटा! पहले स्वर्ग में था ये विज्ञान,
बेटा! पहले स्वर्ग की था ये जान।
यही पढ़ा हम असुरों को मारा करते थे,
इसी से हम अपना काम सारा करते थे।।

पर जब से ये बच्चों के कोर्स में आया है,
कोई बच्चा इसे पूरा न समझ पाया है।।

(तत्पश्चात् भगवान ने एक बार की घटना बतायी।)

बच्चों ने एक पार्टी बनायी,
पार्टी हमारे पास शिकायत लाई।
हमने कठोर कदम उठाया,

विज्ञान को तुरन्त नरक में भिजवाया।।

नरक से इक चिट्ठी आई,
यमराज ने विज्ञान को यमलोक से न हटाने पर,
अपने आत्मदाह की धमकी भिजवाई।।

ये सुन कर हम डर गये,
और विज्ञान को मृत्युलोक में धर गये।।

इसलिए सॉरी मैं इसे न हटा पाऊँगा,
हटा कर और कहाँ भिजवाऊँगा।

जैसे आज तक झेला है, वैसे ही और झेलो,
विज्ञान को समझो इस खेल को खेलो।
माना तुम हमेशा हारते हो,
पर फिक्सिंग के लिए ट्राई क्यों नहीं मारते हो?
ट्राई अगेन या ट्राई अगेन।

❖

कविता लेखन प्रतियोगिता में बाल वर्ग में तृतीय स्थान -

सत्य की खोज

- शोभित मिश्र (सप्तम 'ख')

सत्य खो गया है। झूठ ही मिलता है। सत्य ढूँढने पर भी न मिलेगा, मुझे तो ऐसा ही लगता है। इस पर मैंने अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये -

लगता है खो सा गया है,
सत्य इस व्यस्त शहर में,
अक्सर मुलाकात हो जाती है झूठ से।
झूठ को देखा है खुशियों में,
पर सत्य के आगे लगे हैं
अँधेरों के सींखचे।

झूठ को शय दी है जिसने,
हासिल है उसे अदब का मुकाम।
सत्य को पाला है जिसने,
हुआ है वो हमेशा बदनाम।।

'लगता है कुछ सालों में
सत्य ढूँढने पर भी न मिलेगा।
हर झूठ एक सत्य को
मार कर ही जियेगा।।'

❖

देश की हालत

- विश्वेश शुक्ल
(द्वादश 'क')

नैतिकता से हीन, आबादी का भार,
झेल रहा देश, जनसंख्या की मार।
ह्रास हो रहा राष्ट्र प्रेम का, खुल गया रास्ता राष्ट्र पतन का,
जागो-जागो देशवासियों, क्या हाल हो रहा है अपने वतन का।।

बढ़ते बेईमान जा रहे, खतरा ईमान को,
होते सब हैवान जा रहे, खतरा इन्सान को।
राष्ट्र धुरे अब छुरे हो गये, काटें जेब बाजार में,
जबरन ट्यूशन खोरी करते, फेल को पास करें हजार में।।

बना कसाई आज डॉक्टर चूस रहा बीमार को,
चक बंदी आदमखोर हो गयी, खाए जा रही किसान को।
क्या होता कोर्ट कचहरी में, है छिपा नहीं इन्सान से,
है रिश्वतखोरी के अड्डे, दुआ करो भगवान से।।

भरी अदालत बेंच रहे हैं गीता और कुरान को,
खा झूठी कसम बयान दे रहे हैं, देखो गिरते इन्सान को।
शमसानों की चीखें उठती, गाँव और खलिहान में,
प्रेम विलुप्त हुआ है ऐसा, इस खूनी इन्सान में।।

भ्रष्ट यहाँ का शासन है, और भ्रष्ट यहाँ के अधिकारी,
डूब रही जनता इसमें, ये हैं उसकी लाचारी।
राष्ट्र प्रेम की जागे भावना, यह उद्देश्य हमारा हो,
निष्ठा ईमान बढ़े जन-जन में, हर कवि का यही इशारा हो।।

कवि की कविता इतनी पैनी हो, जगा सेक जो जन-जन को,
कवि की कविता इतनी पैनी हो, डरा सके जो दुश्मन को।
युगों-युगों से नई क्रान्ति का, कवि ही रहा जनक है,
बम से भी विध्वंसक हो सकती है कविता, किसको नहीं भनक है।।

शान्ति पुजारी होता है कवि, क्रान्ति दूत भी होता है।
वही जगाता राष्ट्र भावना, सारा राष्ट्र जब सोता है।।

कोई और आयेगा

- संकल्प त्रिवेदी
(द्वादश 'क')

कुछ दिन पहले की है बात
मैं था अपने मित्र के साथ,
हम दोनों गप्पे उड़ा रहे थे
रात्रि के मौसम का आनन्द ले रहे थे।

कदम वहीं के वहीं ठिठके,
एक व्यक्ति था वहाँ
दर्द से कराहता हुआ
सड़क पर गिरा पड़ा
सहायता निमित्त पुकारता हुआ,

मैंने मदद के लिए कदम आगे बढ़ाया
तभी मेरे मित्र ने मुझे समझाया,
दुर्घटनाओं का तो शहर है यह
ईश्वर का ही कहर है यह,
यदि तुम उसकी मदद करोगे,
मुश्किल में खुद ही पड़ोगे!
उसकी सलाह को हित में पाया,
बवाल समझकर कदम आगे बढ़ाया

और सोचा कि
उसकी मदद के लिए,
कोई और आयेगा
जिससे वह व्यक्ति
मदद पायेगा।।
किसी और दिन,
मैं जा रहा था अपने घर की ओर
आगे सड़क से अपनी गाड़ी मोड़
तभी मैं फिसला,
जमीन पर घिसला,
रक्त भी बहने लगा,
सहायता के लिए कहने लगा,
तभी एक व्यक्ति सामने आया,

देखते ही उसे, मस्तिष्क ने झटका खाया,
यह वहीं पूर्व प्रसंग वाला व्यक्ति था,
जिसको सड़क पर घायल मैं छोड़ गया था,

उसके कष्ट से हटा ध्यान आनन्द की ओर
मुड़ गया था।
परन्तु माँगता उससे मदद कैसे,
छोड़ गया था मैं भी उसे वैसे,
वह चला गया था,

परन्तु मेरा मन कह रहा था,
कि तेरी मदद हेतु,
कोई और आयेगा।।

❖

दया की महत्ता

- वैभव वरीश सिंह
(सप्तम 'ख')

एक बार की बात है एक बड़े ही विख्यात संत किसी राजा की राजधानी में आये। उनके बड़े ही विख्यात होने के कारण वह राजा उनसे भेंट करने के लिए उनके पास गया। राजा ने उन संत से भगवत् प्राप्ति का उपाय पूछा, तब उन महात्मा ने कहा, 'भगवत्प्राप्ति के लिए सब प्राणियों के हित में सोचकर उनका भला करना चाहिए।

पुनः एक वर्ष बाद वह राजा फिर महात्मा के पास आया और बोला मैंने गरीबों व निर्धनों की तन-मन व धन लगाकर खूब सेवा की जिससे मेरा राजकोष रिक्त होता गया। महात्मा ने उत्तर दिया- 'तुमने अभी सच्चे निर्धन की सेवा ही नहीं की फिर वह राजा शान्त चित्त होकर वहाँ से चला गया और गरीबों की सेवा करने लगा।

फिर वह राजा दो वर्ष बाद आया और महात्मा से बोला कि मैंने गरीबों की बहुत सेवा की परन्तु ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई। महात्मा ने फिर वही उत्तर दिया। राजा फिर वहाँ से शान्त होकर चला गया।

राजा के ही राज्य में एक लकड़हारी रहती थी, जो अपने बच्चे का तथा अपना पालन-पोषण लकड़ी बेचकर ही करती थी। एक बार वह स्त्री तथा उसका बालक लकड़ी लेने गये। वहाँ पर उसके बालक ने एक अमीर बालक को चकरगिन्नी आदि खिलौने से खेलते हुए देखा जिससे उसका मन मोहित हो गया। उसने अपनी माँ से खिलौने खरीदने के लिए कहा। बेचारी निर्धन होने के कारण खिलौने कहाँ से लाती। तब उसका बालक रोने लगा। माँ ने उसे मनाने के लाखों प्रयत्न किये। पर वह रात तक रोता ही रहा।

जब रात में राजा सो रहा था, तब उस बालक के रोने की आवाज उनके कानों में सुनाई दी। तब उसने तुरन्त सैनिकों को आदेश दिया कि जो कोई भी रुदन कर रहा हो उसे मेरे पास शीघ्र से शीघ्र भेजो। जब वह सैनिक वहाँ गया तो उस बच्चें की माँ उस सैनिक को देखकर थर-थर काँपने लगी और बोली यह तो बच्चा है, नादान है, इसमें इसका कोई दोष नहीं है। तब सैनिक ने कहा राजा तुम्हें दयापूर्वक यहाँ बुला रहे हैं। तब वे सभी राजा के सामने प्रस्तुत हुए। राजा ने उनसे उनके रोने का कारण पूछा, तब बच्चे की माँ ने कहा कि इसको खिलौने चाहिए। इसलिए रो रहा है। तब राजा ने तुरन्त सैनिकों को आज्ञा दी कि इस बालक के लिए खिलौने लाओ। दुकान बंद थी लेकिन राजा की आज्ञा होने पर दुकान खोलनी पड़ी। तब वह सैनिक खिलौने लेकर आया व राजा ने उन्हें भरपूर भोजन कराया व संतुष्ट करके वापस भेज दिया। राजा रात में सो गया व दिन में उसे ईश्वर की प्राप्ति हुई।

राजा उन महात्मा के पास गया और कहा कि अब मैं समझ गया हूँ कि भगवत्प्राप्ति कैसे होती है? अब मुझे ईश्वर की अनुभूति होने लगी है। तब महात्मा ने कहा कि किसी ने सच ही कहा है कि सब प्राणियों का भला करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है।

शिक्षा - उपरोक्त कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि दूसरों की भलाई सदैव करनी चाहिए।

'कौन बड़ा है?'

- प्रभात सिंह
(सप्तम 'क')

एक दिन भाग्य और बुद्धि में बहस छिड़ गयी। बहस का विषय था कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है? भाग्य कहता है कि मैं श्रेष्ठ हूँ और बुद्धि कहती है कि मैं श्रेष्ठ हूँ। कोई भी हार मानने को तैयार नहीं था। तभी उन दोनों की नजर एक युवक पर पड़ी जो मस्त चाल से चलता हुआ अपनी भेड़ों को ले जा रहा था। बुद्धि ने उस युवक को देखकर भाग्य से कहा कि यदि तुम इस युवक को राजा बना दो तो मैं अपनी हार स्वीकार कर लूँगी।

भाग्य ने हँसते हुए कहा कि 'राजा को रंक और रंक को राजा बनाना ही मेरा काम है।' भाग्य ने उस युवक के पथ में हीरे-जवाहरात से जड़ी हुई जूतियाँ गिरा दीं। युवक जब आगे बढ़ा तो उसे वही जूतियाँ दिखाई दीं। उसे वह जूतियाँ अच्छी लगीं तथा उसने उन्हें पहन लीं। तभी उसी मार्ग में एक व्यापारी अपने सेवकों के साथ वहीं से गुजरा। उसे उस गरीब युवक के पैरों में इतनी कीमती जूतियाँ देखकर महान आश्चर्य हुआ। उसने अपने सेवकों को वहीं रुकने का आदेश दिया तथा स्वयं उस युवक के पास जाकर उससे बातचीत करने लगा और उसने बातचीत में ही यह जान लिया कि यह युवक इन जूतियों के मूल्य से अनजान है। अब वह युवक से जूतियों का मोल-तोल करने लगा तथा अन्त में युवक से वह जूतियाँ एक बोरी चने के बदले में उस व्यापारी ने खरीद ली।

जूतियाँ पाकर वह व्यापारी अत्यधिक प्रसन्न हुआ तथा वह जूतियों को लेकर सीधे राजा के पास गया तथा जूतियाँ राजा को भेंट की। इतनी महंगी जूतियों को देखकर राजा ने व्यापारी से पूछा कि यह जूतियाँ तुम्हें कहाँ से मिली हैं? व्यापारी ने राजा से झूठ बोलते हुए कहा कि 'महाराज! यह जूतियाँ मुझे एक राजकुमार ने दी थीं परन्तु यह कीमती जूतियाँ आपके योग्य समझकर मैंने इन्हें आपको भेंट कर दीं। यह सुनकर राजा ने सोचा कि जो राजकुमार इतनी महंगी जूतियँ पहनता होगा वह कितना धनी होगा? राजा ने अपने मन की बात व्यापारी को बताते हुए कहा कि मैं उस राजकुमार से अपनी पुत्री का विवाह करना चाहता हूँ।

व्यापारी ने सोचा कि एक झूठ बोला है, इसलिए सब कुछ निभाना ही पड़ेगा। तभी व्यापारी ने मन में एक विचार आया कि यदि उस युवक को राजवस्त्र पहना दिये जायें तो वह पूरा राजकुमार लगेगा।

अब व्यापारी अपने कुछ विश्वसनीय सेवकों को लेकर उस युवक के पास गया। व्यापारी को देखकर युवक ने कहा - क्या तुम मेरी जूतियाँ खरीदोगे। इस पर व्यापारी ने कहा मैं तुम्हारी जूतियाँ अवश्य खरीदूँगा पर तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। इस पर युवक ने कहा कि मैं कही भी नहीं जाऊँगा। यह सुनकर व्यापारी ने कहा कि यदि तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो हम तुम्हें मार डालेंगे। यह सुनकर युवक ने मन में सोचा कि इससे अच्छा तो व्यापारी के साथ ही जाना है।

इस प्रकार युवक व्यापारी के साथ चल पड़ा। इसके बाद व्यापारी के सेवकों ने उसे राजसी वस्त्र पहना दिये तथा उस युवक को लेकर राजा के पास गये। युवक को देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ

तथा अपनी पुत्री का विवाह उस युवक के साथ कर दिया। यह सब देखकर युवक अत्यन्त घबरा गया।

उस दिन जैसे ही रात हुई उस युवक ने खिड़की से कूदकर भाग जाने का निर्णय किया तथा जब वह रात को खिड़की के पास गया तो उसने सोचा कि खिड़की तो बहुत ऊँची है तथा इससे कूदकर मेरी मृत्यु निश्चित है, परन्तु वह खिड़की से कूदने ही वाला था कि तभी बुद्धि ने भाग्य से कहा कि तुम्हारा राजा मृत्यु के मुख में कूदने वाला है। यह देखकर भाग्य ने अपना सिर पीटते हुए कहा कि पता नहीं कैसे मूर्ख से पाला पड़ा है तथा भाग्य ने बुद्धि से कहा कि यदि तुम इसे राजा बना दो तो मैं अपनी हार मान लूँगा। यह सुनकर बुद्धि उसी क्षण उस युवक के मस्तिष्क में प्रवेश कर गयी तथा जब युवक ने खिड़की से नीचे झाँका तो उसने पुनः सोचा कि इस खिड़की से कूदकर मेरी मृत्यु निश्चित है। इससे अच्छा तो ये है कि मैं राजकुमारी का पति बनकर आनन्दपूर्वक महल में रहूँ। यह विचार आते ही युवक ने वहाँ से भागने का इरादा छोड़ दिया। बाद में सभी तरीके से योग्य पाकर राजा ने उसे राज्य का राजा बना दिया। इस प्रकार भेड़ चराने वाला एक युवक राजा बन गया।

हमें भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिए तथा बुद्धि का समुचित प्रयोग कर आगे बढ़ना चाहिए।'

❖

गाँधी का रामराज्य

- श्वेताङ्क भदौरिया (नवम 'ख')

आज हमारा समाज किस गर्त में गिरने जा रहा है। यह किसी को भी नहीं पता लेकिन एक विनाश की आशंका सी हो रही है। करुणानिधि के धर्मआघाती बयानों से तो यही लगता है कि युगों-युगों से हम जिस राम की पूजा करते चले आ रहे हैं, जिस रामराज्य की कल्पना मात्र से हमारा रोम-रोम खिल उठता है वह एक असत्य है, एक काल्पनिक कथा है। शायद करुणानिधि यह भूल गये कि जिस देव ने मानव को बनाया है उसके अस्तित्व को चुनौती देने से वे कितनी बड़ी समस्या अपने लिए खड़ी कर रहे हैं।

रामराज्य तथा राम की लङ्का विजय के प्रतीक चिह्न रामसेतु को जिस तरह नकारा गया है तथा उसे सिर्फ एक प्राकृतिक घटना बताया जा रहा है और उसके मानव निर्मित होने के सबूत माँगे जा रहे हैं क्या उसी प्रकार कोई अजमेर शरीफ की दरगाह में रखे पैगम्बर साहब के बाल का सबूत माँगने की हिमाकत कर सकता है? ईसा मसीह को शूली पर लटकाए जाने वाले जिस चिह्न को हर ईसाई गले में पहन कर घूमता है उसका सबूत माँगने की हिम्मत कोई कर सकता है? शायद नहीं। तो फिर क्यों यह सिर्फ हिन्दुओं के साथ हो रहा है। वह भी एक हिन्दू ने ही ऐसा कुकृत्य किया है।

आखिर क्यों हिन्दुस्तान में ही हिन्दुओं की कद्र नहीं होती?

क्या गाँधी जी ने जिस रामराज्य से मोहित होकर भारत में रामराज्य बनाने का स्वप्न देखा था वह कहीं रावण-राज्य के रूप में तो साकार नहीं हो रहा?

❖

जादुई पीपा

- हर्षित शुक्ल
(अष्टम 'क')

प्राचीन काल की बात है। तपती दोपहर के लगभग 2.50 बज रहे थे। एक किसान खेत जोत रहा था। अचानक उसका हल एक पत्थर की चीज से टकराया। उसने मिट्टी हटाकर देखा तो उसे एक मटके जैसा कुछ दिखा। उसने उसे निकाला, वह एक पीपा था। वह उसे अपने घर में ले आया। अगले दिन वह उसमें रोटी रखकर खेती करने आया। उसे भूख लगी तो उसने रोटी निकाली, तो देखा उसमें एक के बाद एक रोटी थीं। वह जादुई पीपा था। जिसमें यदि कोई चीज डाली जाती तो वह 81 गुना होकर बाहर निकलती थी, वह बहुत खुश हुआ।

किसान ने उसे घर में रख लिया परन्तु उसने इसका कभी गलत उपयोग नहीं किया। उसने उससे अनेक लोगों की सहायता अनेक प्रकार से की। किसान की हर कठिनाइयाँ दूर हो चुकी थीं। कुछ लोंगों ने सोचा कि इस गरीब किसान के पास इतना धन कैसे आया? वे उससे जलने लगे। उन्होंने इसकी खबर गाँव के प्रधान को दी। गाँव के प्रधान को जब यह बात पता चली तो उसने अपने नौकरों को इस बात का पता करने को कहा।

उसके नौकर जब किसान के घर पहुँचे तो उसे धमकी दी और कहा- 'जो कुछ यह तुम्हारे पास है उसे प्रधान को दे आओ।' किसान डर गया और अगले दिन वह उसे गाँव के प्रधान के हवाले कर आया। जहाँ एक प्रधान खुश था, वहीं दूसरी ओर किसान का रो-रोकर बुरा हाल था। उसने यह निश्चय किया कि 'वह राजा के पास ले जाकर पूरी सच्चाई बता देगा।'

अगले दिन वह राजा के पास गया और पूरी कहानी बता दी। राजा को पहले विश्वास नहीं हुआ फिर उसने अपने नौकरों से बात पता करने को कही। नौकर मंत्री को जादुई पीपे सहित राजा के दरबार में लाये। राजा ने उसमें सेव डाला तो वे अगली बार 81 गुना हो कर बाहर निकले। उसने मंत्री को पद से हटा दिया और पीपे को अपने पास रख लिया।

वह पीपे को पाकर बहुत खुश था। वह अपने खजाने को पीपे में डालता तो वह 81 गुना हो जाते। इस प्रकार उसका खजाना बहुत बढ़ गया।

एक दिन उसे डर लगा कि यदि यह पीपा चोरी हो गया तो! वह उसमें घुस गया और उसका रहस्य खोजने लगा। वह जब बाहर आया तो एक के बाद एक करके कुल 81 राजा निकले। सब राजा अपने को ही सही राजा समझ रहे थे। सबमें अपनी-अपनी सेनाएं बना लीं और आपस में भिड़ गये।

इस प्रकार पूरा देश जंग का मैदान बन गया। इस बात का सबसे ज्यादा दुःख तो किसान को था। उसने सोचा कि यदि मैं इसको वहीं गाड़ देता तो ठीक रहता और ऐसी नौबत न आती। उसी के कारण देश में गृह युद्ध छिड़ा है। कहानी यह सीख देती है कि लोभ का अन्त बुरा ही होता है।

आईना दो हजार सात

- प्रणव त्रिपाठी
(नवम 'ख')

आओ तुम्हें दिखाएँ आईना दो हजार सात।
कौन हुआ सफल और किसको मिली मात।।

मोदी, माया के लिए अच्छा रहा यह साल।
और मुलायम सिंह का हाल हुआ बेहाल।।

मुख्यमंत्री बन माया ने मुलायम को घूरा।
गुजरात में कांग्रेस की जीत का सपना हो गया अधूरा।।

उल्फा उग्रवादियों ने असम को निशाना बनाया।
कम्युनिस्टों ने परमाणु करार पर विरोध जताया।।

करुणानिधि ने राम के अस्तित्व पर प्रश्न उठाया।
मोदी ने चुनाव जीतकर हिन्दुओं का सम्मान बढ़ाया।।

वादी के हालातों में थोड़ा हुआ सुधार।
बंगाल में नंदीग्राम मुद्दे पर लिए वचन-कुठार।।

आडवाणी ने प्रधानमंत्री बनने का किया ऐलान।
उत्तराखंड में खंडूरी, हिमाचल में धूमल की बढ़ती शान।।

आओ तुम्हें दिखाएँ आईना दो हजार सात।
कौन हुआ सफल और किसको मिली मात।।

इस वर्ष पड़ोसी राष्ट्र थे अंतर्कलह से बेहाल।
नेपाल में छाया था राजनीतिक अस्थिरता का हाल।।

इस साल नवाज व भुट्टो का पूरा हुआ प्रवास।
किन्तु राष्ट्रपति मुशर्रफ को आया नहीं यह रास।।

पाकिस्तान के नागरिक लगाए थे लोकतंत्र की आस।
प्रधानमंत्री बनने के लिए बेनजीर भुट्टो ने किया प्रयास।।

बलिबेदी पर चढ़ गयीं दिये प्राण भी वार।
किन्तु जीत उनकी ही हुई, बन गयी सरकार।।

आओ तुम्हें दिखाएँ आईना दो हजार सात।
कौन सफल और किसको मिली मात।।

सत्ता के दीवाने

- रवि शङ्कर दीक्षित
(नवम 'ख')

दिन पर दिन घटते जाते हैं, स्वतंत्रता के दीवाने।
दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं, अब सत्ता के दीवाने।।
स्वतंत्रता में स्वस्ति मंत्र के मूल मंत्र का पता नहीं।
अब अपराध जगत के नायक, लगे हुकूमत हथियाने।।
दिन पर दिन ...

मानव-धर्म-ध्वजा फहराने, धरती पर शासन आया।
इसी ध्येय की पूर्ति हेतु यह अनुशासन अंकुश लाया।।
आज अराजकता निकली है, अनुशासन को दफनाने।।
दिन पर दिन ...

जाति-पाँति, मत-पंथ आदि के भेद बीज बोने वाले।
सम्प्रदाय, मज़हब के मद में दिल-दिमाग खोने वाले।।
ले जायेंगे कहाँ देश को, ये नफरत के मयखाने।।
दिन पर दिन ...

सत्यमेव जयते का नारा अब हास्यास्पद लगता है।
बंधु-भाव, सद्भाव, प्रेम-रस, सहमा-सहमा दिखता है।।
निकला दंभ-द्वेष का दानव, घर-घर संकट पहुँचाने।।
दिन पर दिन ...

हम तो एक अखण्ड, एक की ओर निरन्तर बढ़े चले।
इसी एकता, अखण्डता के गीत, गर्व से गढ़े चले।।
इसी एकता पर खतरे की घटा लगी है मँड़राने।।
दिन पर दिन ...

हे अनर्थ के घोर पुजारी, कर्ज बेंच बिकने वाले।
कुछ दिन और अनर्थ कमा ले, हम तो अब चलने वाले।।
आयेंगे फिर नया रक्त ले, स्वतंत्रता के दीवाने।।
दिन पर दिन ...

आते ही पहले से उद्यत, हम रण-बिगुल बजा देंगे।
मानवता की मर्यादा हित, प्राण-प्रसून सजा लेंगे।।
निकल पड़ेंगे स्वतंत्रता की सत्ता घर-घर पहुँचाने।।
दिन पर दिन ...

चम्पा काले-काले अक्षर नहीं चीन्हती

- संकल्प
(द्वादश 'क')

चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी-खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है
इन काले चिन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं
चम्पा सुन्दर लड़की है
सुन्दर ग्वाला है : गायें - भैंसें रखता है।

चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चंचल है
नटखट भी है
कभी कभी ऊधम करती है
कभी कभी वह कलम चुरा लेती है
जैसे तैसे उसे ढूँढ कर जब लाता हूँ।

पाता हूँ - अब कागज गायब
परेशान हो जाता हूँ
चम्पा कहती है
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हंस देता हूँ।

फिर चम्पा चुप हो जाती है
उस दिन चम्पा आई, मैंने कहा कि
चम्पा तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है -
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चम्पा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे, गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी।

मैंने कहा कि चम्पा पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी
कुछ दिन बालम संग साथ रह
चला जायेगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे संदेशा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है!

चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा
हाय राम, तुम पढ़-लिखकर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूँगी।

कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

'धरती' से

अवतार

- प्रणव त्रिपाठी
(नवम 'ख')

जब-जब होते हैं धरती पर अधर्म व अत्याचार।
तब-तब लेते हो ईश्वर तुम धरती पर अवतार।।

त्रेता में राम व द्वापर में कृष्ण का लेकर अवतार,
तुमने किया रावण और कंस का संहार,
कलियुग में बुद्ध बनकर किया ज्ञान का प्रसार,
जब-जब होते हैं धरती पर अधर्म व अत्याचार,
तब-तब लेते हो ईश्वर तुम धरती पर अवतार।।

आज झूठ और फरेब रहा है सच्चाई को ललकार,
जिसमें जीत असत्य ने पायी, सत्य ने पायी हार,
गंगा-यमुना हो गयी कलुषित, छाया जनजीवन पर अंधकार,
जब-जब होते हैं धरती है अधर्म व अत्याचार,
तब-तब लेते हो ईश्वर तुम धरती पर अवतार।।

आज समाज में छायी है गरीबी व भ्रष्टाचार,
विज्ञान के युग में हो रहे हैं अनगिनत आविष्कार,
किन्तु मनुष्य भूल गया है नैतिक मूल्य व संस्कार,
'जब-जब होते हैं धरती पर अधर्म व अत्याचार,
तब-तब लेते हो ईश्वर तुम धरती पर अवतार।।

भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की बोली बोल रहे हैं साहित्यकार,
मनुष्य, मनुष्य से कर रहा है पशुवत् व्यवहार,
हे ईश्वर! हे दयानिधान! हे जगत के पालनहार!
सुन लो त्रस्त मानवों की करुण पुकार,
जब-जब होते हैं धरती पर अधर्म व अत्याचार।
तब-तब लेते हो ईश्वर तुम धरती पर अवतार।।

आमंत्रण पत्र

- रविकान्त वर्मा
(अष्टम 'ख')

माननीय श्री विशेषण जी,

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि हमारा बेटा सर्वनाम आपकी बेटी संज्ञा से विवाह करने के लिए तैयार हो गया है। ज्योतिषी श्री अलंकार जी ने बताया है कि दोनों की जन्मपत्रियाँ समान हैं। इस अवसर पर समास तथा कारक मुख्य अतिथि के रूप में होंगे। मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ नव वर-वधू को आशीर्वाद देंगे। संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों को मेरा प्यार, उपसर्ग और प्रत्यय के लिए आशीर्वाद और क्रिया जी को सादर नमस्कार।

❖

मेरा विद्यालय है महान्

- अंकित बाबू
(अष्टम 'ख')

मेरा विद्यालय है महान,
विस्तृत, उन्नत, शोभायमान।
कितनी पावन वसुधा इसकी,
कितना उज्ज्वल आदर्शवान।।

यह विद्या का शुचि मन्दिर,
यह शिक्षा का अजस्र स्रोत।
कितना सुन्दर है महीयान,
मेरा विद्यालय है अति महान।।

कितने विषयों पर देते हैं,
सब गुरुजन उपदेश यहाँ।
जिसकी छाया में शिष्य वर्ग,
पाते जीवन का सोम यहाँ।।

सब में भरता आलोक रहे,
इसकी महिमा का प्रिय विहान।
कितना उन्नत अरु दीप्तिमान,
मेरा विद्यालय है महान।।

❖

महँगाई का ताण्डव

- रविकान्त वर्मा
(अष्टम 'ख')

हे मित्र! तुम्हें आमंत्रण है।
लड़के के मुण्डन में आना,
पर कृपया भैया बहनों का
काफिला साथ में ना लाना,
कुछ बात आपसे छिपा नहीं,
कितनी भीषण महँगाई है।

पण्डित जी को रिश्वत देकर,
तिथि एकादशी करायी है।
मंगल भी दिन पड़ता है,
कीर्तन का आयोजन होगा।
चाहो तो व्रत रह लो प्रियवर!
भोजन की जगह भजन होगा।

लिखते-लिखते याद हुआ
भिजवा देना कोई चौकी।
अच्छा होगा यदि ले आओ,
छप्पर के ऊपर की लौकी,
अब लाज तुम्हारे हाथों में।

आज बढ़ती हुई मँहगाई में एक आम आदमी की यथार्थ मनःस्थिति का चित्रण इस कविता में हुआ है। बात कुछ व्यंग्यात्मक लहजे में कही गयी है। - संपादक

यात्रा - विवरण

'मेरी गंगासागर यात्रा'

- प्रतीक मालवीय
(सप्तम 'क')

सारे धाम बार-बार, गंगा सागर एक बार। यह कहावत मैं अपने दादा-दादी से हमेशा सुना करता था। मुझे गंगासागर जाने के लिए बहुत उत्सुकता थी। एक बार मेरे पिताजी ने बताया कि हम लोग गंगासागर चलेंगे। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

योजना के अनुसार मैं, मेरे पिताजी, मेरी माताजी, मेरी छोटी बहन कानपुर रेलवे स्टेशन से कालका मेल द्वारा कलकत्ता (कोलकाता) पहुँचे। रास्ते में इलाहाबाद, मुगलसराय, गया, गोमो, धनबाद, आसनसोल, वर्द्धमान आदि शहरों से होते हुए हम हावड़ा पहुँचे। हावड़ा स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। वहाँ पर हम लोग नित्य कर्मों से निपट कर टैक्सी द्वारा धर्मतल्ला बस स्टैण्ड से गंगासागर जाने के लिए बस में सीट आरक्षित करायी। उस बस ने हमें हार्डवुड प्वाइंट तक पहुँचाया। वहाँ से ट्राली जैसे रिक्शे में बैठकर पश्चिम बंगाल के गावों का अवलोकन किया। वहाँ पर चारो ओर मखमल सी हरियाली थी। चारो ओर नारियल, ताड़ के बहुत सारे पेड़ थे। वहाँ के लोग रहने के लिए बाँस की खपच्ची द्वारा घर बनाते हैं। हर घर के सामने मछली पालन के लिए तालाब बने थे। वह रिक्शा वाला बंगला मिश्रित हिन्दी बोल रहा था। हम लोगों ने काकद्वीप से गंगासागर जाने के लिए स्टीमर का टिकट खरीदा। हम लोग उसके इंतजार में खड़े थे, तभी एक विशालकाय स्टीमर आकर खड़ा हो गया। हम लोग स्टीमर में बैठे। स्टीमर में बैठे लोग बंगाली लोकगीत गा रहे थे।

लगभग 40 मिनट बाद हम लोग गंगासागर द्वीप पहुँचे। वहाँ पर बस द्वारा 30 किमी. चलने पर हम लोग भारतीय सेवाश्रम पहुँचे। वह स्वामी प्रणवानन्द की देखरेख में चलाया जाता है। वहाँ पर भक्तों के रुकने की व्यवस्था है। हम लोग ट्राली के रिक्शे द्वारा वहाँ पहुँचे, जहाँ गंगा जी समुद्र में मिलती हैं। वहाँ पर हम लोगों ने नहाया। नहाकर पिताजी को एक पण्डे ने पूजा करायी। वहाँ पर हम लोगों ने सूर्यास्त देखा। मानों दिन भर का थका हुआ सूर्य समुद्र के जल में घुसकर आराम करने जा रहा हो। उस समुद्र में गंगाजल मिश्रित था। सामान्यतः समुद्र नीले रंग का होता है लेकिन गंगाजल मिश्रित होने के कारण वह सफेद रंग का था। वहाँ पर बहुत से भिखारी मेरे पिताजी से पैसा माँग रहे थे।

वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर कपिल मुनि का आश्रम है। वहाँ पर राजा सगर के 60,000 पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर दिया था क्योंकि उनके पुत्र उनकी तपस्या में विघ्न डाल रहे थे। वह मन्दिर चार बार समुद्र डुबा ले गया है। वहाँ की देखरेख अयोध्या के संत करते हैं। उन्होंने बताया कि जब से हनुमान जी की मूर्ति यहाँ लगी है, तब से समुद्र ने नहीं डुबोया है। फिर हम लोग पुनः भारत सेवाश्रम गये। सुबह उठकर हम लोग कलकत्ता पहुँचे। वहाँ तीन दिन भ्रमण किया। फिर वहाँ से रेलगाड़ी द्वारा जगन्नाथपुरी चले गये। किसी ने सच ही कहा है कि सारे धाम बार-बार, गंगा सागर एक बार।

❖

यात्रा - विवरण

यात्रा का विराम

- अंकुर मिश्र
(द्वादश 'ख')

पिछले वर्ष लगातार कठिन परिश्रम, दृढ़ निश्चय और परीक्षा में एक सम्मानजनक स्थाने पाने की होड़ में अन्त सीमा तक थक जाने के कारण मेरा मन एक आरामदेह और स्वास्थ्यवर्द्धक जगह पर जाने का था। चूँकि मैं परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सम्माननीय स्थान प्राप्त कर चुका था, अतएव मेरी खुशी का ठिकाना न था और घर पर भी मानों एक असीम उल्लास छा गया था। रात्रि में घर के सदस्यों के साथ बैठने के साथ ही हम लोगों ने शिमला जाने का विचार बनाया।

अगले दिन सुबह होते ही मैं अपनी साइकिल लेकर निकट के कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन पर गया। वहाँ के एक प्राइवेट साइकिल स्टैण्ड पर मैंने अपनी साइकिल खड़ी की और स्टैण्ड के मालिक से दो रुपये मूल्य की टिकट ली। फिर मैंने आरक्षण कक्ष की खिड़की नं० चार सौ सत्तासी पर स्लीपर क्लास की तीन टिकटें बुक करवा लीं। अगले दिन सही समय पर हम लोग स्टेशन पर अपना-अपना सामान लेकर उपस्थित थे। रेलगाड़ी अपने निर्धारित समय से दो घण्टे देरी से थी। यथासम्भव उस रेलगाड़ी से हमें जिसका नाम कालका एक्सप्रेस था, कालका तक ही जाना था। हम लोगों के कम्पार्टमेन्ट में हम लोगों के सामने एक वृद्ध दम्पति और उनका एक जवान बेटा बैठा था जो उनकी देखभाल करने के लिए उनके साथ था।

कानपुर से कालका तक का सफर तो अपने कम्पार्टमेन्ट में ताश खेलकर और शतरंज खेलकर बिता दिया। अगले दिन सुबह हम लोग कालका पहुँच गये। वहाँ से हमें शिमला जाने वाली गाड़ी पकड़नी थी पिताजी ने उस गाड़ी की तीन टिकटें फिर से बुक करवा ली थीं। शिमला जाने का रास्ता घुमावदार पहाड़ी पर था।। बड़े-बड़े चीड़ के पेड़ और गहरी-गहरी खाई के इर्द-गिर्द घूमते हुए हम लोग शिमला पहुँच गये। वहाँ पर हम लोगों ने शिमला स्टेशन से लक्कड़ बाजार जाने के लिए ढाई सौ रुपये की टैक्सी किराये पर ली। ऊँची पहाड़ी को पार करके एक गहरी खाई रूपी लक्कड़ बाजार पहुँच गये। वहाँ पर साढ़े सात सौ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से तीन दिन के बाइस सौ पचास रुपये जमा करके हम लोगों ने एक होटल व्हाइट में एक कमरा बुक करवा लिया।

चूँकि हम लोग एक लम्बी यात्रा के कारण थक चुके थे और हमें विश्राम की आवश्यकता थी, हम लोगों ने दिनभर कमरे में आराम किया और रात्रि को भोजन के बहाने हम लोग लक्कड़ बाजार घूमते हुए एक होटल में खाना खाने के लिए गये। नाम से ही पता लग रहा था कि वहाँ पर लकड़ी का सामान बिकता होगा। हम लोगों ने लक्कड़ बाजार से एक ट्रे, एक लकड़ी की झालर और एक लकड़ी की दीवाल घड़ी खरीदी। घूम कर हम लोगों ने सुबह नाश्ते के लिए कुछ फल खरीद लिये थे। फलों के नाम पर हम लोगों ने सोलह रुपये के बारह केले और वहाँ का एक स्थानीय फल पालम खरीदा। पालम एक लाल रंग का रसीला खट्टा फल होता है। अपने होटल के कमरे में रात्रि भर विश्राम करते हुए अगले दिन की घूमने की योजना बनायी। अगले दिन सुबह हम लोगों ने तैयार होकर रूम सर्विस

बुलायी। एक पहाड़ी आदमी ने आकर हम लोगों के कमरे की घंटी दबायी और मैंने दरवाजा खोला। वह पहाड़ी आदमी बड़ा ही गुस्से वाला था। वह बोला- 'हाँ क्या चाहिए आपको?' यह सुनकर मुझे बड़ा ही अजीब लगा फिर भी मैंने उसे तीन कप चाय और एक पिजा लाने के लिए कहा। मात्र बीस मिनट में ही वह यह सब ले आया। हम लोग नाश्ता करने के बाद माल रोड घूमने के लिए चले गये। शिमला में अत्यधिक सर्दी थी फिर भी वहाँ पर सर्दी में आइसक्रीम खाने का रिवाज बड़ा ही अजीब था। हम लोगों ने भी खूब आइसक्रीम खाई और फिर जाखू जी के मंदिर के लिए रवाना हो गये। जाखू जी का मंदिर हनुमान जी का मन्दिर था। वह एक अत्यन्त ऊँची पहाड़ी पर स्थित था। ऊपर चढ़ते-चढ़ते हम लोग काफी थक चुके थे और ऊपर बन्दर भी बहुत थे। एक बन्दर मेरी माता जी का पर्स छीनकर भागने लगा और उसे बचाने के चक्कर में उनका पैर फिसल गया जिससे उनके पैर में गम्भीर चोट आयी जिस कारण हम लोगों का यात्रा करने का आनन्द नष्ट हो गया और हम लोगों को तत्काल ही वापस आना पड़ा। मेरी शेष छुट्टियाँ अपनी माता जी की देखभाल करने में ही बीती।

वह बन्दर ही मेरी खुशियाँ लेकर चला गया था।

❖

'भ्रष्टाचार के रूप में शकुनि मामा'

- आशीष प्रताप सिंह
(नवम 'ख')

हम मामा के बढ़ते कदमों को नहीं रोक रहे हैं,
इसीलिए तो गाँधी जी व सुभाषवाद फेल हो रहे हैं।
और तो और कौरव व पांडव भी नर्वस नाइंटीज का शिकार हो रहे हैं।

द्वापर में तो कौरव और पांडवों को ही अपनी चपेट में लिया था,
लेकिन आज तो पूरे देश को ही अपनी चपेट में ले रहे हैं।

शकुनि मामा एक तरफ तो रिश्तों को तार-तार कर ही रहा है,
लेकिन साथ ही साथ देश को पंगु बना रहा है।।

अगर मामा के बढ़ते कदमों को न रोका जायेगा,
तो प्रतिभा पाटिल की जगह मामा कुर्सी पर बैठा बेखौफ नजर आयेगा।

आज तो बेचारे गरीब ही भूँखे व बदरंग नजर आते हैं,
लेकिन कल को बड़े-बड़े लोग भी भूखे व बदरंग नजर आयेंगे।

❖

व्यंग्य

शादी पक्की कर दीजिए

- तनुज त्रिपाठी
(नवम 'ख')

लड़की देखकर लड़के के पिता ने कहा -
हे मेरी पुत्र वधू के इकलौते बाप,
लड़की हमें पसन्द है, यकीन कीजिए,
अब लेन-देन के बारे में,
विस्तार से विचार-विमर्श कर लीजिए।
पहला प्रस्ताव था लड़के के बाप का,
कार हमारी पेट्रोल आपका
दूसरा तिलक में एक कुंतल शुद्ध घी चाहिए,
बरातियों के आते ही दूध पिलवाना है,
भेंट में नोट नहीं सोने का सिक्का दिलवाना है,
फेरों पर सौ लीटर पेट्रोल होना चाहिए,
आपको हमारी ये शर्तें मंजूर होना चाहिए,
लड़के के बाप की सुनकर ये शर्तें,
खुल गयी कन्या पक्ष की दिमाग की पर्तें,
गिड़ागिड़ाकर बोला कन्या का बाप,
शूटिंग के पहले ही फिल्म कर दी फ्लाप,
आप एक रुपया कहें तो हजार दे सकता हूँ,
पेट्रोल नहीं दे सकता पर कार दे सकता हूँ,
आप मेरे हाल पर तरस खाइये,
एक कुंटल शुद्ध घी की कीमत ले जाइये,
दूध का इतना बड़ा खतरा नहीं ले सकता,
भैंसे दे सकता हूँ पर दूध नहीं दे सकता,
तेल के अभाव में मेरे इकलौते बेटे ने सिर मुंडवा लिया है,
इस व्यवस्था को क्या कहूँ?
जिसने बाप के जिन्दा रहते सिर पर उस्तरा चलवा दिया है,
मेरी मजबूरियाँ समझने का प्रयत्न कीजिए,
अगर लड़की पसन्द है;
तो शादी पक्की कर दीजिए।

धन

- तनुज त्रिपाठी (नवम 'ख')

धन से पुस्तक खरीदी जा सकती है ... ज्ञान नहीं।
धन से भोजन प्राप्त कर सकते हैं ... क्षुधा नहीं।
धन से आभूषण खरीद सकते हैं ... सौन्दर्य नहीं।
धन से औषधि खरीदी जा सकती है ... स्वास्थ्य नहीं।
धन से मन्दिर बनवाये जा सकते हैं ... धर्म नहीं।
धन से सम्मान प्राप्त कर सकते हैं ... श्रद्धा नहीं।
धन से प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं ... प्रेम नहीं।
धन से भौतिक सुख प्राप्त कर सकते हैं ... आध्यात्म नहीं।
धन से शस्त्र खरीदे जा सकते हैं ... सुरक्षा नहीं।
धन से अंगरक्षक तो रखे जा सकते हैं ... जीवन नहीं।
धन से व्यक्ति खरीदा जा सकता है ... योग्यता नहीं।
धन से कलम खरीदी जा सकती है ... सुन्दर लेख नहीं।
धन से समृद्धि हो सकती है ... संतोष नहीं।
धन से मनोरंजन के साधन प्राप्त हो सकते हैं .... खुशी नहीं।

❖

माँ-बाप को भूलो नहीं

- विशाल पाण्डेय
(अष्टम 'क')

भूलो सभी को मगर माँ-बाप को भूलो नहीं।
उपकार अनगिनत हैं, इस बात को भूलो नहीं।।

पत्थर कई पूजे तुम्हारे जन्म के खातिर।
पत्थर बनकर माँ-बाप की छाती कभी दलो नहीं।।

सुख का निवाला दे अरे जिसने तुम्हें बड़ा किया।
अमृत दिया तुमको जहर उनके लिए उगलो नहीं।।

कितने किए लाड़, अब अरमान भी पूरे किये।
पूरे करो अरमान उनके बात यह भूलो नही।।

सन्तान की सेवा मिले, सन्तान बन सेवा करो।
जैसी करनी वैसी भरनी कहानी को भूलो नहीं।।

❖

'शिवार्पण'

- वैभव कटियार
(अष्टम 'ख')

एक जुआरी था। एक दिन उसने जुएं में कुछ धन जीता। उस धन से उसने एक बड़ी सुंदर माला खरीदी, भगवान के नहीं अपनी किसी प्रियतमा वेश्या के लिए। माला हाथ में लिए वह कामान्ध अपनी प्रियतमा का चिन्तन करते हुए तीव्र वेग से चल रहा था कि किसी पत्थर से ठोकर लगी, गिर पड़ा और मूर्च्छित हो गया। कुछ देर में होश आया तो अनुभव हुआ कि मृत्यु सन्निकट खड़ी है। फिर सोचा कि मर तो जाऊँगा ही पर मेरी इस माला का क्या होगा? मेरी यह माला मेरी प्रेयसी के पास तो पहुँची नहीं। तभी उसे किसी महात्मा के ये शब्द याद हो आए कि कोई भी वस्तु 'शिवार्पण' करने से बहुत लाभ होता है। सोचा कि 'शिवार्पण' करने से कुछ होता होगा तो हो जायेगा अन्यथा मर तो जाऊँगा ही और मेरी माला भी बेकार ही जा रही है। सो उस जुआरी ने वह माला 'शिवार्पण' कर दी।

कुछ देर बाद वह जुआरी मर गया। यमराज के दूतों ने उसे पकड़कर यमराज के सम्मुख उपस्थित किया। उन्होंने चित्रगुप्त से उसके पाप-पुण्यों का हाल पूछा।

चित्रगुप्त बोले - 'यह तो अनेक जन्मों, अनेक युगों, अनेक कल्पों का महापापी है। पुण्य एक भी इसने कभी नहीं किया है।' यमराज ने कहा कि फिर देखो। अब चित्रगुप्त ने उसका बहीखाता पुनः ध्यान से देखा और बताया कि मृत्यु से ठीक पहले अभी-अभी इसने जुएं में जीते धन से एक वेश्या के लिए माला खरीदी थी। पर रास्ते में ठोकर खाकर गिर पड़ा जब देखा कि अब माला बेकार जा रही है तो 'शिवार्पण' कर दिया। महाराज! यह जुआरी माला भगवान के लिए नहीं लाया था पर अपनी मृत्यु को सामने खड़े देख और माला बेकार होते जान शिवार्पण कर दिया। बस यही इसका एकमात्र पुण्य है।

यमराज ने कहा कि इसका इतना ही सही पुण्य तो है फिर उन्होंने जुआरी से पूछा कि पहले तुम पुण्य का फल भोगोगे या पाप का?

जुआरी बोला - 'महाराज! सुन रहा हूँ कि पाप तो अनेक कल्पों के हैं यदि उन्हें भोगने लगा तो पता नहीं कब तक भोगना पड़े इसलिए पहले पुण्य का फल ही भोगूँ तो अच्छा है।'

यमराज ने उसकी इच्छानुसार 'शिवार्पण' का पुण्य फल प्रदान करते हुए उसे दो घड़ी के लिए इन्द्रलोक का मालिक बना दिया। जुआरी इन्द्रासन पर विराजमान हुआ, अप्सरायें नृत्य करने आयीं, गंधर्व गुण गाने लगे। नारद जी भी वहाँ थे, उन्हें हँसी आ गयी। जुआरी ने इन्द्र के दरबार में नारद जी से इस बेअदबी का कारण पूछा। नारद जी बोले कि हमें एक श्लोक याद आता है -

'संदिग्धे परलोकेऽपि कर्तव्यः पुण्य संचयः।
नास्ति चेन्नास्तिको हानिरस्ति चेन्नास्तिकोहतः।।

अर्थात् परलोक के होने न होने में संशय हो तो पुण्य का संचय करते चलें। अगर परलोक नहीं तो आस्तिक को कोई नुकसान नहीं है लेकिन अगर परलोक सत्य हुआ तो नास्तिक माना जायेगा।

अरे जुआरी! तू जीवन भर जुआ खेलता रहा। जुएँ में कोई पक्की आमदनी तो है नहीं, लग गया तो तीर नहीं तो तुक्का। तूने यही सोचा था कि शिवार्पण करने से कुछ होता होगा तो हो जायेगा न होगा तो मर तो रहे ही हैं, माला तो बेकार जा ही रही है, शिव को अर्पण कर दें। इस दृष्टि से तूने वह माला शिवार्पण की और उसका परिणाम यह हुआ कि तुम दो घड़ी के लिए इन्द्रलोक के स्वामी बन गये। इसी से मुझे हँसी आ गयी।

जुआरी यह सुन सिंहासन से उतरा। नारद जी को गुरू मानकर प्रणाम किया और इन्द्रासन पर तुलसी रख दी। इसके बाद उसने ब्राह्मणों को बुलाकर कामधेनु, चिन्तामणि, नन्दनवन, ऐरावत, अमृत कुण्ड सहित समग्र इन्द्रलोक का दान कर दिया।

इतने में दो घड़ी बीत गयी। इन्द्र ने आकर पूछा कि ऐरावत कहाँ है? उत्तर मिला - जुआरी दान कर गया। इन्द्र बोले - 'कामधेनु कहाँ है?' बताया गया कि जुआरी आपका पूरा इन्द्रलोक ही दान कर गया है।

गुस्से से लाल पीले होते इन्द्र यमराज के पास आये। सब किस्सा सुनाया। यमराज ने जुआरी को डाँटा।

जुआरी बोला - भैया हमें जो करना था, हमने कर लिया, अब आपको जो करना हो कर लीजिए।'

अब यमराज की आँखें खुली, उन्होंने कहा कि अब यह नरक नहीं जायेगा, अब तो यह इन्द्र ही होगा। जब इसने अनैतिक पैसे से अनैतिक उद्देश्य से खरीदी माला संशय होने पर भी शिवार्पण करके दो घड़ी के लिए इन्द्रपद पाया तो अब इसने विधिवत् इन्द्रलोक का ही दान कर दिया है। इसलिए यह इन्द्र ही होगा।

अपने इसी पुण्य प्रताप से यह जुआरी आगे चलकर महाराज बलि और महान दानवीर हुआ। गुरू शुक्राचार्य के मना करने के बावजूद भी उन्होंने वामन को दान दिया। वामन के वर के अनुसार बलि की दृष्टि जहाँ जाये उधर भगवान ही श्रीहरि के दर्शन करें। कहते हैं राजा बलि की बैठक के बावन दरवाजे हैं, न जाने कब किस दरवाजे पर बलि की दृष्टि चली जाये यही सोचकर बावनों दरवाजों पर शंक, चक्र, गदा व पद्मधारी सर्वान्तरात्मा भगवान श्रीहरि सदा पहरा देते हैं।

❖

बैरिस्टर साहब के जीवन-चरित पर आधारित निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

1.	प्रथम स्थान	चि. अभिषेक शुक्ल	11 क
2.	द्वितीय स्थान	चि. सुयश मधुर दीक्षित	11 ख
3.	तृतीय स्थान	चि. यश अवस्थी	9 ख
4.	तृतीय स्थान	चि. प्रखर अवस्थी	8 क

स्पेस एलीवेटर

(अंतरिक्ष का रेल मार्ग)

- सौरभ रस्तोगी
(द्वादश 'क')

मानव द्वारा सौर तंत्र में आवासीय बस्तियों के निर्माण में सबसे बड़ी बाधा पृथ्वी से 160 किमी. की ऊँचाई को पार करना है। पृथ्वी के इस 160 किमी. के गुरुत्व कप से बाहर निकलना मुश्किल, खतरनाक और अत्यधिक खर्चीला कार्य है। स्पेस शटल की एक ही उड़ान का खर्च 0.5 बिलियन डॉलर से भी अधिक आता है, इस स्पेस एलीवेटर से उड़ान का खर्च मात्र 100 डॉलर आने की सम्भावना है।

स्पेस एलीवेटर के ऐतिहासिक विकास की कहानी

रूसी वैज्ञानिक कॉन्स्टैन्टिन सिवोल्कोवोस्की पेरिस की एफिल टावर देखकर बड़े प्रेरित हुए और उन्होंने एक टावर की कल्पना की जिसके द्वारा अंतरिक्ष में पहुँचना सम्भव हो जाये। उनकी मृत्यु के बाद उनके विचारो को भुला दिया गया।

स्पेस एलीवेटर की संकल्पना

स्पेस एलीवेटर में एक केबल होगी जो पृथ्वी की सतह से अंतरिक्ष तक फैली होगी। इसको इस प्रकार फैलाने से सेन्ट्रीफ्यूगल बल का मान काउन्टर भार लगाने से कुल गुरुत्व के मान से बढ़ जाता है और इस प्रकार एलीवेटर भू स्थिर कक्षा में टिका रहेगा। एलीवेटर की केबल में दौड़ने वाला क्लाइम्बर पृथ्वी के रोटेशन से त्वरण प्राप्त करेगा।

एक स्पेस एलीवेटर मूल रूप से एक लम्बी केबल होती है जो हमारी पृथ्वी की सतह से भूस्थिर कक्षीय ऊँचाई (35, 786 किमी.) तक दौड़ेगी तथा इस केबल का भार केन्द्र भूस्थिर कक्षा के केन्द्र पर होगा। इस केबल पर विद्युत चुम्बकीय यान दौड़ेगा तथा यह लोगों और नतिभारों को ढोने के लिए एक परिवहन तंत्र का कार्य करेगा। केबल का एक छोर भूमध्य रेखा (पृथ्वी की) पर फँसाया जायेगा तथा दूसरा छोर किसी विशाल भार (लघु आकार के क्षुद्र ग्रह) से बाँधा जायेगा। जिसे हम काउन्टर भार भी कह सकते हैं। भूस्थिर बिन्दु पर केवल सबसे अधिक तनाव में होगा क्योंकि हम उस बिन्दु पर केबल की मोटाई सबसे अधिक होगी और वहाँ से यह एक्सपोनोन्शियल रूप में टेपर होती जायेगी। पृथ्वी पर केबल किसी पहाड़ अथवा एक ऊँचे टावर से बाँध दी जायेगी। केबल पर दौड़ने वाले विद्युत चुम्बकीय वोहिकल की गति हजारों किलोमीटर प्रति घंटे होगी।

देखने में यह संकल्पना सरल है परन्तु इसका जटिलतम भाग केबल है।

स्पेस एलीवैटर के केबल की लगभग 62 गीगा पास्कल टेन्साइल स्ट्रेन्टा की आवश्यकता होगी। सौभाग्य से इन आवश्यकताओं की आपूर्ति करने वाला एक द्रव्य है वह है कार्बन नैनोट्यूब जिसकी संकल्पनात्मक इष्टतम 200 गीगा पास्कल टेन्साइल स्ट्रेन्थ होती है।

1 जी त्वरण 1डी के स्पेस एलीवेटर के प्रयोग से पृथ्वी से भूस्थिर कक्षा तक 2 दिन में पहुँचा जा सकेगा। स्पेस एलीवेटर से धन की बचत होगी और प्रदूषण से भी मुक्ति मिलेगी।

❖

नया सबेरा

- हर्षित शुक्ल
(अष्टम 'क')

भारत तेरी अमर कहानी।
कहती है यूँ बूढ़ी नानी।।
भारत का हर बच्चा-बच्चा।
त्यागी और राष्ट्र अनुरागी।।

इस माँ के आँचल का साया।
जिस पर पड़ती उसकी छाया।।
वह हो जाता सदा निहाल।
कभी न झुकता उसका भाल।।

करो प्रतिज्ञा कभी झुके ना।
अपनी भारत माँ का मस्तक।
नया सवेरा आज हुआ है।
भारत में देने को दस्तक।।

❖

किससे क्या सीखें?

- हर्षित शुक्ल
(अष्टम 'क')

(1)	चिड़ियों से	बड़े सबेरे जागना।
(2)	सूरज से	आलस छोड़ काम पर लगना।
(3)	धरती से	सुख-दुःख एक भाव से सहना।
(4)	पर्वत से	अविचल रहना।
(5)	नदियों से	हरदम आगे चलते रहना।
(6)	आँधी से	बाधाओं से लड़ना।
(7)	चींटी से	अनुशासन में चलना।
(8)	मधुमक्खी से	अथक परिश्रम करना।

❖

क्या आप जानते हैं?

- अखिल गंगवार
(अष्टम 'क')

कच्चल टापू - अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर स्थित कच्चल टापू वह स्थल है जहाँ नव वर्ष में सूर्य की सबसे पहली किरण भारत की धरती पर पड़ती है।

सी ऑफ ट्राक्वियूलिटी - सी ऑफ ट्राक्वियूलिटी चंद्रमा के उस स्थान का नाम है जहाँ 21 जुलाई, 1999 को अपोलो - 2 से अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्म स्ट्रांग, एडविन पहली बार उतरे थे।

पृथ्वी दिवस - 22 अप्रैल को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जाता है, यह दिवस पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

पक्षियों का महाद्वीप - दक्षिण अमेरिका महाद्वीप को पक्षियों का महाद्वीप कहा जाता है। इस महाद्वीप में 1500 प्रजातियों के रंग-बिरंगे पक्षी पाये जाते है।

❖

महत्वपूर्ण विचार

- अखिल गंगवार
(अष्टम 'क')

- *ज्ञान की वास्तविकता सोना अथवा हीरा है।* - स्वामी शिवानन्द
- *ऐश्वर्य पद में नहीं अपितु इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं।* - अरस्तू
- *परमार्थिक कर्मों के आचरण से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।* - शंकराचार्य
- *जिसे हारने का डर है, उसकी हार निश्चित है।* - नेपोलियन
- *मानव के कर्म ही उसके विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या हैं।* - लॉक
- *बड़े काम छोटे कामों से शुरू करने चाहिए।* - शेक्सपियर
- *पुस्तकें समय के विशाल समुद्र में प्रकाश स्तम्भ के समान हैं।* - ई. पी. कप्पल
- *किसी को क्षमा करना सजा से भी बेहतर है।* - गाँधी जी
- *अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है।* - चाणक्य

❖

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की ईमानदारी

- इलेश शुक्ल (नवम 'ख')

बात उस समय की है जब पं. दीनदयाल उपाध्याय पढ़ते थे। पण्डित जी एक बार शाम को सब्जी लेने बाजार गये। उन्होंने एक वृद्ध सब्जी वाली से सब्जी खरीदी। उन्होंने उसे चवन्नी दी और सब्जी लेकर घर आ गये। उन्होंने घर आकर अपनी जेब में हाथ डाला और सब पैसे बाहर निकाले। उन्होंने देखा कि सब पैसे तो हैं लेकिन वह खराब चवन्नी नहीं है। वह समझ गये कि खराब चवन्नी वह उस वृद्ध सब्जी वाली को दे आये। उन्होंने सोचा कि उस सब्जी वाली का बथुआ तो व्यर्थ ही चला गया। वे दौड़े-दौड़े उस सब्जी वाली के पास आये और बोले 'दादी जरा वह चवन्नी आप मुझे दे दीजिए जो मैंने अभी आपको दी थी। वह सब्जी वाली बोली- 'यहाँ तो बहुत से लोग आते हैं, न जाने तुमने कौन सी चवन्नी दी?' पंडित जी बोले - 'नहीं दादी आप मुझे सब पैसे दिखाइए तो मैं अपनी खराब चवन्नी (खोटी चवन्नी) ले लूँगा और नई चवन्नी आप को दे दूँगा। तब सब्जी वाली ने सब पैसे उनको दिखाए। दीनदयाल जी ने उसमें से अपनी खराब चवन्नी उठा ली और सही चवन्नी उसको देकर अपने घर आ गये। पंण्डित दीन दयाल जी की यह ईमानदारी हमें विशेष रूप से प्रभावित करती है।

❖

रुपया

- शुभम बाजपेई (द्वादश 'ख')

आज के संसार में
रुपये से प्यार मिलता है, रुपया ही भगवान है,
ये रुपया घर बार है, ये रुपया संसार है,
क्या कहें हम, बस रुपये का ही कमाल है,
रुपये के कारण दुनिया भी बबाल है,
बस रुपये का सवाल है।।

एक दिन की बात है, घूमने को मैं निकला,
कुछ दूर पर एक भिखारी मिला,
कहने लगा मुझसे, भूखा हूँ,
इस पेट का सवाल है,
दस रुपये का सवाल है।।

थोड़ा सा आगे बढ़ा,
थोड़ी दूर चला, बड़ी भीड़ थी,
पता चला कि दुर्घटना है घटी,
पर पुलिस ने रिपोर्ट न लिखी,
थानेदार बोला, जेब का सवाल है,
बस रुपये का सवाल है।।

वहाँ से जब छूटा, पर था मैं बिल्कुल टूटा,
रास्ते में अस्पताल, वहाँ भी बबाल,
जब घुसे अस्पताल के अन्दर,
तब समझ में आया मंजर,
कि डॉक्टर ने एक मरते को नहीं देखा,
हमने कहा डॉक्टर ये क्या बवाल है,
बोला वो- भई आप भी कमाल हैं।
बस रुपये का सवाल है।।

❖

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान

- श्रीपति मिश्र
(सप्तम 'ख')

एनी बेसेंट का योगदान - 1 अक्टूबर, 1847 को लन्दन में अंग्रेज परिवार में जन्मी एनी बेसेंट ने शिक्षा प्राप्त करने के बाद विभिन्न धर्मों का अध्ययन किया। श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषदों तथा वेदों का अध्ययन करके वे भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित हुई। उन्होंने मन ही मन भारत में रहकर साधना व सेवा में जीवन समर्पित करने का संकल्प ले लिया।

एनी बेसेंट का नाम कांग्रेस के शीर्ष नेताओं में गिना जाने लगा। सन् 1977 के कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन की वे अध्यक्ष मनोनीत की गयीं। बाद में एनी बेसेंट ने अपना जीवन शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने अडयार में नेशनल यूनिवर्सिटी की स्थापना की।

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में अनन्य योगदान करते हुए 21 सितम्बर, 1933 को उनका निधन हो गया।

भगिनी निवेदिता का योगदान - 28 अक्टूबर, 1867 को आयरलैण्ड के टायरान नगर में जन्मी मारग्रेट एलिजाबेथ नोबुल की शिक्षा-दीक्षा ईसाई परिवेश में हुई थी। इसके बाद मारग्रेट एक स्कूल में शिक्षिका बन गयीं।

28 जनवरी, 1898 को मारग्रेट नोबुल ने कलकत्ता में स्वामी विवेकानन्द जी के आश्रम में प्रवेश किया। दो माह तक अध्ययन और साधना के उपरान्त मारग्रेट ने 25 मार्च को स्वामी जी से दीक्षा ग्रहण की। उनका नाम भगिनी निवेदिता रख दिया गया। भगिनी निवेदिता ने स्वामी जी के आदेशानुसार दरिद्रों की बस्तियों में जाकर सेवा कार्य शुरू किया। स्कूल खोलकर गरीब बच्चों को पढ़ाने का अभियान चलाया।

11 फरवरी, 1905 को भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में भारतीय युवकों के प्रति अपमानजनक शब्दों का उपयोग कर डाला। मंच के सामने बैठी निवेदिता यह सहन नहीं कर पाई, उन्होंने खड़े होकर निर्भीकता के साथ वायसराय को चुनौती दी कि वे महान् भारत के महान्, चरित्रवान युवकों पर लांछन लगाने की धृष्टता कदापि न करें। भगिनी निवेदिता ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में अनेक पृष्ठ जोड़े।

मैडिलिन 'मीरा बहन' का योगदान - इंग्लैण्ड में ब्रिटिश नौसेना के एडमिरल सर एडमंड स्लेड की पुत्री के रूप में 22 नवम्बर, 1892 को जन्मी मैडिलिन पर गाँधी जी के व्यक्तित्व और विचारों का ऐसा अमिट प्रभाव पड़ा कि इस गौरांग युवती ने अपना देश त्याग कर भारत को अपनी कर्मभूमि ही नहीं बनाया अपितु भारत की स्वाधीनता के लिए अपने देश ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला धधकाकर जेल की यातनाएँ भी सहन कीं।

इस गौरांग युवती को पता चला कि गाँधी जी मांसाहार व मद्यपान को पाप कर्म मानते हैं।

प्रतिदिन चरखा कातते हैं। उसने भारत आने से पूर्व मांसाहार और मादक पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लिया। हिन्दी भाषा सीखी।

7 नवम्बर, 1925 को साबरमती आश्रम में पहुँचकर उसने गाँधी जी के चरणों में सिर रखा तो वह कृतकृत्य हो उठी। उस गौरांग सुन्दरी की आध्यात्म में रुचि देखी तो बापू बोले- 'तुम आज से मैडिलिन की जगह 'मीरा' कहलाओगी। आश्रम के सब लोग उन्हें 'मीरा बहन' कहने लगे।

गाँधी जी से आज्ञा-प्रेरणा लेकर वे अमेरिका व ब्रिटेन गयीं तथा वहाँ भारत की स्वाधीनता के पक्ष में वातावरण बनाने का प्रयास किया। उन्होंने इंग्लैण्ड की सभा में कहा था - 'भारत श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महान् अवतारों की कर्मभूमि है। उन्हें दास बनाकर ब्रिटेन ने अक्षम्य पाप किया है।'

सन् 1982 में मीरा बहन को स्वाधीनता में योगदान करने और सेवा कार्यों के लिए पद्म विभूषण से अलंकृत किया गया। मीरा बहन ने 32 वर्षों तक भारत में रहकर जन-सेवा की। 20 जुलाई, 1982 को मीरा बहन ऑस्ट्रियाँ में ही प्रभु के चरणों में विलीन हो गयीं।

एक विदेशी पुरुष का भारतीय स्वाधीनता संग्राम में योगदान

पादरी स्टॉक्स की भारत मुक्ति - अमेरिकन पादरी स्टॉक्स को सन् 1905 में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए भारत भेजा गया था। एक दिन भारतीय सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी से अचानक स्टॉक्स की भेंट हुई। उनके प्रवचन व 'गीता' के अध्ययन ने स्टॉक्स के हृदय में भारत तथा हिन्दू धर्म के प्रति भक्ति भावना जाग्रत कर दी। तब से उन्होंने अपना नाम 'सत्यानन्द स्टॉक्स' रख लिया। 'दीनबन्धु एड्रूज' के वे परम मित्र थे। आगे चलकर सत्यानंद स्टॉक्स ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का न केवल समर्थन किया, अपित उसमें सक्रिय योगदान दिया।

सत्यानंद स्टॉक्स ने हिमाचल के कोटगढ़ में सेवों का बहुत बड़ा बाग स्थापित किया। उनकी पुत्री श्रीमती विद्या स्टॉक्स हिमाचल प्रदेश की मंत्री भी रहीं।

गाँधी जी ने सत्यानंद स्टॉक्स की भारत भक्ति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी।

❖

महात्मा गाँधी

- आशीष मिश्र
(अष्टम 'क')

लिए अहिंसा अस्त्र हाथ में, और हृदय में गीता।
बिना खून की बूँद बहाये, स्वतंत्रता को जीता।
मुक्त हुई रावण के घर से, नवभारत की सीता।।

साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।
दे दी हमें आजादी, बिना खड्ग बिना ढाल।।

❖

फौजी

- श्रीपति मिश्र (सप्तम 'ख')

वे भी क्या लोग हैं जो
वतन की खातिर जीते हैं
परवाह न करते जिन्दगी की
सीमा पर शहीद होते हैं
जाते हैं दूर घरों से तो
माँ का दिल भी रोता है
राह ताकती है बहनों की राखी
पत्नी का शृंगार अधूरा होता है
बच्चों की आँखें तरसती हैं दर्शन को
सारा घर सूना-सूना होता है।
वे भी क्या ...

रहते हैं एक-दूजे से दूर
तनहाई में सब रोते हैं
हौंसला बढ़ाना अपना न आना
इन जज्बातों में
जज्बा रखना सीने में वतन का
है देश की इज्जत तुम्हारे ही हाथों में
अपने जज्बातों को छुपाकर गम का
घूँट भी हँसकर पीते हैं
वे भी क्या ...

जीत ही मंजिल है जिनकी
बारूदों पर रास्ता
देखकर हाथों में अंगारे
दुश्मन थर-थर काँपता है
ये लोग कोई और नहीं
हमारे देश के 'फौजी' होते हैं।

कुछ महापुरुषों के श्रेष्ठ वाक्य

- आशीष मिश्र
(अष्टम 'क')

- *अगर पत्थर पूजने से भगवान मिल जाते, तो दुनियाँ पहाड़ों को पूजती रहती।* - कबीर
- *अगर अंधा अंधे का नेतृत्व करे तो दोनों खाई में गिरेंगे।* - ईसा मसीह
- *खून शहीदों का प्यारो, मिला हुआ इस रंग में,*
जिन्हें देश हो जान से प्यारा, आयें हमारे संग में,
हमने अपने प्राणों से है आजादी का तोला,
मेरा रंग दे बसन्ती चोला।।
- भगत सिंह
- *जहाँ नम्रता से काम निकल आए, वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।* - प्रेमचन्द्र
- *जुल्म करना पाप है, जुल्म सहना उससे बड़ा पाप है।* - गुरू गोविन्द सिंह
- *वक्त आने दे, बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ,*
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है। - राम प्रसाद बिस्मिल

❖

संस्कृत भाषा

- आशीष मिश्र (अष्टम 'क')

आज 21 वीं सदी में संस्कृत भाषा का सम्मान नहीं हो रहा है। हमारे देश में संस्कृत भाषा ही हमारी प्राचीन संस्कृति का आधार है। हमारे देश के प्रसिद्ध ग्रन्थ जैसे- वेद, गीता, रामायण, महाभारत इत्यादि ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे गये हैं।

संस्कृत भाषा का अस्तित्व आज संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा कुछ हिन्दी माध्यम के विद्यालयों द्वारा ही बना है। आज भारत के हर छात्र में यह भावना उत्पन्न हो रही है कि वह चुने गये विषयों में कम्प्यूटर ले तथा संस्कृत न ले। इस मानसिकता के छात्र खुद के कैरियर व खुद के लिए जीते हैं, देश के लिए नहीं। देश के कुछ मंत्रिगण भी संस्कृत भाषा से अधिक अंग्रेजी भाषाओं को मानते हैं। उनका कथन है कि 'संस्कृत पढ़कर आप पंडित ही बन सकते हैं।' धिक्कार है, जिनकी ऐसी मानसिकता है। उन्होंने संस्कृत भाषा का ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृत, हमारे पुराण, ग्रन्थ, हमारे प्रसिद्ध कवि, लेखक सबका अपमान किया है।

इसीलिए आज हम सबको संस्कृत भाषा के अस्तित्व की रक्षा हेतु चाहिए कि हम संस्कृत भाषा का सम्मान करें क्योंकि संस्कृत भाषा के सम्मान से ही हमारे राष्ट्र का सम्मान सम्भव है।

❖

प्लास्टिक पच्चीसा

- सौरभ रस्तोगी
(द्वादश 'क')

जय जय जय प्लास्टिक महारानी।
महिमा अगम न जगत बखानी।।
साठ दशक में ले अवतारा।
सुमिरै तुम्हें सकल संसारा।।
जब से इस धरती पर आई।
मन-मोहनी हृदय में छाई।।
मानव बन गया दास तुम्हारा।
घर-घर में आवास तुम्हारा।।
रंग-बिरंगी पहने माला।
तुम हो आदि सुंदरी बाला।।
लम्बी सी शृंखला बनाती।
जुड़ करके बहुलक कहलाती।।
पी. वी. सी., टेफ्लान कहाती।
पॉली स्टाइलिश झोला लटकाती।।
सबके काज करो तुम पूरा।
तुम बिन जीवन लगे अधूरा।।
शल्य चिकित्सा है जग जानी।
तुम मानव के अंग समानी।।
जब तुम्हारी इच्छा भर जाती।
अमृत को भी विष कर जाती।।
खाद्य पदार्थ तुम्हीं को हटावैं।
प्लास्टिक सील पैक हो जावै।।
प्लास्टिक के उपहार निराले।
कितने घूम रहे मतवाले।।
नाना विधि नाना बहुरूपा।
गुण गावैं नित सुर नर भूपा।।
जन मानस में सुख उपजावा।
बेकेलाइट नाम सुहावा।।
तेरा अस्तित्व कभी न मरता।
सूक्ष्मजीव है विघटनकर्ता।।
सकल लोक संसार समायी।
बायोडिग्रेडेबल कहलायी।।
नूतन शोध नवीन कहानी।
कीर्ति बिखेरे प्लास्टिक रानी।।
प्लास्टिक देख सबै मन हरषा।
देख रसायन घर में बरसा।।
जिसने इधर-उधर फैलाया।
उसने करनी का फल पाया।।
पॉलीथीन में भोजन फेंका।
गऊ माता ने उसको देखा।।
भोजन संग पन्नी भी खायी।
बिन माँगे ही मौत बुलायी।।
प्रेम ललित मानव से बंधन।
इसका होते कुशल प्रबन्धन।।
होहिं प्रसन्न सबै नर नारी।
मिटे प्रकृति की चिंता सारी।।
प्लास्टिक पच्चीसा जो कोई गावे।
पर्यावरण को स्वच्छ बनावे।।

व्यंग्य

- उज्वल दीप
(अष्टम 'क')

जब तुम इस दुनिया से जाओगे,
दूर कहीं एक नया जन्म पाओगे।
इस बार जो हुआ सो बहुत बुरा हुआ,
अगली बार एक लम्बी पूँछ और चार टाँग पाओगे।।

भगवान करे, कोई तुमसा और न बनाए,
एक तू ही तो कार्टून है कहीं कॉमन न हो जाये।
हमेशा आगे बढ़ो, दूसरों से आगे निकलने की कोशिश करो,
पीछे वाले को और पीछे छोड़ दो, आगे वालों से आगे निकलने की कोशिश करो।
तभी तुम एक अच्छे रिक्शेवाले बन सकते हो।

कभी तुमने पॉलीथिन के अन्दर बंदर को देखा है,
सोचो ... और सोचो ...। अपना आईकार्ड देखो।
तेरी याद न आये ऐसा होने न देंगे,
तुझ जैसा दोस्त खोने न देंगे।
शराफत से रहना, वरना कान के नीचे एक घुमा के देंगे।

❖

मानव हस्त

- आशीष मिश्र
(अष्टम 'क')

मनुष्यों के हाथ में कई विशेषताएँ छुपी हुई हैं। मनुष्य के दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली दबाने से उसकी वाणी साफ होती है तथा तुतलाने वाला तथा हकलाने वाले बच्चों की वाणी शुद्ध होती है। वाणी सम्बन्धी सभी समस्याएँ दूर हो जाती हैं।

❖

नयी पक्षी जाति की खोज

- हर्षित अग्रवाल (अष्टम 'क')

दक्षिण-पूर्व सुलावेशिया के ट्रिनिट नामक गाँव में ट्रिनिट कॉलेज के शोधकर्ताओं ने पक्षी की एक नयी प्रजाति की खोज की है। जिसका काम चलाऊ नाम है- 'बांगी-बांगी या ह्वाइट आई'। उनका विश्वास है कि इन पक्षियों का अलग-अलग द्वीप की जातियों से विकास हुआ और कहाँ से उड़ जाने के वाद 'बांगी-बांगी' टापू में बस गये।

वैज्ञानिकों का यह निश्चित मत है कि यह नयी प्रजाति है अथवा पेड़ बेलीड़ ह्वाइट आई की सबसे पहली उपजाति है। यह रहस्यमय पक्षी स्क्रबलैण्ड में लेमन बेलीड ह्वाइट आइज़ के साथ सबसे पहले देखा गया। यह प्रजाति पेल बेलीड ह्वाइट आई से बहुत मिलती-जुलती है, हालांकि कुछ आश्चर्यजनक भी हैं।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि बांगी-बांगी ह्वाइट आई कृमिभक्षी पक्षियों में एक छोटे समूह का पक्षी है जिसे ह्वाइट आई कहते हैं और जो कुछ फुदकी पक्षी से सम्बन्धित है।

❖

पहेलियाँ

- हर्षित अग्रवाल (अष्टम 'क')

ऊपर से तो हरा, अन्दर से है लाल।
उतना मीठा रस भरा, जितनी मोटी खाल। **(तरबूज)**

लाल गाय खर खाये, पानी पिये मर जाये। **(आग)**

देखा है तो पहना नहीं, पहना है तो देखा नहीं। **(कफन)**

छोटा सा फकीर उसके पेट में लकीर। **(गेहूँ)**

क्या आप जानते हैं?

- हर्षित अग्रवाल (अष्टम 'क')

विष्णु जी के धनुष का नाम क्या था? **सारंग**

हाथी के मस्तिष्क का वजन कितना होता है? **5,200 ग्राम**

किस वैज्ञानिक को पूरब का जादूगर कहते हैं? **सर जगदीश चन्द्र बसु**

मनुष्य के शरीर में कुल कितने छेद होते हैं? **20 लाख**

उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे बड़ा पिन कब होता है? **21 जून**

हिन्दी भाषा

- अखिल गंगवार
(अष्टम 'क')

आज के सन्दर्भ में विचार-विमर्श करने के बाद 'हिन्दी भाषा' विषय पर अपने विचारों को मैं इस लेख द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता हूँ। हिन्दी ने अमीर खुसरो से लेकर महावीर प्रसाद द्विवेदी तक जो उतार-चढ़ाव देखे हैं वह वास्तव में विचारणीय है। प्रारम्भ में वीरगाथा काल में स्थानीय बोली में लिखा गया साहित्य, आपसी द्वन्द्व के कारण कवियों एवं लेखकों के लिए काफी चिन्तनीय विषय रहे हैं।

महात्मा तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचन संस्कृत में करनी चाही। काफी विचार के बाद उन्होंने निश्चय लिया

'भाषा बंद्ध करब हम सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

स्वभाषा में लिखने पर उन्हें सन्तुष्टि मिली -

'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।
भाषा निबद्ध मति मंजुल मातनोति।।'

ब्रजभाषा में लिखा गया काव्य तो सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। सूर, रसखान, रत्नाकर एवं रीतिकाल के कवियों यथा- देव, मतिराम, बिहारी, घनानन्द आदि ने ब्रज भाषा को उन्नत व समृद्ध किया है जिसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बड़ी कठिनाई से काटकर खड़ी बोली को प्रतिष्ठित कर सके। वास्तव में आज हिन्दी भाषा खड़ी बोली का जो रूप देखने को मिल रहा है, उसमें निश्चित ही रूप से पूज्य आचार्य जी का प्रबल योगदान है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने स्वतः लिखा है-

'करते तुलसीदास भी कैसे मानद नाद।
महावीर का यदि नहीं मिलता उन्हें प्रसाद।।'

फिर उस हिन्दी भाषा की विजय पताका आगे कई कवियों, लेखकों, नेताओं ने उठायी। भारतेन्दु जी ने कहा -

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।'

तिलक, गाँधी, टैगोर, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, बिनोबा भावे आदि ने हिन्दी भाषा की वकालत की। वास्तव में किसी भी देश की पहचान होती है उसकी भाषा से। रूस में रूसी, चीन में चीनी, जर्मन में जर्मनी, इंग्लैण्ड में अंग्रेजी तो भारत में हिन्दी क्यों नहीं। वास्तव में हिन्दी वह भाषा है जिसमें सार्वकालिकता, सर्वग्राह्यता का गुण विद्यमान है।

इसलिए हिन्दी हम सबके लिए अनुकरणीय, श्लाघनीय एवं पठनीय होनी चाहिए।

गणित के दोहे

- हर्षित अग्रवाल (अष्टम 'क')

मूल, समय, दर के गुणा, कीजै सौ का भाग।
निकला ब्याज सुनो सखे, जरा समय न लाग।।

ब्याज गुणे सौ के बटे, किया समय गुण मूल।
निकला दर क्षण में सखे, गया हृदय का शूल।।

ब्याज गुणे सौ के बटे, किया दर गुणे मूल।
निकला समय उसी समय, जरा न होगी भूल।।

मिश्र गुणे सौ के बटे, समय गुणे दर कीन्ह।
फिर सौ हर में जोड़कर, निकाल मूल धन लीन्ह।।

❖

भारत की सुप्रसिद्ध महिलाएँ

- अखिल गंगवार (अष्टम 'क')

माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली पहली महिला	- बछेन्द्री पाल
भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री	- श्रीमती इन्दिरा गाँधी
भारत के प्रान्तों में बनी पहली मुख्यमंत्री	- सुचेता कृपलानी
भारत की पहली महिला राजपूत	- विजय लक्ष्मी पंडित
भारत की प्रसिद्ध महिला पार्श्वगायिका	- लता मंगेशकर
नोबल पुरस्कार पाने वाली महिला	- मदर टेरेसा
ज्ञान पीठ पुरस्कार पाने वाली महिला	- महादेवी वर्मा
इंग्लिश चैनल को तैर कर पार करने वाली महिला	- आरती साहा
स्वाधीनता संग्राम की सेनानी	- महारानी लक्ष्मी बाई
भारत की सेवा में घोर समर्पित	- भगिनी निवेदिता

❖

भूलभुलैया

- अखिल गंगवार
(अष्टम 'क')

पानी कहाँ है? — मटके में।
मटका कहाँ है? — रसोई में।
रसोई कहाँ है? — घर में।
घर कहाँ है? — कानपुर में।
कानपुर कहाँ है? — भारत में।
भारत कहाँ है? — एशिया में।
संसार कहाँ है? — धरती में।
धरती कहाँ है? — पानी में।
पानी कहाँ है? — मटके में।

सब्जी मंडी का दंगा

- अखिल गंगवार
(अष्टम 'क')

आज के समाचार बहुराम जी से सुनिये। आज के मुख्य समाचार इस प्रकार हैं - कि कानपुर की सब्जी मंडी में दंगा फैल गया है। चार आलुओं ने दो टमाटरों का खून कर दिया है। तीन भिण्डी, चार नीबू लापता हैं। दो अस्पताल में भरती हैं, लौकी उनकी देखभाल कर रही है। दो मूली व दो गाजर की हालत गम्भीर बतायी जा रही है। उनको लखनऊ के घुइया के जी अस्पताल में भरती किया गया है जो उनका आपरेशन कर रहे हैं। इंस्पेक्टर करेला और उनके साथी प्याज, तरोई ने मिलकर चार लहसुनों को पकड़ लिया है जो गोभी के जेल में बन्द हैं।

और अब सुनिये तापमान के समाचार। कल सवेरे अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में रसगुल्ले, बालूशाही तथा लखनऊ, कानपुर में जलेबी गुझिया गिरने की सम्भावना है। अतः आप से निवेदन है कि कृपया आप सभी लोग अपनी-अपनी छतों पर मुँह खोलकर बैठ जायें।

कुछ रोचक तथ्य

- हिमांशु तिवारी (दशम 'ख')

- *दायें हाथ से काम करने वाला व्यक्ति, बाएँ हाथ से काम करने वाले व्यक्तियों से औसतन 9 वर्ष अधिक जीता है।*
- *बुद्धिमान व्यक्तियों के बालों में जस्ता और ताँबा ज्यादा होता है।*
- *यदि हम 8 वर्ष 7 माह 6 दिन चीखें तो मान लीजिए कि हमने एक कप कॉफी उबालने के लिए पर्याप्त ऊर्जा पैदा कर दी है।*
- *एक 75 वर्षीय व्यक्ति लगभग 23 वर्ष सो चुका होता है।*
- *उष्णकटिबंधीय वनों के पेड़ इतने घने होते हैं कि उन पर पड़े वर्षा जल को धरती पर आने में 10 मिनट का समय लगता है।*
- *अगर मानव शरीर की सभी रक्त वाहिनियों को सीधा करके उनके सिरों को जोड़ दिया जाये तो वे 1,00,00 (एक लाख) मील लम्बी हो जायेंगी। अर्थात् उनकी लम्बाई विषवत् रेखा के चार चक्करों के बराबर हो जायेगी।*
- *प्राचीन रोम में नमक इतना कीमती तथा दुर्लभ था कि जूलियस सीजर अपनी सेना को वेतन के रूप में मुद्रा न देकर केवल नमक देता था। अंग्रेजी में वेतन के लिए प्रसिद्ध शब्द 'सेलेरी' लातीनी भाषा के शब्द 'शैल' से बना है, जिसका अर्थ होता है- नमक।*
- *एक एकड़ क्षेत्रफल में 1 इंच हुई बरसात के पानी का वजन एक टन होता है।*
- *उंगलियों की छाप की तरह हरेक के जीभ की छाप भी अलग होती है।*
- *बाँस 24 घण्टे में 3 फीट से ज्यादा बढ़ सकता है।*

❖

भौगोलिक ज्ञान

- ऋषभ रस्तोगी (अष्टम 'ख')

प्रश्न - कौन सा देश जूट का अग्रणी उत्पाद देश है?

उत्तर - बाँग्ला देश।

प्रश्न - मोटे आनाजों को क्या कहा जाता है?

उत्तर - मिलेट।

प्रश्न - चाय का सबसे बड़ा निर्यात देश कौन-सा है?

उत्तर - भारत।

प्रश्न - वायुयानों का किस देश में सर्वाधिक निर्माण होता है?

उत्तर - संयुक्त राज्य अमेरिका।

प्रश्न - किस नगर को जापान का मैनचेंस्टर कहा जाता है?

उत्तर - ओसाका।

प्रश्न - ट्रक फार्मिंग क्या है?

उत्तर - शहरों में साग-सब्जी की खेती को ट्रक फार्मिक कहते हैं।

❖

जिन्दगी की पतंग

- संकल्प
(द्वादश 'क')

उड़ती, बहकती
घूमने को इधर-उधर तत्पर
अपनी डोर को
देते हुए दूसरे के हाथ में
ऊपर उठती जाती कभी
स्वामी को करती स्तब्ध
वह बढ़ती जाती है
अपने प्रारब्ध के साथ
लेकर अपने स्वभाव में
कुछ स्थिरता
पर देखते ही अन्य स्वसम को
वह फिर महक उठती है
हवा के साथ
अपना पथ बदलकर
वह फिर भी उड़ती है
अन्त में आजाद होकर
मलिक के हाथों से
वह हो जाती है
ओझल आँखों से।

❖

'श्रद्धांजलि' : कवि त्रिलोचन

- संकल्प
(द्वादश 'क')

यूँ ही कुछ मुस्करा कर तुमने परिचय की यह गाँठ लगा दी

वे 1981 में सुल्तानपुर में कूड़ेभार के एक कॉलेज के सेमिनार में सम्बोधित करने आये थे। खादी के कुरते पाजामे में त्रिलोचन जी एक साधारण ग्रामीण लग रहे थे। वे इतने बड़े कवि थे, लोगों को इसका एहसास कतई न था। पर जब उन्होंने अपने भाषण के दौरान यह कविता पढ़ी यूँ ही कुछ मुस्करा कर तुमने परिचय की यह गाँठ लगा दी, तब लगा कि वह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि त्रिलोचन शास्त्री हैं। लोगों ने उनसे पूछा कि वे तो नागार्जुन, केदार, त्रिलोचन त्रयी वाले त्रिलोचन हैं तो यह छायावादी कविता क्यों पढ़ी? वे बोले छायावाद ही तो प्रगतिशील कविता की शुरुआत है क्योंकि वही स्वाधीन है। किसी भी परम्परा से, मीटर से और रिदम से। यद्यपि वे छायावादी कवियों से प्रभावित थे, निराला उन्हें सबसे प्रिय थे, तथापि उन्हें कभी छायावादी कवि नहीं माना गया लेकिन पता नहीं क्यों त्रिलोचन जी को खुद जो कविता सबसे प्रिय लगी वह छायावादी रुझान की थी- 'था, पथ पर मैं भूला-भूला, फूल उपेक्षित कोई फूला। जाने कौन लहरथी उस दिन अपनी याद जगा दी।' त्रिलोचन जी तो उन कवियों में से थे जिन्होंने अज्ञेय, रघुवीर सहाय व शमशेर जैसे कवियों की नयी कविता के विपरीत जनवादी रुझान की कविताओं को चुना।

वे कहते थे हिन्दी राष्ट्रीय नहीं जनपदीय भाषा है, इसलिए जनपद के कवि और जनपद के अखबार ही हिन्दी को जीवित रख पायेंगे। वे कहते थे कि अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन आयोजित करने से हिन्दी का कतई भला नहीं होग। त्रिलोचन जैसे कवि सदा लोगों के जेहन में रहते हैं। आखिर तुमने परिचय की गांठ जो लगा दी है।

'जीवन उसका जो कुछ है, पथ पर बिखरा है।
तप तप कर ही भट्ठी में सोना निखरा है।।'

❖

रेख सी लघु तिमिर लहरी,
चरण छू तेरे हुई है सिन्धु सीमाहीन गहरी!
गीत तेरे पार जाते
बादलों की मृदु तरी ले!
रागभीनी तू सजनि निश्वास भी तेरे रँगीले!
कौन छायालोक की स्मृति,
कर रही रङ्गीन प्रिय के द्रुत पदों की अंक-संसृति,
सिहरती पलकें किये -
देती विहँसते अधर गीले!
रागभीनी तू सजनि निश्वास भी तेरे रँगीले!

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

कवि त्रिलोचन का परिचय

- संकल्प
(द्वादश 'क')

जन्म - 20 अगस्त, 1917

मृत्यु - 9 दिसम्बर, 2007

मूल नाम - वासुदेव सिंह

चर्चित नाम - त्रिलोचन शास्त्री

जन्म स्थान- गाँव चिरान पट्टी, जिला सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश)

स्थायी निवास - लोधा मण्डी, ज्वालापुर

निधन - दिल्ली

शिक्षा - अरबी, फारसी, साहित्य रत्न, शास्त्री, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से स्नातकोत्तर

आजीविका - पत्रकारिता और लेखन

पुरस्कार और सम्मान - हिन्दी समिति पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी संस्थान सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, शलाका सम्मान, भवानी प्रसाद मिश्र सम्मान, सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद् सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार सम्मान।

प्रकाशित कृतियाँ -

कविता संग्रह - धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगन्त, ताप के ताए हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, अरघान, सबका अपना आकाश, चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला आदि।

कहानी व अन्य संग्रह - देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थबोध, मुक्तिबोध की कवितायें, प्रतिनिधि कवितायें, साक्षात् त्रिलोचन, त्रिलोचन संचयिता, मेरे साक्षात्कार, त्रिलोचन के बारे में आदि।

सम्पादन - वृहद् हिन्दी कोष, अंग्रेजी हिन्दी कोष, हिन्दी शब्द सागर, उर्दू-हिन्दी द्वैभाषिक कोष, फारसी-अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोष, प्रभाकर मेघानी प्रकाशन, वानर, हंस, आज, समाज, चित्ररेखा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी आदि।

❖

अश्रु मेरे माँगने जब नींद में वह पास आया।
स्वप्न सा हँस पास आया !
हो गया दिव की हँसी से,
शून्य में सुरचाप अंकित;
रश्मि - रोमों में हुआ,
निस्पन्द तम भी सिहर पुलकित;
अनुसरण करता अमा का चाँदनी का हास आया ! - महादेवी वर्मा

त्रिलोचन अपने बारे में

लेखक रहा हूँ और लेखक का काम है लिखना। मैंने जो जिया, वही लिखा। मैंने अपने सपने को वर्तमान को जिया। भविष्य के लिए लोग कल्पना करते हैं, स्वप्न भी देखते हैं। लेकिन कोई केवल स्वप्न देखे और क्रियावान न हो तो कोई लाभ नहीं होगा। वर्तमान में हमको क्या करना है, क्या नहीं करना है, इसका निश्चय करने का संकल्प लेने में भूतकाल के हमारे अनुभव लिखित या श्रुति हमारी सहायता अवश्य करते हैं। वह सहायता लेंगे अथवा वह सहायता हमारे लिए कहां तक काम की होगी, यह हमें सोचना है। जीवन में बहुत से दौर आए, पर सच्चाई है कि किसी दौर से प्रभावित नहीं रहा। जो कवि मेरी चेतना के अंग बने, वे प्राचीन कवि थे। गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास। हालांकि प्रसाद, निराला, पंत मेरे लिए सदैव आदर के योग्य रहे हैं और मैं इन्हें बड़ा कवि मानता हूँ। निराला मेरे प्रियकवि रहे हैं। उनको बहुत पढ़ा है मैंने।

मेरी कविताओं में किसी दौर का असर नहीं रहा। इसलिए मेरी कविताओं की ओर समय पर लोगों का ध्यान नहीं गया। जिन रचनाओं की चर्चा पर प्रशंसा 1980 के बाद हुई, वे रचनाएं 1935 या उसके बाद की हैं। दरअसल मैंने अपनी शर्त पर कविता को चुना या रचा और अपनी ही शर्त पर चुनने या रचना थाले को भोगना तो पड़ेगा ही। मैंने समाज के जीवन को पकड़ा है। समाज में जहाँ राजनीति है, वहाँ कविताओं में भी राजनीति आती है। मैंने गांधी, सुभाष, माओत्से तुंग और नेहरू पर कविताएं लिखी हैं। कुछ कवितायें कवियों पर भी हैं। सत्ता या सत्ता की राजनीति को भी अच्छा नहीं समझा, इसलिए सत्ता की राजनीति मेरी कविताओं से दूर है।

मैंने जीवन में कभी हाथ नहीं फैलाया। लेकिन कई लोगों को देखा है माँगते हुए, साहित्यिक लोगों को भी। इस सम्बन्ध में मेरी कविताओं और मेरे जीवन को देखकर कुछ लोगों को भ्रम होता है। मेरी एक कविता की पंक्तियाँ हैं- 'भीख माँगते उसी त्रिलोचन को देखा कल।' इसको लेकर कुछ लोग सोचते हैं कि मैंने जीवन में दूसरों के सामने हाथ फैलाया है। लेकिन भाई सच यह है कि यह त्रिलोचन नहीं बल्कि वे हैं जिन्हें त्रिलोचन ने देखा है, भीख माँगते हैं। लेकिन उनका नाम कविता में लेना असम्मानजनक होता है, इसलिए मैंने उनका नाम न देकर वहाँ अपना दिया। त्रिलोचन को भीख मांगते कोई बता नहीं सकता, अभी तो मेरे समान कई लोग हैं। मैंने तो खाना, पैसा न मिलने पर लम्बे उपवास किये। चने खाए, चने भी न मिले तो खाली पानी पीकर दिन बिता दिया। इस कविता में बहुत से लोगों ने त्रिलोचन को व्यक्ति त्रिलोचन मान लिया। ऐसे लोगों के लिए मैं कहूँगा कि वे साहित्य को नहीं समझ सकते।

इनके अलावा अशोक कुमार, दिलीप कुमार और किशोर कुमार मेरी पसंद थे। अभिनेत्रियों में मुझे वहीदा रहमान, नरगिस और मीना कुमारी ने प्रभावित किया। मीना कुमारी का संजीदा अभिनय करने में तो जवाब ही नहीं था।

असफलता से हारो मत

- सर्वेश वर्मा
(नवम 'क')

असफलता ही सफलता का रास्ता दिखाती है। टॉम वैटसन सीनियर ने कहा है- 'अगर आप सफल होना चाहते हैं तो असफलता की दर दुगुनी कर दीजिए।'

अगर आप इतिहास पढ़ें तो पायेंगे कि सभी सफलता की कहानियाँ बड़ी असफलता की कहानियाँ भी होती हैं। लेकिन लोग असफलताओं को नहीं देखते। वे सिक्के का केवल एक ही पहलू देखते हैं और कहते हैं कि वह सही जगह पर सही वक्त पर रहा होगा।'

मैं आपको एक आदमी की जिन्दगी की कहानी सुनाना चाहूँगा। यह आदमी 21 साल की उम्र में व्यापार में असफल हुआ। 22 साल की उम्र में एक चुनाव में हारा, 24 साल की उम्र में एक व्यापार में असफल हुआ। 26 की साल उम्र में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। 27 साल की उम्र में मानसिक संतुलन (Nervous Breakdol) खो बैठा, 34 साल की उम्र में सिनेट (Senate) का चुनाव हारा, 47 वर्ष की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने के प्रयास में नाकामयाब रहा, फिर 49 साल की उम्र में सीनेट का चुनाव हार गया और 52 साल की उम्र में अमरीका का राष्ट्रपति चुना गया।

यह व्यक्ति अब्राहम लिंकन थे। क्या आप उन्हें असफल कहेंगे। हार कर बैठ सकते थे, लेकिन लिंकन के लिए हार एक पल की बाधा थी, कोई अन्त नहीं।

सफल व्यक्ति कोई महान काम नहीं करते, वे छोटे कामों को भी महान ढंग से करते हैं। हर सफलता की कहानी के पीछे असफलता की कहानी भी छिपी होती है।

सफल लोगों की असफल कोशिशों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

(1) थॉमस एडीसन ने बिजली के बल्ब के आविष्कार के दौरान तकरीबन 10,000 बार असफलता का सामना किया।

(2) 40 साल की उम्र में हेनरी फोर्ड दीवालिया हो गये थे।

(3) ली इयाकोवा (Lee Iacocca) को 54 साल की उम्र में हेनरी फोर्ड द्वितीय ने नौकरी से निकाल दिया था।

(4) युवा बीयोवन (Beethoven) से कहा गया था कि उसमें संगीत की प्रतिभा (Talent) नहीं है, मगर उन्होंने दुनिया को बेहतरीन संगीत की रचनाएँ दीं।

जिन्दगी में असफलताएँ तो मिलेंगी ही। एक असफलता सफलता के लिए ड्राइविंग फोर्स (Driving Force) भी बन सकती है और हमें नम्रता भी सिखाती है। दुःख में मिला साहस और विश्वास हमें असफलता से उबरने में मदद कर सकता है। हमें हालात का शिकार होने की बजाय उससे ऊपर उठकर जीतना सीखना चाहिए। डर और शक से हमारा दिमाग काम करना बंद कर देता है।

हर असफलता के बाद खुद से पूछें इस घटना से मैंने क्या सीखा? और तभी आप रास्ते की रुकावटों को सफलता की सीढ़ियों में बदल पायेंगे।

महाराज पृथ्वीराज चौहान

- नीलांशु शुक्ल
(द्वादश 'ख')

लगभग 1100 वीं शताब्दी के लगभग अजमेर नरेश सोमेश्वर सिंह चौहान के घर अत्यन्त मन्नतों के पश्चात् एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम गुरू विषादनाथ के द्वारा पृथ्वीराज चौहान रखा गया। यह बालक जैसे-जैसे बड़ा हो रहा था उसी रफ्तार से नये कीर्तिमान भी स्थापित करता जा रहा था। अपने गुरू विषादनाथ के गुरुकुल में सहपाठियों के साथ शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् वह वापस अजमेर आकर राजकुमार घोषित हुआ। राजकुमार बनने के पश्चात् ही वह अपने राज्य (अजमेर) के विकास में अग्रसर हो गया। इसके पश्चात् उसने अपने राज्य की रक्षा हेतु गुजरात के महाराज भीमदेव से युद्ध किया जिसमें महाराज सोमेश्वरसिंह चौहान का भीमदेव ने छलपूर्वक वध कर दिया। इसके पश्चात् पृथ्वीराज चौहान ने गुजरात पर आक्रमण कर गुजरात नरेश भीमदेव का वध कर गुजरात विजय कर लिया। इसके पश्चात् उसकी वीरता से प्रसन्न होकर उसके नाना दिल्ली के महाराज मानसिंह ने उसे दिल्ली का महाराज बनने का प्रस्ताव भेजा जिसके कारण कन्नौज नरेश राजा जयचन्द और पृथ्वीराज में शत्रुता पनपने लगी और अन्ततः पृथ्वीराज ने दिल्ली के साम्राज्य का पद भार संभाला और सभी राज्यों को दिल्ली के साथ मिलाने के लिए अश्वमेध यज्ञ किया। इस यज्ञ के कारण पृथ्वीराज चौहान का सामना आल्हा और ऊदल नामक दो शूरवीर योद्धाओं से हुआ, पृथ्वीराज के साथ युद्ध के चलते आल्हा अपने भाई ऊदल की पृथ्वीराज के हाथों मृत्यु हो जाने के कारण बदला लेने की ठानी किन्तु अपने गुरुदेव के समझाने के कारण वह संन्यासी बन हिमालय की ओर चला गया।

इसके उपरान्त पृथ्वीराज ने कुछ वर्षों तक युद्ध किया और विजयश्री को गले लगाकर सम्पूर्ण उत्तर भारत का सम्राट बन बैठा। पृथ्वीराज की शूरवीरता के कारण उसका नाम सम्पूर्ण भारत में फैल गया। पृथ्वीराज कन्नौज के महाराज जयचन्द की बहन संयोगिता से प्रेम करता था जो जयचन्द्र और पृथ्वीराज की शत्रुता का एक और कारण बना। पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता को भगाकर विवाह करने के कारण इनकी शत्रुता और प्रगाढ़ हो गयी।

सन् 1190 के लगभग जब भारत पर प्रथम इस्लाम धर्मानुयायी सम्राट मुहम्मद गोरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया तो उसे पराजय का सामना करना पड़ा। किन्तु जयचन्द्र ने इसे अपने लिए पृथ्वीराज से बदला लेने का सुअवसर जान मुहम्मद गोरी का समर्थन दिया और पृथ्वीराज की कमजोरियों की उसे जानकारी दे दी। धन व सैन्य शक्ति हर तरह से मुहम्मद गोरी की सहायता की और छलपूर्वक पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बना लिया गया। पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बनाने के पश्चात् उसे और पृथ्वीराज के राज कवि चन्द वरदाई को मुहम्मद गोरी के समक्ष लाया गया। जहाँ चन्द्र वरदाई ने महाराज पृथ्वीराज चौहान की शब्दभेदी बाण विद्या का वर्णन किया। जिससे प्रभावित होकर मुहम्मद गोरी ने इसे देखने की इच्छा प्रकट की। महाराजा पृथ्वीराज को बन्दी बनाने के पश्चात् गर्म सरिया से उनकी आँखें फोड़ दी गयी थीं, अतः उनके लिए इसे सुअवसर जान चन्द्र वरदाई ने महाराज पृथ्वीराज चौहान की बेड़ियाँ खुलवा कर उन्हें धनुष बाण थमा दिया और निम्नलिखित दोहा गाया -

'चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमान।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।।'

इस दोहे के खत्म होते ही मोहम्मद गोरी ने 'शाबास' कहा और इसी शब्द की प्रतिध्वनि सुन पृथ्वीराज ने बाण छोड़ दिया और मोहम्मद गोरी के बाण लग जाने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इसके बाद चन्द्र वरदाई ने स्वयं व पृथ्वीराज चौहान ने चाकू भोंककर मृत्यु को गले लगा लिया।

❖

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

प्रस्तुति - आशीष सिंह बुन्देला
(दशम 'ख')

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।
नन्हीं चीटीं, जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।।

मन में विश्वास रगों में साहस भरती है।
चढ़ने को ऊपर निरन्तर परिश्रम करती है।।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती है।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती है।।

डुबकियाँ, सिन्धु में गोताखोर लगाता है।
जा-जा कर वह खाली हाथ लौट आता है।।
मिलते न सहज ये मोती गहरे पानी में।
बढ़ता-दूना उत्साह उसका इसी हैरानी में।।

मुट्ठी, उसकी खाली हर बार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो।
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो।।

जब तक सफल न हो नींद-चैन का त्याग करो तुम।
संघर्ष का यह जीवन है, इसे छोड़ मत भागो तुम।।
बिना कुछ किये विजय साकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

❖

हम बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?

- विश्वेश
(द्वादश 'क')

इंग्लैण्ड में जब एक महान दार्शनिक से यह प्रश्न किया गया What do you want to make yourself' तो उसने उत्तर दिया I want to be a human being. अर्थात् मैं एक मनुष्य बनना चाहता हूँ। ये मनुष्य बनना अपने आप में बड़े ही गौरव का विषय है। यदि संसार में मनुष्य अपने अच्छे आचरण से एक अच्छा मनुष्य बन जाये तो शायद ही उसे किसी वस्तु की आवश्यकता हो क्योंकि हमने जिस देश भूमि पर जन्म लिया है वहाँ अपनी जन्मभूमि के लिए अपना सब कुछ न्योछावर एक देशप्रेमी (मनुष्य) ही कर सकता है।

हमारे अच्छे मनुष्य बनने में धर्म का विशेष महत्व है, किसी कवि द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'Selected works of marks an angles', में जब उस कवि से पूछा गया कि What is religion. तो उसने उत्तर दिया - duty is my religion. अर्थात् कर्तव्य ही धर्म है। हमें अपने सारे कार्य धर्मानुसार करने चाहिए जिसके अन्दर धर्म का थोड़ा भी अंश नहीं है वह अधर्मी है और एक अच्छा मनुष्य क्या, वो तो जानवर कहलाने लायक भी नहीं रहेगा क्योंकि सभी उन्नतियों का मूल धर्म है।

किसी कवि द्वारा यह भी कहा गया कि अच्छा मनुष्य बनने के लिए मनुष्य के अन्दर आत्म संतुष्टि का होना बहुत आवश्यक है Because satisfaction is two east goal of the man's life. ऐसा करने से मनुष्य के अन्दर स्वतः ही सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उत्पन्न हो जाता है। यदि हमें अपने देश के प्रत्येक मनुष्य को अच्छा मनुष्य बनाना है तो हमें निष्ठा तथा समर्पण को जीवन में अपनाना होगा। तभी हम समाज में Human being स्थापित कर सकते हैं जिससे हम सभी को इन्सानियत रूपी अनमोल धन मिल जाता है।

इस प्राकर मैं अपने अन्तःकरण से प्रस्फुटित विचारों को भी सबके समक्ष रखकर यह कहना चाहता हूँ कि किसी भी कार्य को करते समय हमें वेद की इस ऋचा को नहीं भूलना चाहिए।

ओऽम् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रम् तन्न आसुव, कस्मैः देवाय हविषा विधेम्।।

अर्थात् -

O! Savitar all creating God.
Please keep for from as
All evils of thought work indeed.
Let us Attain,
What shall be beneficial to us.

नया छन्द फिर लिखता हूँ

- विश्वेश शुक्ल
(द्वादश 'क')

लो लिख डाली मैंने कविता,
अब खड़ी सामने बड़ी समस्या।

कैसे किसको मैं दिखलाऊँ,
कैसे सम्प्रेषित करवाऊँ।
डर लगता था उपहास न हो,
इन छन्दों का परिहास न हो।
मन मेरा डावाँडोल हुआ,
भूचाल हुआ भूडोल हुआ।

इस हलचल का भी कारण था,
मैं नहीं भूलता आज अभी तक,
जब मैंने उन छन्दों को जोड़ा था,
कुछ मूढ़ों ने उपहास उड़ा छन्दों को तोड़ा था।

उस दिन यह भावुक हृदय द्रवित हुआ,
फिर बिलख-बिलख कर रोया था।
आँखों से जल की धार बही,
पोछें भी कौन अकेला था।

पर समय चक्र क्या रुकता है?
यह समय पुनः गतिमान हुआ
वेदना हटी कुछ ज्ञान हुआ
तब भावों का आह्वान हुआ
फिर छन्दों का निर्माण हुआ।

वीणापाणि का ध्यान किया,
तब कविता का निर्माण किया।
अब कविता तो पूरी कर दी है,
सबके समक्ष भी रख दी है।
फिर गुरुओं ने आशीर्वाद दिया,
कुछ सरस्वती ने साथ दिया।

मैंने अपने भावों को जोड़ा है,
छल-कपट सभी कुछ छोड़ा है।
अन्तिम छन्दों में मैं कहता हूँ,
कवि के कवित्व में बहता हूँ।

अब हास करो उपहास करो,
जो जी में आये आज करो।
दो विदा अभी मैं चलता हूँ,
लो नया छन्द फिर लिखता हूँ।

ईश्वर की कृपा समझो

- सर्वेश वर्मा
(नवम 'क')

एक बार एक गाँव में बाढ़ आने के खतरे से सभी गाँव वाले गाँव छोड़कर भाग रहे थे। सिवा एक आदमी के, जिसने कहा, 'ईश्वर मुझे बचाएगा। मुझे पूरा भरोसा है।' पानी जब बढ़ा तो उसे बचाने के लिए एक जीप आई, मगर उस आदमी ने मनाकर दिया और कहा - 'ईश्वर मुझे बचाएगा, मुझे पूरा भरोसा है।' जब पानी का स्तर और बढ़ा तो वह दूसरी मंजिल पर चला गया और एक नाव उसके बचाव के लिए आई, उसने फिर इंकार कर दिया और कहा- 'ईश्वर मुझे बचाइएगा, मुझे भरोसा है।' इस तरह पानी का स्तर बढ़ता गया और वह आदमी मकान की छत पर चढ़ गया। इस बार एक हैलीकाप्टर उसे बचाने के लिए आया, उसने फिर वही बात दोहराई कि ईश्वर मुझे बचाएगा, मुझे भरोसा है। आखिरकर वह डूब कर मर गया। मर कर जब वह ईश्वर के पास पहुंचा तो उसने गुस्से से पूछा- 'मुझे तुम पर पूरा भरोसा था, तुमने मेरी प्रार्थना को अनसुना क्यों कर दिया और मुझे बचाया क्यों नहीं? तब ईश्वर ने कहा - 'तुम क्या समझते हो कि वह जीप, नाव और हेलीकाप्टर किसने भेजे थे?'

❖

किसका प्रेमी है आसमान?

- शूरवीर सिंह
(दशम 'ख')

सुनो जरा हे आसमान
कितने विस्तृत कितने महान!
जैसे हीरो की सुघर खान,
बिल्कुल गंभीर बिल्कुल समान!

न कोई आदि न कोई अन्त!
लगते हो जैसे विरक्त सन्त,
फिर क्या वियोग जो नित नितान्त?
करते हो जग बहुधा अशान्त।

क्यों विरहाकुल हो करते हो?
यह सारा जग जलाक्रान्त,
क्यों सहते इतना तीव्र ताप?
क्यों करते हो ये तप महान?

कौन तुम्हारा है अभीष्ट?
किसके प्रेमी हे आसमान।

❖

कुछ प्रेरक वाक्य

- हिमांशु तिवारी
(दशम 'ख')

- *जीतने की इच्छा सभी में होती है, मगर जीतने के लिए तैयार करने की इच्छा बहुत कम लोगों में होती है।*
- विंस लॉम्बर्डी

- *अगर आप सचमुच सफल होना चाहते हैं, तो उन कामों को करने की आदत डालिए जिन्हें असफल लोग नहीं करना चाहते हैं।*
- जेम्स अलबरी

- *जिम्मेदारियाँ उस व्यक्ति की तरफ खिंची चली आती है, जो उन्हें कंधे पर उठा सकता है।*
- एल्बर्ट हब्बर्ड

- *अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितनी कि किसी काम को सही ढंग से सीखने की इच्छा न होना।*
- बेंजामिन फ्रैंकलिन

❖

मेरी प्यारी नीराजन

- सुप्रिय मणि शुक्ल
(अष्टम 'ख')

मेरी प्यारी है नीराजन,
कितनी प्यारी-न्यारी है।
दिखने में तो लगती सुन्दर,
पढ़ने में भी न्यारी है।

लेख, कहानी, कविता सब कुछ,
छात्रों ने छपवाये हैं।
कहीं आँखों में आँसू आये,
कहीं हँसी भी आयी है।

हम सब मिलकर इसको देखें,
औरों को भी दिखलायें।
अच्छी-अच्छी बात ग्रहण कर,
अपना ज़ीवन सफल बनायें।

❖

स्वागत करने का तरीका

- सुप्रिय मणि शुक्ल
(अष्टम 'ख')

- *इंग्लैण्ड के लोग स्वागत करने के लिए अपना टोप उतारते हैं।*
- *तिब्बत के लोग स्वागत के लिए जीभ निकालते हैं।*
- *चटगाँव के लोग स्वागत के लिए नाक रगड़ते हैं।*
- *अफ्रीका के लोग स्वागत के लिए एक-दूसरे के कपड़े उतारते हैं।*
- *आस्ट्रेलिया के लोग स्वागत के लिए पानी डालते हैं।*
- *मंगोलिया के लोग स्वागत के लिए एक-दूसरे के बाल सूँघते हैं।*
- *अरब के निवासी स्वागत के लिए जमीन पर घुटने टेकते हैं।*
- *जापान के लोग स्वागत के लिए जूते उतारते हैं।*
- *पाकिस्तान के लोग ठोढ़ी पर हाथ लगाते हैं।*
- *भारत के लोग स्वागत के लिए हाथ जोड़ते हैं।*

❖

विशेष जानकारियाँ

- सुप्रिय मणि शुक्ल
(अष्टम 'ख')

सिकन्दर के माता-पिता का नाम	- फिलिप तथा सुबनिया
विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर	- दक्षिण अफ्रीका
मुँह में अण्डा रखने वाली मछली	- कैट फिश
विश्व का सबसे लम्बा पुल	- चीन में
खूनी लाल रंग की नदी	- स्पेन की रियोटिन्टा
वाद्य की तरह बोलने वाला पक्षी	- विर्टन पक्षी
आँखें बन्द करके भी देखने वाला जीव	- स्कंक

❖

वो दशहरे की रात!

- प्रणव त्रिपाठी (नवम 'ख')

पात्र परिचय

सलीम - आयु 14 वर्ष किसी विद्यालय का छात्र

अहमद - सलीम के दादा, आयु 70 वर्ष

अमरनाथ - कश्मीरी पंडित, अहमद का दोस्त

स्थान - श्रीनगर का कोई घर

समय - शाम के 4.30 बजे।

(अक्टूबर का समय है, सर्दी ने अपने पाँव पसार लिए हैं, कश्मीर के किसी घर में एक बूढ़ा बैठा हुआ है तथा इतनी देर में एक बालक आकर उससे कहता है।)

सलीम - चलो ना! बड़े अब्बू मैदान चलें।

अहमद अली - तू किस मैदान की बात कर रहा है?

सलीम - वही मैदान जहाँ पर एक बहुत बड़ा पुतला है। लोग कह रहे हैं कि इसे जलाया जायेगा। मेरा दोस्त प्रकाश कहता है कि आज दशहरा है। दशहरे के लिए रावण का पुतला जलाया जाता है। मगर इससे पहले यह रावण का पुतला कभी नहीं जलाया गया।

अहमद - (अपने मन में) (दशहरे की पुरानी स्मृतियों को याद करने की कोशिश करके)

दशहरा ... रावण का पुतला

सलीम - बोलते क्यों नहीं?

अहमद - तू बहुत बोलता है। चलो चलते हैं।

(सलीम खुशी से उछलता है। अब भी अहमद उन पुरानी बातों को याद करने की कोशिश कर रहा है।)

सलीम - (पुतले को देखकर) वो देखो! कितना ऊँचा पुतला।

अहमद - मैं अपना चश्मा घर पर भूल गया। मुझे तो कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।

सलीम - अच्छा! मैं अपने दोस्तों के साथ जा रहा हूँ।

(सलीम चला जाता है अहमद पुतले को देखकर उलझन में है।)

(जम्मू से श्रीनगर जाने वाली बस मैदान में आकर रुकती है। अहमद बस से उतरने वाले यात्रियों को टकटकी लगाकर देख रहा है। इतने में एक वृद्ध पुरुष बस से उतरकर अहमद की बेंच पर बैठ जाता है। अहमद उसे पहचानने की कोशिश करता है।)

अहमद - (अपने मन में) पता नहीं क्यों यह व्यक्ति मुझे जाना-पहचाना लगता है?

(व्यक्ति भी अहमद की तरफ देख रहा है।)

व्यक्ति (आश्चर्य से) तुम मुझे नहीं पहचानते। मगर मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूँ। मैं तुम्हारे बचपन का दोस्त अमरनाथ!

अहमद - अमरनाथ! दशहरा ... अब सब मुझे याद आ गया।

अमरनाथ - हम दोनों पढ़े, खेले, जीवन के दो चरण बिताए। उस दशहरे की काली रात को मुझे अपना पैतृक घर छोड़ना पड़ा। मैं तुमसे भी बिछड़ गया।

अहमद - मगर अब तुम कहाँ रहते हो?

अमरनाथ - अब मैं चण्डीगढ़ में अपने लड़के व बहू के साथ रहता हूँ। तुम अपने बारे में कुछ बताओ।

अहमद - तुम्हारे जाने के बाद ही साल भर बाद मेरी बीबी अल्लाह को प्यारी हो गयी और कुछ साल पहले इन दरिंदे आतंकवादियों ने रिज़वान व उसकी बीबी को भी मुझसे छीन लिया। अब तो उसका बेटा ही मेरे घर का चिराग है। तुम बताओ, तुम यहाँ कैसे?

अमरनाथ- मैं हर बार नवरात्रि में जम्मू आता हूँ। इस बार सुना था कि 18 साल बाद घाटी में रावण जल रहा है तो यहाँ चला आया पुरानी यादों को ताजा करने।

अहमद - तो क्या अब तुम श्रीनगर नहीं आते?

अमरनाथ - यहाँ कौन आयेगा आतंक के साये में?

तुम्हें याद है हम इन दिनों रात भर रामलीला देखा करते थे।

अहमद - और शंकराचार्य मन्दिर से शेर-ए-कश्मीर मैदान तक जो जुलूस निकलता था उसमें कश्मीरी पंडितों से ज्यादा मुसलमान होते थे।

अमरनाथ - अब तो घाटी में शायद ही कभी एकता, शांति व साम्प्रदायिक सद्भाव बने। कश्मीर के मुसलमान तो कश्मीरी पंडितों के विरुद्ध तो नहीं थे।

(अहमद और अमरनाथ पुरानी बातें याद करके खिलखिलाते हैं किन्तु बातों-बातों में उन्हें पता ही नहीं है कि तीन घंटे कब बीत गये। उन्होंने तो पुतले की तरफ तथा आतिशबाजियों की तरफ देखा ही नहीं।)

सलीम - अब्बू जान! मैं कब से आपको आवाज़ दे रहा हूँ। मेरे सभी दोस्त घर चले गये। आप अभी तक यहीं बैठे हैं।

कंडक्टर - आप अभी तक यहीं हैं। सारे लोग बस में बैठ चुके हैं।

(अहमद व अमरनाथ दोनों की ही आँखों में आँसू हैं।)

अहमद - इसी दशहरे के दिन अठारह साल पहले तुम यहाँ से गये थे। मगर आज तुम फिर आये हो तथा फिर जा रहे हो।

मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि यह मिलन है या वापसी?

(अमरनाथ व अहमद दोनों ही भारी कदमों से अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करते हैं।)

अहमद - (मन में) पता नहीं कश्मीर में कश्मीरी पंडितों की वापसी कभी हो पायेगी या नहीं?

❖

इनके दुम जो होती

- मंगलम् मिश्र
(सप्तम 'ख')

मैं अपने घर के लॉन में बैठा समाचार पत्र पढ़ रहा था। तभी हमारी पालतू पूसी आई और अपनी दुम हिलाने लगी। मेरे मन में एक विचार आया कि यदि सभी जानवरों के साथ-साथ मनुष्य के भी पूँछ होती तो ... ।

यदि मनुष्य के दुम होती तो मनुष्य नाई के साथ-साथ अपनी दुम की भी सैटिंग करवाता। बाजारों में दुम के कई सौन्दर्य प्रसाधन भी बिकते। दर्जी अपनी दुकान के बाहर साइन बोर्ड लगवाता - 'दुम फिटिंग का एकमात्र स्थान' हमारे यहाँ दुम की फिटिंग उचित दाम पर की जाती है।' दर्जी ग्राहक की सुविधा के अनुसार दुम के ऊपर चेन लगवाता, ताकि जब मन करे, दुम को ठण्डी-ठण्डी हवा खिलाई जा सके। लेकिन महिलाओं को बड़ी परेशानी होती। वे पहले अपनी दुम को गोद में रखती ऊपर अपने बच्चे को। बसों और टेम्पो में कंडक्टर लोगों को ठूंस-ठूंस कर भर लेते और फिर चिल्लाते - 'बहन जी। अपनी दुम को अपनी गोद में रखिये। दूसरी सवारी भी आयेगी।'

विद्यालयों में छात्र छुट्टी का प्रार्थना पत्र लिखते हैं- कभी कोई छात्र प्रार्थना पत्र में लिखता - 'आज मेरी दुम में दर्द हो रहा है, इसलिए विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आजकल विद्यालयों में पढ़ाई का बोझ बहुत बढ़ गया है। इससे मुक्ति पाने के लिए छात्र कुछ किताबें बस्ते में टांग लेता और कुछ-कुछ किताबें अपनी दुम में लपेट लेता।

दुम से नेताओं को बहुत लाभ मिलता। वे अपने दल के झंडे को अपनी दुम में लपेट लेते और दुम को ऊँची करके भाषण देते। दूर से ही समझ में आ जाता कि अमुक दल के नेता भाषण दे रहे हैं।

दुम की वजह से चोर-उचक्कों को सदैव सावधान रहना पड़ता। पता चला भागते समय कहीं सिपाही के हाथ में दुम आ गयी तो बेचारा सीधा जेल जाये।

दुम होती तो बच्चा अँगूठा न चूसकर अपनी दुम को चूसता। माँ इस मौके का लाभ उठाती और दुम पर शहद लगा देती। दुम को चूसते-चूसते बच्चा सो जाता और माँ मजे से घर का काम-काज निपटाती।

अब बहुत हो गया। आप ही बताइये कि दुम के बारे में आपके क्या ख्याल हैं?

हे नर! दीनता को त्याग

- गौरव मिश्र (सप्तम ख)

दीनता कूँ त्यजति नर अपना स्वरूप देखि।
तू तो शुद्ध ब्रह्म अज को प्रकाशी है।।

हे नर तो तू चैतन्य स्वरूप ब्रह्म है। तू ही अज को प्रकाशित करता है व स्वयं ही उसमें फँसता है। तू ही चोरी करता है व बाद में पकड़ा जाता है, तू ही रस्सी को साँप बनाता है तथा बाद में स्वयं ही उससे थर-थर काँपता है। तू ही ईश्वर की चेतना पर अपनी कल्पनाओं की झड़ी लगाकर जीवन भर पछताता है। तू ईश्वर पर विश्वास नहीं करता है व सोंचता है कि 'ये नहीं किया तो वह क्या कहेगा?' लोग क्या कहेंगे? संसार क्या कहेगा? ये तो हमारा फर्ज है। लेकिन ये फर्ज आये कहाँ से ये वह नहीं सोचता है। संसार में कठिन कुछ नहीं परन्तु

यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलभूस्थिरम्

चंचल व अस्थिर मन जहाँ-जहाँ जाता है वहाँ से कल्पनाओं का बोझ लादकर परेशान होता रहता है। इसीलिए कहा गया है-

यः मनसा सीव्यति सः मनुष्यः

जो मन से ईश्वर से सम्बन्ध बना ले वही मनुष्य है।

मनुष्य को कहे गये अमृत वचन -

बल दूसरों के हित के लिए ज्ञान, स्वयं के लिए व विश्वास परमात्मा से सम्बन्ध स्थापना के लिए आवश्यक है।

वेदोऽलेखी मूलधर्मम्

वेदों ने धर्म को ही मूल आधार बताया है।

आज नहीं कल ये कमजोर लोगों का रुदन है वह कल नहीं अभी महापुरुषों का ध्येय है।

सिर को सूर्य के ताप से व हृदय को पापों से बचाओ।

कर्म सभी प्रकार के न करो।

वे लोग जो पाप का खाते हैं उनकी भूख कभी नहीं मिटती।

हृदय को इतना कठोर बनाओ कि संसार की कोई बात उसे न चुभे परन्तु वह ईश्वर के रंग में रंग जाये।

शरीर अन्दर की आत्मा का वस्त्र है, वस्त्र को वस्त्र पहले वाले से अधिक प्रेम मत करो।

परमात्मा तुझसे पृथक नहीं, दूर नहीं, तू उसे ढूँढ नहीं सकता और स्वयं को बुद्धिमान कहता है।

परमात्मा का ध्यान आत्मनिर्भर होकर करो।

और क्या लिखूँ?

- रौनक कमल
(नवम 'ग')

स्कूल में मैगजीन छप रही है,
मिला है मुझे समाचार।
सोचा मैं भी लिख डालूँ,
आर्टिकल दो - चार।
कविता लिखूँ? कहानी लिखूँ,
या फिर कोई लेख।
इसी सोच में बैठा मैं,
सिर घुटनों पर टेक।।
पूछा मम्मी विषय बताओ,
या कोई इतिहास।
जिसे पढ़ें सब बड़े मजे से,
और न हों संत्रास।।
सोचा बहुत पर लिखने को,
मिली न कोई चीज।
सोच-सोचकर भूख बढ़ गयी,
खाना मिले लजीज़।।
इन्हीं विचारों में खोकर,
एक तुक्का लगा सटीक।
कवित एक बनाई मैंने,
बुरी लगे या ठीक।।

❖

उफ़ ये पढ़ाई

- यश कुमार उपाध्याय
(सप्तम 'ख')

उफ़्फ़ ये पढ़ाई किसने बनाई,
कहाँ से जन्मी कहाँ से आई।
पापा कहते पढ़ो कैमिस्ट्री,
याद करो इक्केशन।।
मम्मी कहती पढ़ो हिस्ट्री,
रटो सिविलाइजेशन।
भैया कहते पढ़ो मैथ तुम,
सीखो कैलक्यूलेशन।।
आ रहे हैं एग्जामिनेशन,
बढ़ने लगा है टेंशन।
खत्म परीक्षा का मौसम हो,
करूँ मैं सेलिब्रेशन।।
प्रभु तू हम को शक्ति देना,
डर को मन से हर लेना।
हम को पास जरूर कर देना,
करें हम सैलीब्रेशन।।

❖

पढ़ो और हँसो

- यश कुमार उपाध्याय
(सप्तम 'ख')

अर्पिता : (मम्मी से) मैं कहाँ मिली थी?

मम्मी : बेटे, हम तुम्हें उत्तम नगर के बाजार से लाये थे।

अर्पिता : जरूर वहाँ 'सेल' लगी होगी।

मम्मी : तुम्हें कैसे पता चला?

अर्पिता : अपनी उंगलियाँ देखकर। सब अलग-अलग साइज की हैं। 'सेल' में ऐसा ही माल मिलता है।

कई चीटियाँ तालाब में तैर रही थीं कि अचानक एक हाथी तालाब में कूद गया। सभी चीटियां शोर मचाते हुए तालाब से बाहर आ गयीं। एक चीटी हाथी की पीठ पर चढ़ गयी। अब बाहर खड़ी सभी चीटियाँ जोर-जोर से चिल्ला-चिल्लाकर उस चीटी से कहने लगीं- डुबो-डुबो कर मार डाल ... ।

एक अपराधी को फाँसी पर लटकाने से पहले जेलर ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो अपराधी बोला- मुझे तरबूज खाना है।

जेलर - वो अभी नहीं मिलेगा। वह तो 6 माह बाद ही मिलेंगे।

अपराधी - तो मैं 6 माह तक इन्तजार कर लूँगा।

लाली बारिश में सड़क पर घूम रही थी। घूमते-घूमते उसका पैर रपट गया और वह सड़क पर गिर पड़ी। तभी ऊपर से बिजली तड़की तो लाली बोली - वाह भगवान! पहले गिराते हो फिर फोटो खींचते हो।

लाली : (मोना से) जरा ये तार पकड़ना।

मोना : (झटका लगने पर) लाली इसमें तो करण्ट है।

लाली : ठीक है मोना मुझे यही मालूम करना था।

श्रद्धांजलि : श्री त्रिलोचन जी

- संकल्प
(द्वादश 'क')

दो कंबलों को बना तकिया
सफेद पलस्तर छोड़ती दीवार के सहारे
टिके बिस्तर और बिखरी किताबें
चारो ओर, बीच बैठ उनके
वह कबीर जीता-जागता
वह लेखक अमर्त्य
कवि जनपद का
दिखता एक नूह की भाँति
इच्छुक जो बचा ले जाने का
नाव में सभी भाषायी प्रजातियाँ
दिखता हर जगह मुझे कम से कम
बहुत अन्तर छोटे शहरों के
या बाहर बड़े शहरों के
जहाँ भारत बसता है।
चला गया वह बताते यह
कि मीलों चलना है
सोने से पहले।।

आधुनिक हिन्दी कविता के किवदंती और प्रगतिशील हिन्दी कविता के वृहतत्रयी का एक वाक्यांश यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा जो उनके पुण्य रूपी चरित्र को एक-एक पंखुड़ी की तरह खोल देगा, 'मत घबराओ, ऐसी बोलियों को विकसित करो, जिनके बारे में लिखा नहीं गया है। मल्लाह, किसान और गरड़िये की भाषा खोजो। उनके शब्दों को भाषा की मुख्य धारा में लाओ। फिर देखो, तुम्हारी भाषा इतनी मधुर हो जायेगी कि उसके संगीत की विजय होगी।'

क्या आप जानते हैं?

- यश कुमार उपाध्याय
(सप्तम 'ख')

- ☐ *अधिकतर स्तनपायी प्राणियों की मौत का जिम्मेदार मच्छर होता है।*
- ☐ *साँप खुद के जहर से अपनी रक्षा करने में सक्षम होते हैं।*
- ☐ *झींगुर सबसे तेज जीव है। यह एक सेकेण्ड में एक मीटर की दूरी तय कर लेता है।*
- ☐ *मजदूर चीटियाँ सात वर्षों तक जीती हैं। लेकिन रानी चीटी लगभग 15 वर्ष तक जी सकती है।*
- ☐ *स्तनपायी प्राणियों का रक्त लाल रंग का होता है। जब कि कीटकों का पीला और झींगों का नीला।*
- ☐ *चिम्पैंजी आइने में खुद को पहचानना सीख सकते हैं, लेकिन बन्दर नहीं।*
- ☐ *जूडो के खेल में सर्वश्रेष्ठ दक्षता पुरस्कार शिहान में होता है।*

❖

मुझे वोट दो

- अक्षत श्रीवास्तव
(सप्तम 'ख')

मैं नेता हूँ
तुम मुझे वोट दो
मैं तुम्हें गरीबी दूँगा
जतिवाद दूँगा
दंगा कर्फ्यू अलगावाद दूँगा
मैं हूँ नेता,
तुम मुझे वोट दो,
मैं जाते ही दल बदल दूँगा
पूरी दुनिया से कर्ज लूँगा
देश तोड़ने की कोशिश करूँगा।
यह प्रदेश अपने बेटे को बेच दूँगा।

मैं हूँ नेता
तुम मुझ वोट दो
मैं तुम्हारे बच्चों से आत्मदाह करवाऊँगा,
मैं अपनी बीबी-बच्चों को मंत्री बनाऊँगा,
मौका लगा तो पाँच करोड़ में बिक जाऊँगा,
कसम खाता हूँ पूरा वादा निभाऊँगाञ
राजधानी में बैठकर खूब मलाई खाऊँगा।।

❖

पढ़ना-लिखना

- आदेश अग्रवाल (नवम 'ग')

पढ़ा लिखा होना जीवन में
होता बहुत जरूरी है।
बिना पढ़े जिन्दगी हमारी
पूरी नहीं अधूरी है।।
जीवन के सब काम काज अब,
लिखा पढ़ी में होते हैं।
अक्सर अनपढ़ ठगे गये हैं,
सब कुछ अपना खोते हैं।
माना शुरू-शुरू में पढ़ना,
लिखना नहीं सुहाता है।
किन्तु जहाँ पढ़ने की आदत,
पड़ी मजा तब आता है।
स्वयं सीख ले पढ़ना लिखना,
औरों को फिर पढ़ा सकें।
पढ़-लिखकर अपने विवेक से,
भला, बुरा पहचान सके।।
गाँव नगर हर डगर-डगर में,
शिक्षा का अभियान चले।
पढ़ें-लिखें जब रहे प्यार से,
जीवन फूले और फले।।

आज के समय में पढ़ा लिखा होना बहुत आवश्यक है। आज भी भारत की बहुत बड़ी जनसंख्या अशिक्षित है। यह ठीक नहीं है। प्रस्तुत कविता पढ़ने-पढ़ाने की प्रेरणा देती है।

- संपादक

वृक्ष पहेलियाँ

- सौरभ रस्तोगी
(द्वादश 'क')

तीन अक्षर के नाम वाला।
इसका फल है काला काला।।
मधुमेह रोगी का हितैषी।
छाया होती है छत जैसी।।

चार अक्षर में नाम आता।
जाटों में गोत्र कहलाता।।
इस पेड़ की अति गहरी होती है छाया।
फर्नीचर इमारत बने लकड़ी की माया।।

तीन अक्षर का नाम बताऊँ।
हाथ रंगने के काम आऊँ।।
मेरी पत्तियाँ हैं चमत्कारी,
सकल नारियों को है प्यारी।।

एक ऐसा वृक्ष होता,
जिस पर फल लगे सकल वर्ष।
सब्जी, पानी, सलाद,
किसी में भी डालो रस।।

दो अक्षर का मेरा नाम,
फल आता खाने के काम।।
कहीं लगता मेरा तोल।
कहीं गिनकर लागे मोल।।

सांप के फन जैसा पत्ता मेरा।
काटूं तब तो देखूँ दम तेरा।।
चार अक्षर का नाम बताऊँ।
औषध बाड़ के काम आऊँ।।

तीन अक्षर का होता मेरा नाम।
आऊँ पागल कुत्ते की दवा के काम।।
प्रथम कटे तो महादेव बनता।
मेरी बाड़ पशु नहीं चरता।।

उत्तर - (1) जामुन, (2) सागवान, (3) मेंहदी, (4) नींबू, (5) केला, (6) नागफन, (7) थूहर

मूर्ख राजा और बुद्धिमान महामंत्री

- रोहन शर्मा
(सप्तम 'ख')

पुराने समय की बात है । दक्षिण भारत में एक मूर्ख राजा राज करता था। राजा के मंत्रिमंडल में एक महामंत्री बहुत चतुर था। इसलिए वह राजा की मूर्खता का लाभ उठाने से नहीं चूकता था। एक दिन शाम के समय राजा के महल के पीछे सियारों का झुंड आ गया और सभी सियार जोर-जोर से 'हूँ'-'हूँ' कर चिल्लाने लगे। राजा ने इनकी आवाज सुनकर अपने महामंत्री को बुलाया और पूछा - 'ये आवाजें किसकी हैं?' महामंत्री ने राजा को मूर्ख बनाने का अवसर देखा और बोला - 'महाराज यह आपकी प्रजा है। राजा ने पूछा - 'ये आवाजें किसकी हैं, प्रजा की? यह प्रजा क्या चाहती है?' महामंत्री ने कहा- 'महाराज आपकी प्रजा कह रही है कि ठंड बहुत है और हमारे पास ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़े, रजाई आदि नहीं हैं।' राजा को दया आ गयी। उसने तुरन्त आदेश दिया, 'सबको गर्म कपड़े, कंबल, रजाई आदि तुरन्त दी जाये।'

महामंत्री ने कहा- 'जो आज्ञा महाराज।' महामंत्री ने राजकोष से दो सौ स्वर्ण मुद्राएँ प्रजा को गर्म कपड़े आदि देने के लिए लीं तथा अपने पास रख लीं। उसने सेवक को आदेश दिया कि इन सियारों को यहाँ से भगा दो। सेवक ने वैसा ही किया। महामंत्री यह जानता था कि सियारों की आदत होती है कि वे जिस जगह एक दिन जाते हैं, लगातार कई दिन उसी समय उसी स्थान पर बार-बार जाते हैं। इसलिए महामंत्री ने उस सेवक को प्रतिदिन शाम को उन सियारों को वहाँ से भगाने का कार्य सौंप दिया। कुछ दिनों तक वह सियारों को भगाता रहा लेकिन एक दिन सेवक बीमार पड़ गया।

सियार निश्चित समय पर राजमहल के पीछे जा कर चिल्लाने लगे। राजा उनकी आवाज सुनकर चौंका और तुरन्त महामंत्री को बुलाया, और पूछा - 'ये प्रजा जन दुबारा क्यों आ गये हैं और क्या कह रहे हैं? महामंत्री घबराया, फिर उसने बात को संभालते हुए कहा, 'महाराज मैं अभी उनसे मिलकर आता हूँ और पूछता हूँ कि वे क्या कह रहे है। महामंत्री वहाँ से चला गया। महामंत्री सोच रहा था कि सियार तो रोज आते रहेंगे और यदि सेवक इसी तरह धोखा देता रहा तो राजा नाराज होकर उसे फाँसी ही दे देगा। तभी उसकी कुशाग्र बुद्धि में एक उपाय सूझा। कुछ समय बाद में महामंत्री ने राजा को बताया, 'महाराज मैं प्रजा से पूछकर आया हूँ। उन्होंने बताया कि उस दिन हम महाराज से गर्म कपड़े ले गये थे परन्तु उनको धन्यवाद देना भूल गये थे। कल ही हमारे बुजुर्ग साथी ने बताया कि सब महाराज को धन्यवाद दो। उनकी जय-जयकार करो।

इसीलिए यह आपकी जय-जयकार करने आये हैं तथा यह कह रहे हैं कि प्रतिदिन शाम को एक बार अवश्य आपकी जय-जयकार करने आया करेंगे। राजा ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि इन प्रजा जन को हर शाम भोजन करवाया जाये। सियार प्रतिदिन आते और हुआ-हुआ करते। महामंत्री राजकोष से प्रतिदिन उनके भोजन के नाम पर एक मोटी रकम प्राप्त कर लेता। राजा भी प्रसन्न था और महामंत्री भी।

हँसना मना है

- रोहन शर्मा
(सप्तम 'ख')

अध्यापिका (छात्र से) - तुम्हें यह नहीं पता कि 5 और 3 का जोड़ कितना होता है? अरे 5 और 3 मिलकर आठ होते हैं।

छात्र - लेकिन मैडम कल आपने 4 और 4 बराबर 8 बताया था।

राजेश (फोटोग्राफर से) - अंकल, मेरी तस्वीर गर्म पानी में धोना।

फोटोग्राफर - क्यों?

राजेश - आजकल सर्दी बहुत है। मुझे ठंड लग जायेगी।

संतराम (शुभम् से) - जब बारिश होती है तो बिजली क्यों चमकती है?

शुभम् - यार! जब बारिश होती है तो भगवान टार्च जलाकर देखते हैं कि कहीं सूखा तो नहीं रह गया।

यश : (अक्षत से) मेरा भाई बहुत फैशनेबल है, सारा दिन कपड़े ही बदलता रहता है।

अक्षत : तुम्हारा भाई कितने साल का है।

यश : चार महीने का।

माँ - (बेटे से) बेटा शैतानी मत करो, मैं तुम्हें मिठाई दूँगी।

बेटा - लेकिन पापा ने कहा था कभी किसी से रिश्वत मत लेना।

अविचल साधना, अक्षत संकल्प

- अक्षय अवस्थी
(द्वादश 'क')

जग में सचर अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन भर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।।

मनुष्य का स्वभाव बड़ा विचित्र है। ऊँचाई के मानदंडों को छू चुके, सर्वोच्चता का सीमोल्लंघन करने को आतुर अपने ही साथी को देखकर उससे प्रेरणा न प्राप्त कर उसके अथक तप व परिश्रम का एक झटके में मखौल उड़ा देना, उससे ईर्ष्या करने लगना, यह सामान्य मनुष्य की प्रवृत्ति है। ऐसे लोगों को भीड़ की संज्ञा दी जाती है और भीड़ वह होती है जो दूसरों की प्रशंसा या निन्दा तो कर सकती है परन्तु स्वयं कुछ नहीं कर सकती।

महान लोग इसी भीड़ में से निकलते हैं। ये वे विरले होते हैं जो भीड़ की प्रशंसा या निन्दा से अप्रभावित रहकर अपना कर्म निरन्तर करते रहते हैं। अपने संकल्प-साध्य लक्ष्य को पूर्ण करने की अविचलित साधना ही महान लोगों के जीवन का पाथेय होती है।

यहाँ कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि महानता तो ईश्वर प्रदत्त होती है। मनुष्य को उसके प्रारब्ध से मिलती है। महान लोग पूर्व प्रतिभा के धनी होते हैं। यद्यपि मैं भाग्य में विश्वास नहीं करता परन्तु इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि कि मनुष्य का कर्म ही उसका भाग्य बनता है। श्रीमद् भगवद् गीता का 'कर्मयोग' इसकी समीचीन विवेचना करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसे कौन से गुण हैं जो एक सामान्य व्यक्ति को महान बना सकते हैं। यद्यपि महान बनना कोई हँसी खेल नहीं। वर्षों की तपस्या के पश्चात् एक व्यक्ति महानता प्राप्त कर पाता है। फिर भी कुछ बिन्दुओं का उल्लेख उपयुक्त प्रतीत होता है जो कि संभवतः महानता की भूमिका लिखते हैं। इनमें सर्वप्रथम गुण है- अभय। स्वामी विवेकानन्द ने भी इसी अभय को मानव के अवचेतन मन में अवस्थित परमात्मांश की संज्ञा दी है। अभय का अर्थ है- सभी चिंतानों, ईर्ष्या, क्रोध, लोभ आदि को छोड़कर आनंदित रहना। एकात्मता स्तोत्र का प्रथम श्लोक -

ऊँ नमः सच्चिदानंद, रूपाय परमात्मने।
ज्योतिर्मय स्वरूपाय, विश्वमांगल्य मूर्तये।।

इसी सच्चिदानन्द की व्याख्या करता है-

गीता भी 'अभयं सत्त्वं संशुद्धिः' का पाठ पढ़ाती है। भगवान कृष्ण स्वयं कहते हैं -

।। हर्षामर्ष भयोद्वेगैर्मुक्तो यः सच मे प्रियः।।

यद्यपि अभय को परिभाषित करना सरल नहीं परन्तु फिर भी जो मानसिक प्रावस्था मनुष्य को आनन्द से विचलित कर दे, भय है, इसी भय को समाप्त करना ही अभय है।

वस्तुतः अभय निरन्तर अभ्यास से आता है। भय उत्पन्न होते ही उसे हटाना पड़ता है।

अभय आते ही हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। हम स्वयं को समाज के समक्ष प्रस्तुत कर पाने में समर्थ होते हैं, हो सकता है कि प्रारम्भिक असफलता से कुछ विचलन हो जाये परन्तु बारम्बार प्रयास करने पर हमें सफलता अवश्य ही मिलती है।

छोटी-छोटी सफलताएँ मिलने पर समाज हमें जानने लगता है, हर कोई हमारा उत्साह व आत्मविश्वास बढ़ाता है। तब हमें लगने लगता है कि सचमुच में हम भी सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकते हैं। परन्तु कैसे?

इसका उत्तर है अभ्यास। संसार में सब कुछ अभ्यास साध्य है। मन पर नियंत्रण का अभ्यास, एकाग्रता का अभ्यास, आत्मविश्वास का अभ्यास। संसार में सब कुछ अभ्यास से आता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति के तो कदमों में ही सारा संसार होता है।

अब आती है सर्वोच्च पद पर जाने की इच्छा शक्ति व फिर संकल्प। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक संकल्प साधना और फिर उसे अटूट रखना, यही एक श्रेष्ठ कर्मयोगी के लक्षण हैं। संकल्प अटूट तभी होगा जब हमारे पास विश्वास हो, विश्वास ईश्वर पर, विश्वास स्वयं पर। इच्छा शक्ति व संकल्प एक महान व्यक्ति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण हैं। जो लोग प्रतिदिन संकल्प लेकर प्रतिदिन तोड़ते हैं, वे अधर्मी व नास्तिक होते हैं।

और इस संकल्प के पश्चात् आरम्भ होता है एक लम्बी व अवचलित साधना का दौर जिसमें बाधाएं तो लाखों हैं परन्तु व्यक्ति का आत्मविश्वास उसे उसके संकल्प से हिलने नहीं देता। यदि व्यक्ति संकल्प तोड़ता है तो इसका अर्थ है कि उसे स्वयं पर विश्वास नहीं।

अब यह व्यक्ति विशेष की साधना, सम्पन्नता पर निर्भर करता है कि वह सफल होता है अथवा नहीं। विशेष बात यह है कि साधना सदैव व्यवस्था में बंधकर होती है।

जहाँ तक बाधाओं की बात है, वे कई प्रकार की हो सकती है। दूसरे लोग हमें विचलित कर सकते हैं अथवा हम स्वयं दूसरों से विचलित हो सकते हैं। यदि सपाट शब्दों में कहें तो जो भी परिस्थिति हमें संकल्पों से विचलित कर दे, बाधा है। बाधा हमारी सफळता भी हो सकती है, असफलता भी, निन्दा भी व स्तुति भी। परन्तु बाधाओं से भिड़ना ही तो मानव जीवन का लक्ष्य है। अपनी हर कमजोरी को तोड़कर रख देने की अकाट्य शपथ ही एक सामान्य व्यक्ति को महान बना सकती है। एक बार यह शपथ ले लेने पर बाधाएँ स्वयमेव हमारे सम्मुख घुटने टेक देती हैं।

इस सम्पूर्ण व अनवरत् चलने वाले प्रक्रम में आपका कोई आदर्श या गुरू भी अनिवार्यतः होना चाहिए जो सदैव आपके हृदय में रहे, जिसकी एक -एक बात आपके लिए शिरोधार्य हो जो सदैव आपके साथ रहते हुए आप पर नियंत्रण रख सके। आदर्श सदैव हमारे निकट का ही कोई व्यक्ति होता है। बात तो सभी की सुनी जाती है, परन्तु आदर्श का एक-एक वाक्य अमृत के समान होता है।

इस प्रकार हम स्वयं को ऊपर उठाने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं। इन सबके बिना सफलता संभव नहीं। दुनिया जिस प्रकार चल रही है, उसी प्रकार चलती रहेगी परन्तु प्रतिमान बहुत कम लोग स्थापित कर पाते हैं।

।। कोई चलता पद चिह्नों पर, कोई पद चिह्न बनाता है।।

यदि ऐसा हो जाये

- आदेश अग्रवाल
(नवम 'ग')

जग में यदि ऐसा हो जाये,
फिर तो मजा बहुत ही आये।
कौवा मीठा-मीठा बोले,
उल्लू दिन में निर्भय डोले।
चूहे खाने छोड़े बिल्ली,
उड़े गधे की कभी न खिल्ली।
चीता गीदड़ से घबराये,
फिर तो मजा बहुत ही आये।
श्रम का सबक लोमड़ी सीखे,
जोर-शोर से शेर न चीखे,
नहीं साँप में जहाँ जहर हो,
अक्ल भैंस में भरी अगर हो,
बंदर अदरक खुलकर खाये,
फिर तो ...
गिरगिट रंग बदलना भूले,
टहनी पर चढ़ हाथी झूले,
गायें हों सारी ही काली,
चीटीं करने लगे जुगाली,
पंचम सुर में गैंडा गाये,
फिर तो मजा बहुत ही आये।

❖

मेहनत

- प्रखर अवस्थी 'मृणाल'
(अष्टम 'क')

दे डाली जिसने ये शिक्षा,
ना माँगो तुम किसी से भिक्षा।
मेहनत करो कमाओ खूब,
खूब उगाओ धन की दूब।।

जिसने धन को सब कुछ माना,
अन्तिम लक्ष्य उसी को जाना।
उसका तो कल्याण नहीं है,
शांति और सुख नहीं कहीं है।।

मेहनत करो बढ़ो जीवन में,
नवल प्रसून खिलें उपवन में।
जो आलस में सोते रहते,
वे सब कुछ हैं खोते रहते।।

❖

आतंकवाद

- आकाश सचान
(नवम 'ग')

आतंक के माहौल में कब तक जियेगा आदमी,
एक दूजे का लहू कब तक पियेगा आदमी।
शुष्क है तू पत्थरों सा सिंह सा खूँखार है,
आज तेरे हाथ में बन्दूर है, तलवार है।

इस जहाँ के हर बड़े साम्राज्य को भी जीतकर,
आदमी का ही हृदय न जीत पाया आदमी।
इंसानियत का खून तेरा दीन है ईमान है,
तू दरिंदा है, न हिन्दू है न मुसलमान है।

थूकते हैं जानवर तुझपर तेरे दुष्कर्म पर,
आदमी को खुद निगलता जा रहा है आदमी।
पर्वतों को हर शिखर को रौंद डाला पाँव से,
नाप ली सागर की छाती अपने अनुपम दाँव से।

चाँद तारों पर खड़ा इतरा रहा है,
फ़र्क से आदमीयत तक पहुँच पाया न अब तक आदमी।
दे नहीं सकते अगर तुम एक को भी जिन्दगी,
जब एक भी लक्षण खुदाई का नहीं तुझमें है शेष,
तब न जाने खुद खुदा क्यूँ बन रहा है आदमी।

आतंक के माहौल में कब तक जियेगा आदमी,
एक दूजे का लहू कब तक पियेगा आदमी।

स्मरण योग्य बातें

- आकाश सचान (नवम 'ग')

लेना चाहते हो	-	आशीर्वाद लो।
पढ़ना चाहते हो	-	महापुरुषों की जीवनी पढ़ो।
चलना चाहते हो	-	सद्मार्ग पर चलो।
तोलना चाहते हो	-	वाणी को तौलो।
खाना चाहते हो	-	क्रोध को खाओ।
देना चाहते हो	-	क्षमादान दो।
करना चाहते हो	-	बड़ों की सेवा करो।
देखना चाहते हो	-	अपने अवगुणों को देखो।
जीतने के लिए कोई चीज है तो	-	प्रेम
पीने के लिए कोई चीज है तो	-	क्रोध
खाने के लिए कोई चीज है तो	-	गम
देने के लिए कोई चीज है तो	-	दान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो	-	दया
लेने के लिए कोई चीज है तो	-	ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो	-	सत्य

❖

फूल

- अंकित शर्मा (द्वादश 'क')

मैंने फूलों को खिलते देखा है।
खिलकर मुरझाते देखा है।।

उनका उल्लास देखा है।
उनका विलास देखा है।।

किन्तु सम्मान की आशा न देखी,
अपमान की निराशा न देखी।

खिलने की इच्छा देखी है और
उपवन को महकाने की इच्छा देखी है।

कलियों को खिलते देखा है।
पुष्पों को खिलते देखा है।।

उनका उल्लास देखा है।
उनका विलास देखा है।।

आइये सेतुबन्ध रामेश्वरम् की रक्षा करें ...

- श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री
(मुख्य छात्रावास अधीक्षक)

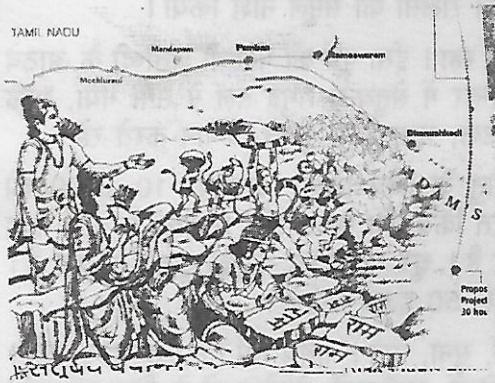

भगवान श्रीराम सेतुबन्ध का निर्माण करते हुए।

नासा द्वारा सेतुबन्ध का अंतरिक्ष से लिया गया चित्र।

विश्व में अनेक जातियां, धर्म, देश, अपनी धरोहरों की खोज पर, उनके संरक्षण पर अरबों डालर खर्च कर रहे हैं। हम भी खर्च कर रहे हैं पर अपनी विश्व की महाधरोहर की तोड़ने पर, उसे नष्ट करने पर। सेतुबन्ध रामेश्वर की रक्षा के लिए आन्दोलन की गति देखकर ही संभवतः सरकार से रामसेतु तोड़ने में तीव्रता प्रदर्शित की है। हम चाहते हैं कि वह रामसेतु को तोड़ना तुरन्त बन्द करे। सेतुबन्ध रामेश्वरम् को धरोहर घोषित करे। इस सम्बन्ध में न्यायालय में भी याचिका प्रस्तुत की गयी है।

हमें इस अवसर पर उस राम कथा को स्मरण करना चाहिए जब भगवान राम के राज्याभिषेक के समाचार से अयोध्यावासी हर्षित थे, पर देवलोक चिन्ताग्रस्त हो गया। जब राम को चौदह वर्ष का वनवास मिला तो देवता पुष्पवृष्टि करने लगे और अयोध्या दुखसागर में डूब गयी। अपने वनवास काल में भगवान राम ने पंचवटी के निकट ऋषियों - मुनियों की अस्थियों का पहाड़ देखा। वह द्रवित हो उठे और भुजा उठाकर प्रतिज्ञा ली कि वह धरती को असुरों, आतंकियों से रहित कर देंगे।

श्रीराम ने दण्डकारण्य में राक्षस, आंतकियों की सघन खोज की, उनका संहार किया। आतंक का पर्याय राक्षसों का अधिपति रावण लंका में रहता था। वहीं से अन्य आतंकियों का संचालन, संरक्षण करता था तथा समुद्र से घिरे, अस्त्र शस्त्रों, अकूत स्वर्ण आदि से समृद्ध होने के कारण अपने आप को सुरक्षित मानता था।

भगवान राम ने वानरों का सहयोग लिया। भारत से लंका तक समुद्र पार जाने के लिए विश्वकर्मा पुत्र नल - नील, श्री हनुमान जी, सुग्रीव, अंगद की करोड़ों वानर सेना ने लाखों वृक्षों, विशाल पर्वत शिखरों, शिलाओं से सेतु का निर्माण किया। बाल्मीकि रामायण अनुसार प्रथम दिवस 14 योजन, दूसरे दिन 20, तीसरे दिन 21, चौथे दिन 22, और पंचम दिवस 23 योजन इस प्रकार 5 दिवसों में 100 योजन का सेतुबन्ध निर्माण हुआ। सेतुबन्ध निर्माण के लिए भगवान राम ने समुद्र से राह माँगी, प्रार्थना

की, तीन दिवस का अनशन किया था। उन्होंने समुद्र से कोप भी किया, उसे अपने अण्वास्त्रो से सुखा देने की धमकी भी दी थी।

भगवान राम ने यहीं रामेश्वरम् शिवलिंग स्थापना की, पूजन किया तभी उक्त स्थल का नाम रामेश्वरम् पड़ा और वह पूजनीय धर्म धाम बन गया। अयोध्या श्री राम की जन्म भूमि है और रामेश्वरम् सेतुबन्ध उनकी कर्म भूमि। श्रीराम मंदिर से बड़ी बात है। सेतुबन्ध निर्माण के पश्चात श्रीराम ने लंका विजय की। आतंकी राक्षस रावण का वध किया। इस अभियान में भगवान राम ने ताड़का, मारीच, सुबाहु, कुम्भकर्ण, सुरसा, अहिरावण, मेघनाद जैसे अनेकों राक्षसों का समूल नाश किया।

सेतुबन्ध लाखों वर्षो तक समुद्र के ऊपर विद्यमान रहा। ईसा पूर्व की पंद्रहवी शताब्दी के आठवे दशक तक लोग उसके ऊपर से आते जाते रहे। कालान्तर में सेतुबन्ध समुद्र तल में समा गया, समुद्र का जल स्तर बढ़ा और वह डूब गया। तीर्थ यात्री पर्यटक, भक्त, उसे पूजते, प्रणाम करते रहे।

वर्ष 2002 में अमेरिकी नासा उपग्रह ने इस सेतु के चित्र लिये। अक्टूबर 10, 2002 को वाशिंगटन से पी. टी. आई. ने विश्व को समाचार प्रसारित किया कि भारत और श्रीलंका के बीच समुद्र में एक सेतु डूबा पड़ा है। उसकी लम्बाई 30 किलोमीटर है। चूने पत्थर का, अनेक टुकड़ों में बना है। मानव निर्मित है और सेतु की प्राचीनता लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष हैं।

संसार ने इस समाचार को बड़ी उत्सुकता से देखा, सुना, पढ़ा। सर्वत्र हर्ष की लहर दौड़ गयी। विद्वानों, पुरातत्ववेत्ताओं, इतिहासकारों, वैज्ञानिकों, मनीषियों, धर्माचार्यों, वेदवेत्ताओं के लिए यह अति महत्वपूर्ण था। सामान्य जनों के लिए भी सुखद अतिरंजनापूर्ण। सरकार के लिए तो कुबेर का खजाना था पर सरकार ने इसकी रक्षा के लिए कुछ नहीं किया।

अमेरिकी उपग्रह से पूर्व वर्ष 1860 में जब देश परतंत्र था, एक अंग्रेज नौसेना कमाण्डर ए डी टेलर अपनी यात्रा में इस सेतु से टकरा चुका था। उसे अच्छी तरह ज्ञात भी हो चुका था कि यह वही सेतु है जिसे लाखों वर्ष पूर्व त्रेतायुग में भगवान राम ने लंका विजय के समय निर्माण कराया था। उसने इस सेतु को तोड़ने की योजना भी बनाई पर क्रियान्वित न कर सका। उसने इस सेतु को नाम दिया 'एडम ब्रिज'। तब से आज तक भारत के मानचित्र, एटलस में रामेश्वरम् धनुषकोटि से मन्नार श्रीलंका के बीच 'एडम ब्रिज' स्पष्ट अंकित देखा जा सकता है। इसी अंग्रेज कमाण्डर ए डी टेलर ने सेतु तोड़कर भारत श्रीलंका के बीच से समुद्र में एक नहर बनाने की योजना बनायी और योजना को नाम दिया था "सेतु समुद्रम केनाल प्रोजेक्ट"।

स्वाधीन भारत में वर्ष 1955 में रामास्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में एक समिति बनी सेतु तोड़कर नहर के बनाने की योजना फिर जीवित हो उठी। 1963, 1975, 1983, 1994, 1996 बीच अनेक केन्द्र, राज्य तमिलनाडु की समितियाँ, विशेषज्ञों की राय बनती रहीं। 1999 में तत्कालीन सरकार के रक्षा मंत्री ने सेतु समुद्रम् शिपिंग केनाल प्रोजेक्ट को तीन वर्ष के भीतर पूर्ण करने की घोषणा कर दी। अध्ययन के लिए बजट में कुछ करोड़ धन की व्यवस्था की गयी। प्रधानमंत्री ने भी स्वीकृति दी।

इस बीच रामेश्वरम् स्थित कोदण्डराम मन्दिर के स्वामी श्री प्रणवानन्द जी ने योजना का विरोध किया। हस्ताक्षर अभियान चलाया। हस्ताक्षर युक्त एक ज्ञापन रक्षामंत्री, प्रधानमंत्री को दिया। रक्षामंत्री स्वयं स्वामी जी के रामेश्वरम् स्थित विवेकानंद कुडील निवास पर गये, वार्ता की, आश्वस्त किया। स्वामी जी ने सुझाव दिया कि सेतु समुद्रम् शिपिंग केनाल प्रोजेक्ट का नहर मार्ग कोदण्डराम मन्दिर के पूर्व की 15 किलोमीटर दल-दल भूमि से बनाया जाय तथा रामसेतु को न तोड़ा जाय।

विगत चुनावी वर्ष में केन्द्र में सरकार परिवर्तन हुआ। वामपंथियों के साथ कुछ ऐसा ध्रुवीकरण हुआ जिन्हें राम और सेतु दोनों से कुछ लेना देना न था, यदि कुछ था तो केवल शीघ्रता से सेतुबन्ध को उखाड़ कर कूड़े-करकट-रेत की भाँति समुद्र में बहा देना। इसीलिए 2 जुलाई 2005 को मदुरै में वर्तमान प्रधानमंत्री ने सेतु समुद्रम शिपिंग केनाल प्रोजेक्ट का उद्घाटन किया। 2427 करोड़ के इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत तूतीकोरन से बंगाल खाड़ी तक नहर बनाने तथा सेतुबन्ध 'एडमब्रिज' को तोड़कर भारत श्रीलंका के बीच विशालतम जहाजों के लिए मार्ग प्रारम्भ कराने का कार्य आरम्भ किया गया। स्वेज केनाल बनाने वाले तथा डच, बेल्जियम ड्रेजिंग विशेषज्ञ विदेशी कम्पनियों को ठेके दिये गये।

प्रोजेक्ट के विरोध में मछुआरों आदि ने विरोध किया, उन्हें लाठी-डण्डे से दबा दिया गया। पुनर्वास के स्वप्न दिखाये गये। पर्यावरण आदि को लेकर जो न्यायालय गये उनकी याचिका निरस्त की गई। प्रोजेक्ट पूरा करने की इतनी शीघ्रता दिखायी दी कि अनेक अनापत्ति प्रमाण पत्रों, जाँच-पड़ताल, पूर्ण अध्ययन बिना ही योजना थोप दी गई। अनेक परिणामों, चिन्ताओं की अनदेखी की गई। यह सब सरकार में आसीन लोगों के दबाव के बलबूते हुआ। भारत सरकार ने तो श्रीलंका सरकार के उस प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया जिसमें उसने सेतु को ऊँचा कर सड़क एवं रेल मार्ग बनाने का प्रस्ताव किया था। सरकार ने इतना ही नहीं किया, बल्कि संसद से इस सत्य एवं तथ्य को भी छिपाया कि सेतु समुद्रम शिपिंग केनाल प्रोजेक्ट अन्तर्गत वे उस एडम ब्रिज / राम सेतु को तोड़ कर नहर मार्ग बना रहे हैं जिसे भगवान राम ने बनाया था जो करोड़ो लोगों की आस्था, श्रद्धा, भक्ति का केन्द्र, चार धर्म धामों में से एक सेतुबन्ध धाम है।

यह भी परवाह नहीं की गयी कि यह वही जल मध्य डूबा सेतु है जिसको अमेरिकी उपग्रह नासा ने लाखों वर्ष पूर्व प्राचीन मानव निर्मित बताया है। ताज महल गलियारा काण्ड को लेकर उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री को कटघरे में खड़ा करने वाली सरकार ने नासा उपग्रह द्वारा बताये गये इस सेतु को न पुरातात्वविक संरक्षण दिया, न धरोहरों की सूची में सम्मिलित किया और न राष्ट्र एवं विश्व के पुरातत्ववेत्ताओं, इतिहासकारों, मनीषियों को इसके अध्ययन के लिए नियुक्त किया।

यह सब मात्र भूलवश नहीं हुआ। ऐसा जानबूझकर किया। यही कारण है कि संसद के अधिकांश सदस्य देश के बुद्धजीवी, प्रशासनिक अधिकारी राजनीतिक दल सामाजिक सांस्कृतिक संगठन, धर्माचार्य रामसेतु ध्वंस से अपरिचित रहे। संसद में कभी किसी ने सेतु तोड़े जाने का विरोध तो दूर चर्चा तक नहीं की य्ह न केवल घोर दुखद है बल्कि सांसदों की जागरुकता पर प्रश्न भी।

सरकार ने दक्षिण भारत सहित देशवासियों को बताया कि इस प्रोजेक्ट से मन्नार खाड़ी से आने वाले जलयानों को श्रीलंका का चक्कर लगाये बिना भारत श्रीलंका के बीच कम दूरी का मार्ग उपलब्ध होगा जिससे समय, दूरी, ईधन, धन बचेगा। उन्होंने इसे भारत की महायोजना, उपलब्धि, परम आर्थिक विकास, रोजगार परक, देश की गौरवशाली योजना के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि यह बातें सर्वथा निराधार, मिथ्या, भ्रामक हैं। आर्थिक विकास के नाम पर धोखा है। इसे सफेद हाथी कहना भी कम है।

वास्तविकता है कि सेतु समुद्रम् शिपिंग कैनाल प्रोजेक्ट में सेतु शब्द भगवान राम द्वारा निर्माण कराये गये सेतुबन्ध रामेश्वरम् से ही लिया गया है। सत्य यह है कि भारत श्रीलंका के मध्य जिस सेतु को तोड़ा जा रहा है, वह 'एडम ब्रिज' ही 'सेतुबन्ध रामेश्वरम्' है। यह वही सेतु है जिसका नाम सरकार की स्वीकृति के साथ भारत के मानचित्र एवं विश्व एटलस में अंकित है।

तथ्य की बात यह है कि नहर मार्ग बन जाने के पश्चात् इस मार्ग पर कोई जलयान आये न आये पर लगातार सुरक्षा, देख-रेख तथा नहर मार्ग उसी रूप में बनाये रखने के लिए चौबीस घण्टे नियमित पेट्रोलिंग, ड्रेजिंग पायलट जहाजों का आवागमन रखना पड़ेगा, नहर मार्ग से जलयान धीमी गति से भी यात्रा करेंगे। इस प्रकार समय, धन, ईंधन दूरी कम करने की बातें खोखली सिद्ध होंगी। मेन्टीनेन्स न करने पर नहर मार्ग पुनः रेत से पट जायेगा। सत्य यह भी है कि इस प्रोजेक्ट से 5 जिले, 138 गांव व 5 लाख नागरिक प्रभावित होंगे। 28000 मछुआरों की जीविका नष्ट होगी।

इसमें से 50 प्रतिशत मछुआरे पहले ही ऋणग्रस्त, आर्थिक संकट से पीड़ित हैं। मछली उत्पादन, भोजन, निर्यात सब समाप्त हो जायेगा जो इस समय लगभग 2 लाख टन है। इस प्रोजेक्ट से यहां उपलब्ध 3268 वनस्पतियाँ नष्ट होंगी, 377 प्रजातियों के जीव-जन्तु, उपलब्ध 200 प्रकार की मछलियां, यहां चल रहा मूंगा उद्योग समाप्त हो जायेगा। सेतु तोड़े जाने से पर्यावरण, तापमान में परिवर्तन होगा जिसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। सामुद्रिक व्यवहार परिवर्तन के साथ सुनामी जैसी आपदा के लिए तटीय, क्षेत्रीय जन-सम्पत्ति व सुरक्षा को गंभीर खतरा होगा क्योंकि गत सुनामी के समय सेतु के निकट लहरों की ऊंचाई डेढ़ मीटर ही थी, जब कि अन्यत्र साढ़े तीन मीटर। सेतु तोड़े जाने से श्रीलंका से देश की सुरक्षा का संकट बढ़ेगा। आतंकवाद को फलने-फूलने के अवसर अधिक होंगे।

सच तो यह है कि कल्पनाओं, सम्भावनाओं पर आधारित सेतु समुद्रम शिपिंग कैनाल प्रोजेक्ट पूरी तरह देश के विनाश की योजना है। यह निरन्तर 22 वर्षों तक घाटा देने वाली मात्र 190 लोगों को रोजगार देकर लाखों लोगों की जीविका हरण करने वाली, प्राकृतिक छटा, सौन्दर्य, सामुद्रिक शांति, सुरक्षा, सुन्दर पर्यावरण हमारे गौरवशाली धरोहर, पुरातात्विक सम्पत्ति को नष्ट करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रकारी योजना है। यह योजना करोड़ों लोगों की आस्था, अस्मिता पर प्रहार है तथा विश्व मानचित्र में भारत के सम्मान को नीचा करने वाली है। जिस दिन इस योजना का उद्घाटन किया गया उसी दिन भारत का प्रत्येक नागरिक अतिरिक्त 25 रुपये विदेशी ऋण से बोझिल हो गया। इसलिए जो महानुभाव, नेतागण, अर्थशास्त्री, भारत विकास का स्वप्न संजोने वाले, हर कार्य में कोई न कोई अच्छाई का दर्शन करने वाले, विद्वान, विचारक, सरल नागरिक हैं, वे मेरे वक्तव्य को कल्पना समझने की भूल न करें। यह तथ्य, सत्य, निष्कर्ष सरकार द्वारा प्रेषित एवं पारित हैं, योजना और उसके परामर्शदाताओं की राय का ही एक अंश हैं। सरकार ने इन परामर्शों को प्राप्त करने के बदले करोड़ रुपये फीस भुगतान की है। यह बात दूसरी है कि सरकार ने तमाम सत्य को देश तथा संसद से निरन्तर छुपाया है तथा प्रोजेक्ट शीघ्र लागू कर रामसेतु ध्वंस को वरीयता दी है।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि अयोध्या में जन्म भूमि है और पवित्र सरयू है परन्तु सेतुबन्ध ! विशाल सेतुबन्ध भगवान राम की संसार में एकमात्र उपलब्ध वास्तुकृति है इसे स्वयं श्री हनुमान जी ने, राम जी ने बनाया है। यह रामजन्मभूमि मन्दिर से बड़ा है। सेतु बचेगा तो यह मानव सभ्यता के विकास के वर्तमान इतिहास को बदल देगा। संसार का इतिहास - भूगोल सब उलट जायेगा। क्योंकि सेतुबन्ध होगा मानव सभ्यता का सर्वाधिक प्राचीन चिह्न, संसार में भारत सभ्यता को लेकर विश्व गुरू बनेगा और सेतुबन्ध बन जायेगा विश्व का प्रथम आश्चर्य। सम्पूर्ण मानवता के लिए दर्शनीय, पूजनीय, वंदनीय।

हमारा आचार्य परिवार

1.	श्री ओम शंकर त्रिपाठी (प्रधानाचार्य)	एम. ए. (हिन्दी), बी. एड.
2.	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	एम. एस-सी. (जन्तु विज्ञान) बी. एड.
3.	श्री राजेश कुमार शुक्ल	एम. एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी. एड.
4.	श्री रामतीर्थ मिश्र	एम. ए. (हिन्दी), बी. एड.
5.	श्री हेमन्त शुक्ल	एम. एस-सी. (भौतिकी), बी. एड.
6.	श्री कैलाश जोशी	एम. एस-सी. (गणित), एम. एड.
7.	श्रीमती शारदा राव	एम. ए. (अंग्रेजी), बी. एड., एल.एल.बी.
8.	श्री आनन्द प्रसाद वर्मा (कला-आचार्य)	आई. जी. डी. बॉम्बे
9.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	एम. ए. (गणित, समाजशास्त्र), एल. टी.
10.	श्री दीपक राजे	बी. ए. बी. एड.
11.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	एम. ए. (भूगोल), डी. पी. एड.
12.	श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय	एम. ए. (समाजशास्त्र), बी. एड.
13.	श्री गणेश शंकर बाजपेयी	एम. ए. (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री
14.	श्री गया प्रसाद वर्मा	एम. ए. (अंग्रेजी), सी. टी.
15.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	एम.ए. (इतिहास, राजनीति विज्ञान), एम.एड.
16.	श्री जगपाल सिंह	एम. ए. (भूगोल) बी. एड.
17.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	एम. एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी. एड.
18.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	एम. एस-सी. (भौतिकी), बी. एड.
19.	श्री सुधीर अवस्थी	एम. एस-सी. (रसायन विज्ञान), बी. एड.
20.	डॉ. मनोज कुमार शुक्ल	एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी) साहित्याचार्य, पी-एच. डी.
21.	श्री दुर्गेश बाजपेयी	एम. ए. (हिन्दी साहित्य, संस्कृत), पत्रकारिता परास्नातक IIMC, बी. एड.
22.	श्री मंजीत सिंह	एम. एस-सी. (गणित), बी. एड.
23.	श्रीमती रेखा निगम	एम. ए. (अंग्रेजी), बी. एड.
24.	श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	एम. एस-सी. (भौतिकी), बी. एड.
25.	श्रीमती सीमा अग्रवाल	कम्प्यूटर शिक्षक
26.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	कम्प्यूटर शिक्षक
27.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	एम. ए. (अंग्रेजी), बी. एड.

कार्यालय

1. श्री राजेन्द्र गुप्ता (अधीक्षक)
2. श्री ओंकार नाथ (कार्यालय - सहायक)
3. श्री अरविन्द कुमार त्रिवेदी (कार्यालय सहायक)
4. श्री मयंक मणि (कार्यालय सहायक)

छात्रावास

1. श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री (छात्रावास - अधीक्षक)
2. श्री शैलेष दीक्षित (छात्रावास - सह अधीक्षक)

कर्मचारी गण

1. श्री श्याम लाल
2. श्री राम भजन
3. श्री रामलाल
4. श्री सुरेश नारायण
5. श्री रमेश

English Section

Editorial

- Sharda Rao

The preamble to our constitution proudly proclaims India to be a sovereign, socialist, secular, democratic, republic. After almost 60 years of independence can we really look back with pride on our achievements? Many people feel that India is almost on the threshold of becoming a developed nation. How can we define development? Economic advancement is errone ously regarded as the critrion of development the world over. It is pathetic that we Indians who have been the spiritual leaders of the world have also begun to value money over human relationship. In the cut throat competition for amassing wealth human values, peace, tolerance and affability have been trampled under out. The recent spurt of violence against the North-Indian in Maharashtra should serve as an eye-opener for those who gloat themselves on India's so called advancement. We must face the bitter truth that we have actually caesed to exist as a nation woven together by the strands of cultural and ethical valves. Today selfish tendencies and regionalism have relegated the concept of nationalism to the background. Some reckless politicians are instigating the people not to share the resources of their native states with people coming from other states of our country. They have been so self-centred that they do not hesitate to tear a part the basic tolerant fabric of our nation.

Dear readers, Do we really exist as a nation? The question may seem absurd but if we delive deeply into the definition of a nation we find that India may be one country but not one nation. India is a united lardmass with well defined borders and boundories, but is India a mere geographical or physical landmass or much beyond that? Have we been united culturally at any given period of history? An honest retrospection will result in a negative answer. Then how can we call oursehes a nation? Several thinker, philosophers, politicians and religious teachers have tried to prove the underlying unity of India. Never the less, India is a country where differencer and distinctions are rampant in social, cultural lingual and political fields. If we observe a crossection of society in a farticular city, minutely, we find that it is divided into castes, sub-castes, classes, religious groups, factions, sects and organisation that are continually engaged in proving their superiority and hurling accusations at one another. The recent outbrust of Raj Thakray in Maharashatra has brutally lacerated the peace and harmony of the nation. His veromous remarks have violated the sacrosanct principles of the constitution thousands of Non-Maharashtrians had to run for their lines after acts of arron loot and Vindalism. It could have led to similar backlash in other states had some

of our leaders not come forward to condemn this cultural and regional bigotry the youth of India should come forward and condemn such narrow minded disruptive tendences of regional and cultural chauvinism through this editorial I call upon my students to shun narrowmindness, regionalism and separatism to enable India to be a truly secular and democratic nation let us rise above selfish interests and empower ourselves to keep pace with the rapidly advancing world. Let us keep intact our cultural heritage, our values and ethics live and let live.

Love is Life

- Vishwesh Shukla
(XIIth 'A')

Life is like a flower
Love is like a colour
Without love, life i colourless
Life is like an orange
Love is like juice
Without love, life is tasteless.

Life is like a sea
Love is like a Pearl.
Without love life is worthless
Life is like earth
Love is like water
Without love, life is a desert.

Life is like the sky,
Love is like a star.
Without love, Life is dark.
Life is full of beauty,
When the heart is full of love.

Rome was not built in a day

- G. P. Verma
(Dept. of English)

This proverle implies a deep meaning. It means that nothing can be accomplished in a hurry and worry. It requires a great patience and perservance to achieve a goal. Just as culture and civilization of Rome took centuries to reach its height like wise glory of any country can't be attained without hard and continuous labour. This principle applies to all aims and ambitions whether personal or impersonal.

Everyone has some or other goal in his life to achieve. Without an aim life is like a boat without a rudder. So first you have to decide about a definite aim. Then you must resolve to pursue it devotedly. You have to be cautious and careful at every step. No doubt, hurdles would come, obstacles would block your way but you have to confront with them. By consistent and steady endavour you will finally emerge victorious. You should not forget-your mission and sticks it boldly. Ups and downs would come and go, you should not bother about them.

If your goal is lofty, your thoughs are noble and your heart in pious, nothing can stop you to reach your destination, Worldly charms and momentary joys are milestones. They may illude you, but go forward leave them behind. Seek inspiration from the lives of great men who lived for others and died for others. Fix your target and start procedding towards it without faltering according to a famous verse in Sanskrit the people of weak mentality do not start a work for the fear of disturbances and obstructions, common people start the work but leave uncompleted when calamities be fall. The courageous men dont stop till they have reached the culmination. They overcome all misfortunes and sufferings.

Before coming to a conclusion there is one thing more to be reminded . and it is that we should have self confidence and distant vision. we have to make our way through adveserties. Life is not a bed of roses but every cloud has a silver line. Taking this optmistic view in mind We should remember the words of Swami Vivekanand in his poem "The song of free" Where in he has exhorted us to go forward clearing thick clouds of dismay . In the following lines he says.

"The cloud puts forth its deluge strength,
When lightning cleaves its breast,
When the soul is strred to its inmostdepth,
Greatones unfold their best!

Thus We see that a day is not enough but a life is enough to win the goal. We can say that time, money and means, matter little in long run. The main thing is our firm and strong will power . We should learn to live an ideal life and die a glorious death.

You will Succeed sure

- Pushpendra Yadav
(9th 'A')

'Read but write more,
Talk but think more,
Play but study more,
Promise you will succeed sure,
Eat but chew more,
Weep but laugh more,
Sleep but work more,
Promise you will succeed sure.
Punish but cure more,
Consume but produce more,
Promise you will succeed sure?

क्यों वह प्रिय आता पार नहीं!

क्यों वह प्रिय आता पार नहीं!
शशि के दर्पण में देख-देख,
मैंने सुलझाये तिमिर-केश;
गूँथे चुन तारक-परिजात,
अवगुण्ठन कर किरणें अशेष;
क्यों आज रिझा पाया उसको
मेरा अभिनव श्रृँङ्गार नहीं?

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

Deendayal Ji and Gandhiji
(The Basic Similarity)

- V. S. Pandey (Acharya)

Pt. Deendayal ji was not only a votary of Bhartiya Culture, he was its true symbol. He was an ideal servant of the people. His fearlessness was rooted in his spirit of service. He was not enamoured of position or pelf. Had he any interest in power or wealth, he would have easily acquired both. But he led a simple life and propounded his excellent philosophy of integral humanism. His life was sn example of the spirit of selfless service, sacrifice and endurance.

It is for these reasons that Deendayal ji was the true symbol of Bharatiya culture.

Integrated Relationship between Man and Man-Integral humanism aims at social development on the basis of an integral relationship between man and man, and not only on social equality. It emphasises that there is an inner equality in all individuals, and this common inners equality can be the basis of social progress. This was the basis of his concern for the poor and the depressed sections of society, for the welfare of which he strove throughout his life.

An integrated society was his derve to realize this dream every social worker should select some villages for uplift and all-round progress. Village development is the measure of India's progress.

Gandhiji also dedicated his life to rural reconstruction and betterment of life of the lowest strata of society without aspiring for power. He lived for the attainent of Swaraj. Deendayal ji worked for the transformation of Swaraj into Su-raj (Good-Government), and for the propagation of his philosophy of integral humanism in the same selfless way. Selfless social service was the pleasure of his life . this is the basic similarity between the values of life of Mahatma Gandhi and Deendayalji.

Antyodaya and Integrial Humanism are Indentical. We need not search for dissimilarities. This attitude of mind requested for the attainment of Swaraj and the transformation of Swaraj into good goverment is one and same. Even today our country has surrived with self respect only on the strength of such selfless workers. Gandhiji's concept of 'Antyodaya' and Integral Humanism are identical in content.

Our villages are the symbol of our national culture. If they remain weak, the country cannot become strong. Every village must become self

- reliant. Every house must have a small cottage industry. All must give thier helping hand in the effort.

our country having a predominantly rural culture, has impoverished and dependent villages. Education given in urban culture is improductive. It appears that we have forgotten the need for rural uplift. Urban culture is talked of everywhere. these are major defects of our economic planning Unless we remove them and have a plan with a rural thrust, rural uplift will not be possible.

THE ONLY WAY

For this we have to follow the way shown by Deendayalaji we can achieve tremendous progress if each social Worker selects a village and dedicates himself to its uplift. A society cannot become self - reliant if it depends on the assistance of Government in every field. The sprit of service makes you fearless. This fearlessness make a society strong.

So that is the only way.

Afteen ways to Develop Personality

- Avinash Singh
(9th - 'C')

- ☐ *Remember other people's birthday.*
- ☐ *Look people in the eyes.*
- ☐ *Have a firm hand hake.*
- ☐ *Learn to have a strong will.*
- ☐ *Be forgiving to yourself and others.*
- ☐ *Return all things you borrow.*
- ☐ *Treat everybody you meet, like you want to be treated.*
- ☐ *Be first to say- Hello!*
- ☐ *Learn to keep secrets.*
- ☐ *Show respect for all living beings.*
- ☐ *Keep a tight rein on your temper.*
- ☐ *Never cheat.*
- ☐ *Never take any action in anger.*
- ☐ *Have feeling of self- respect.*
- ☐ *Stop blaming others and take responsibilty for every area of life.*

Our Cultural Programme

- Sharda Rao
(Lect. Deptt. English)

A tribute to the immortal heroes of our First War of Independence - 1857

1857 is an unforgettable year in Indian history. The year saw an unprecedented awakeing in Indians against the atrocties of the British Almost a century after the Battle of Plassy in 1757, India arose to the call for feedom. Lord Dalhousie came to India. with the aim of extending the territories of the British Empire. Keeping this in view he revived the policy of Doctrine of Lapse which entitled the British to annix several Indian states that did not have a proper legal heir to the throne.

Several factors led to India's first war of independence in 1857. The Indian solders in the British army were asked to use the cartridges greased with the fat of cows and pigs. The Hindus and muslims considered it an act of sacrilege. Their religious sentiments were arouse. Mangal Pandey opened fire in the Barackpore settlement of West Bengal. This serves as spark to ignite the fire of revolution, the rulers of Nagpur, Satara, Jhansi, Oudh, Jagdishpur etc. held a conference under the patronage of Bahadur Shah Zafar the Mughal Emperor and 10th May was the date specified to trigger the revolution. However the sudden outbrust at Barrackpore upset the plans of the revolutionaries.

The British became alert and adopted firm measures to curb our tumult for independence. The revolution failed to achieve its objectives but it shook the foundation of the British in India. The Indians were yearning to shake off the shackles of slavery. The Punjab and Bengal became the centres of revolutionary activities. Bankim Chandra Chaterjee in his magnum opus 'Anand Math' kindled the patriotic feelings of our country men 'Vande Matram became the slogan of the revolutionaries aspiring for freedom. In the year 2007 the nation celebrated the 150th anniversary of our first war of independence. Our school paid tribute to this historic event through a play staged on the occasion of our annual function on 26th September, 2007. The play was titled 'Kranti : About 150 students participated with great nationalist fervour, the preparations for the great show started in the first week of September. Several history books and chronicles were consulted for authentic information regarding dates and events. The script was written, finalised and edited to enable us to present the great saga in a short span of two hours.

Then we set upon the important task of selecting the students who would portrany several historical personalities. It was necessary for the students to match the personalities in appearance and style. A part from the appearance was the litmus test of dialogue delivery. We needed immaculatel promunication of hindi, english and urdu. Finally, the actors were chosen and the rehearsal began, After endless practice sessions the play began to take shape. Then we set up on the stupendous task of setting the background music. We needed music that would fit the theme and period of the play. To make the battle scenes appear realistic we got wooden swords and daggers made. Special sets were needed the entre Madhav Smriti Complex was used as a broad stage for the play on the 25th of Sepetember we conducted full dress rehearsal in the morning. But, as the Sun God's charit moved towards west the sky became overcast with clouds and by 4 p.m. heavy showers cmpletely dampened our spirits. We were apprehensie whether the play could be staged in the open the following day. Finally came the dawn of the 26th of Sepetember. The sky was still overcast with clouds. We were in a dilemma regarding the setting up of the stage. Were we destined for an indoor hushed performance or would God be kind enough and make the weather favourable? Prayers started in the assembly hall. The students in the school hostel prayed incessantly for four hours. Our principal sir assured us to have faith n God and instructed that the arrangements for staging the play, be made in the Mahadav Smriti Complex as scheduled. Our sincere prayers were answered. The weather cleared up. A cheer came to the face of all the participants and they were filled with a new zeal.

The function began as usual. After a little drizzle the sky became absolutely clear and the play went on to become a great succes. The viewers were mesmerized by the enchanting performance of our students. The soul stirring acting by the students brought tears of appreciation in the eyes of the viewers.

In this way we paid our homage to our national heroes who sacrifised their lives at the altar of the nation.

Gold

- Aditya Pratap (7th - 'A')

Gold begets in brethen note,
gold in families debate,
Gold does freendship respect,
Gold does civil war create.

'Increasing disobedience among youth'

- by - Anand Srivastava
(Teacher, Dept. of English)

The youth are indispensably the keymakers of the country for justice. But the worldly affairs have assailed their witty mind. Their hidden energy is being exhaustect in futile deeds. The essence of studies, they know lies in sheer hard work, dedication towards ambition and its accomplishment.

In the absence of fruitful guidance they have been spoiling the golden time of acquiring knowledge in its worthful context and absconding from the goal in life purposly. Only one factor can not be responsible for this man's catastrophe. Their family status background, surroundings, atmosphere, social gothering, friends circle and most of all their teacher' role to mould the shape, are the factors to carve their kills.

The ambiguties, which are essential to acknowledge their impudent behaviour must be clearly brought out. If this can be accessible these may be possibility to ponder over this justified topic in its appropriate context. I believe, undue pressure of academics, as well as hidden emotional and strong as pirations in persuassive manner of parents for their words are primary factors for rigidity and mental agony for the children. Another factor is the electronic media via televisions which is espesially responsible to ananl their pious mind. Generally the serials which are being are on channels are astraying them from moral values and cultural aspects of hindu mythology.

So, emphasis should be laid on a sensible discussion to save our future generation. On the other hard, it is an unavoidable for an parents and guardians to keep on eye with utmost vigilance on their childrens's acivities in every respect from down to dusk. In this regard, quests on vamcus topics should be dealt with proper guidance and patience.

Children's immaturity some times put them in their own woven web of dilemma. If they are unable to over come their perplexity, it is our duty to give them a helping hand to get rid of their anxities.

Biodiesel: The fuel of Future

- Shubha Tiwari
(Department of Biology, Teacher)

Today fossil fuels like petroleum & diesel are the largest sources of energy. Its requirement has been increased by industrial revolution, But the resources of fossil fuel, are limited & in the coming future it may be finished.

Scientists are undertaking research to generate alternatives & renewable source of energy. Biodiesel is the most important alternative source of fossil fuel.

First of all calvin had drawn the alteration of the world towards petroplants in 1974. The famous car company, Demlar-Krishlar has also estabilished a number of projects for generating biodiesal. According to this company biodiesal will be generated with in five years.

Science & Technology Department, U.P. has established a centre, near Lucknow, named 'Biomass Research Centre'. In this centre the plants of few families like Euphorbiacew, Asclepedarcere & Apocynaceae have been grown for few years. Jaropha have been grown in many states like Uttaranchal, Punjab, Hariyana, U.P., Rajasthan etc. The largest diesel plant has been established by the perpetual efforts of the Non-government organisation in Haldwani (Uttranchal).

Biodiesel will be able to decline the emission of carbon dioxide, particulates & other poisionous gases in comparison to fossil fuel. Beside it the percentage of sulphur will be les in biodiesel. According to central pollution control board about 72% of Air Pollution is caused by the burning of fossil fuels. Therefore biodiesel will also be helpful for saving our enivironment.

Equality

- Aditya Pratap (7th - 'A')

If we look through the earth
We sell men have equal birth
Made in one great brotherhood,
Equal in the sight of God the good.
Food or caste or place of birth,
Can not alter human worth.

The Pen is Mightier than Sword

- Ankur Katiyar
(I2th - 'B')

Both Sward & Pen are the creations of man. Man made sword for self pretection & attacking others. And initially pen was created by man to preserve the knowledge of handling weapons. It was also used to help the culture & civilisation alive for years ahead with the passage of time drastic changes occured in the thought of human beings. As s result, people settled in groups. But each group was antagonistic to other groups ambition for ruling, cherished by them against mean or increased grodually such ambitions mused conflicts among the groups. Thus, human being started using sword for destruction of mankind, its culture & civilisation. But user of pen persisted on their path for preserving the civilisation and culture of mankind for the future. For example, the MAHABHARATA happened thousand of years ago, but we are well aware of it even today we know about the great war, because we refers the epic. The epic is a comptation of incident whi\ch occured at that time. Had the incident not been comiled, we could not have barnt about the war.

Again, Ashoka, one of the emperors of Mouraya dynasty, abandoned thelife of warrior and adopted Buddhism. He said, 'The greatest conquest is won by the law of pity, not by wielding sword & oppressing people.' A true man of letter is welcomed by every one and gets a higher place than the man who rules over others by the famous sacred book the Ram Charitmans, is considered a holy man. Abhigyan Shakuntalam, Megh-doot Ritusamhar, Raghuvansam ae some of the creation of the greatest poet Kalidas. These books convey the message of love to entire mankind. Kalidas, Banthatta, Bhavabhuti & many other poets contributed to literature and showed the path of love, peace and good life through their words. Furthermore, Shakespeare, Plato, Socrates and several other creative persons, thinkers and philosopher contributed to the up grada-tion of human intellect.

The famous french revolution took place in the year 1789. Lows XVI was the king of France at that time. The condition of common people was miscroble and was worsening day by day. But great political philosophers Rousseau and Voltaire, by their writing fostered political Consciousness among people. They mobilised the people for revolution against the despotic rule of Louis XIV. Thus intellectuals played a crucial role in the french revolution against the king. The might of

written word was realised during the freedom struggle of India. The Indian press aroused feeling of nationalism among people newspapers in regional languages were published in every corner of the country, they criticised the desposite rule of the British government. Besides press, literature also contributed in arousing the feeling of patriotism among the people of the country Rabindranath Tagore, Bankim Chandra Chatterji, Subhadra Kumari Chauhan & other personalities played a significant role in prompting the national movement. 'Vande Matram' of Bankim Chandra Chatterji became the national slogan. Thu press and litetrative payed the way for the national movement to erodicate the British imperialism from India soil.

Apart from literature and philosophy, man showed his knowledge in the field of science & technology too. Man invented many things. In this concern, man progressed by leabs & bounds, from the very beginning till date from making bullock-carts to aeroplane, invent weapon to modern destructive nuclear bomb and simple catculating method to modern computer, man's greatest achievements have been registered by the history of mankind as fruitful results of human gerius. Man achieved all these with he help of pen only, so it will to right to say that the constructive, creative pen is really mightter than the destructive sword.

What are Friends

- Divyansh Chaudhari
(9th - 'B')

Friends are those who help in our need. They have a variety of good manners. When war come to the world, the first problem is to choose our friend. Our friends know that when we become happy and sad. Friends tell us the way of success. In this world I think that the biggest relationship is between two friends. At this time in the world people are running after materism. There is undertanity brutality and doubht everywhere. So we realise much problem to choose our friend. Wrong friends brings our life to the wrong way. So frinends are called those who being our life in a good way. They grive up happiness in our sadness and help in our need.

Religion and Politics

- Sankalp (XII 'A')

Religion is essential for civic and corporate life. The surviving power of a civilization depends very much on its moral forces. Now a days politics has become organised wickedness. Terrorism is the offspring of political religious by religious fanatics. Terrorists take refugie at religious places and consider them the most convenient place for their activities.

People who are secular minded condemn the co-ordination of religion in politics. But certain political parties claim that religion is the basis of politics. In fact the long time effects of mixure up religion and polities will be worse. The relation between religion and politics is not acceptable. It will bring chaos to humanity. When Gandhiji said 'My religion is my politics and my politics is my religion.' He did not mean religion in the sense people are using it. In fact his idea of religion stands for moral qualities like love of truth, faith in God and love for human beings. Only morality can moralise politics. Religion should not be the basis of politics. Religion was a narrow outlook. But morality embraces all life. Whatever makes for human welfare is moral.

Politics has become synonym of cheating to some extent. Men of politics have lost all sorts of moral considerations. Politics seems to be a curse for humon beings. At this stage politics requires to be inspired with morality. It is simply because religion is a bundle of outdated yituals. It has hackneyed customs and irrelevant practices. Religion is for away from practical life. It is not in touch with hard yealitis of day to day life. It stops reasoning and senders human thinking pointless. It becomes the basis of politics, it will serve as a powerful opiate for the masses. The result will be dangerous for it will drag people into hostile and violent activities. Religion should always be a personal affair. It should not become public affair and politics shold be kept at a distance from religion.

Slave

- Aditya Pratap (7th - 'A')

They are slave who fear to speak,
for the fallen and the weak,
they are slave who dare not be,
In the right with two or three.

Think India Workshop

- Sankalp Kumar Dwivedi (XIIth 'A')

A one day workshop was organized on Sept. 2 at the Urban Youth and Health Centre in Bangalore. This workshop was organised as a preparatory programme to the mega event in January. This event is aimed at developing nationalistic views and thoughts among the professional students. It is also aimed a networking all the Indian premiere institutes students community and estalishing a nationalistic force in these institute's by enhancing the tendency of these students towards spirituality. This programes thus fociress mainly on students of IIM, IIT, NLS, IISc, Research and Medical Institution etc.

Their leaders inaugurated the workshop being one for the students and youth only. Prof. Shri Mahadeven Editor Management Review, a new journal of IIBM spoken 'India's role in emerging world's order, pride, future and possibilities.' Shri Dattatreya Hosahale, Saha Boudhik, Premukh of RSS presented a slide show on 'A challenge to the identity of the idea of Bharath.'

Shri Mahadevon in his speech pointed out India's place in the mankind among the developed nations. According to a global competition report. India was ranked 49th in 1997. The same report ranked India a 25th place in 2002. It also tells that India and China are the only competitors to head the world by 2020. India will soon overtake China in industrial quality producation.

We have a golden past of more than 3000 years compared to others of less tha 600 years. It is a challenge before us to utilise our glorious past in the modern times. Shri Dattatreya highlighted the challenges before Indians as sovereignty. security, unity and identity.

In the end, we reached the conclusion that challenges can be faced by creating awarness among the masses and fighting preudo secularism and minority appeasement policies.

Sow

- Aditya Pratap (7th - 'A')

Sow an act, and reap a habit.
Sow a habit, you reap a character,
Sow a character, you reap a destiny.

The U.N.O.

- Padam Jee Omar
(XII, 'A')

The U.N.O. is an attempt, to stop and banish war wherever it may raise its grisly head. It came into being on 18th April, 1946 as the result of a conference of 60 nations of the world, held at Sanfrancisco in April, 1945. War has become so destructive that if humanity does not end war, war will end humanity. The next wor would be an atomic war and it might be the last war.

The security council is the most important & active organs. of the U.N.O. It consists of 11 members. The big five powers are permanent members & there are six non-permanant (temprory) members, who are elected for two years by this General Assembly. The security council is competent to take all measures to preserve world peace including persuasion, negotiation, mediation, concilation, arbitraton, economic, sansctions and military measures. The U.N.O. stands for peace, security, human rights, law and freedom. It is out to end war which is a curse and a blight on man's prosperity.

At present, the U.N.O. is dominated by the Anglo-American block. The Anglo-American bloc and the communist bloc. are constantly at daggers drawn. There are vested interests. The right of Veto, can debar the other ten members from taking any decision.

But in spit a of all these handicaps, the U.N.O. has done commendable work. It is all due to the efforts of this august body that today, there is a cease fire in Egypt, in Kashmir, in Hungary, in Indonesia, in Korea and in Palestine and quite recently in Cargo. It is not a small gain. War today is a modern global war. A modern global was means total annihilation, universal destruction. But the U.N.O. is working for peace all over the world.

The non-political bodies of the U.N.O. like world Health Organisation (W.H.O.) and United Nation's Educational, Scientfic and cultural organization (UNESCO) are doing commendable work. There is also the court of international justice to which the weaker nations of the world can look for justice.

In short, the U.N.O. born of man's anguish and longing, is the only hope today in a world torn by violence, selfishness and greed.

5 Steps to achieve success in every Endeavour

- Prakhar Shukla
(12th 'B')

Here are five steps to help you achieve success in every endeavor. This may not ensure that you never face any problems, but can help you remain **focussed to rewards your goals.**

Reach for the stars - Think of your targets as a journey. Half the fun of achieveing a goal is th passage. Set yourself a route with some challenges. Getting bored before you reach the end of the jowney will surely take you off track. Like they say 'When you reach for the stars, you may not quite get them, but you won't come up with a handful of mud either.'

Plan well - The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams. But it is necessary to chalk out a plan to achieve the goal, Sit down and introspect till you are able to chalk out a plan that is realistic and achievable in the near future.

Trust yourself - Ralph Waldo Emerson says - 'What lies behind us and what lies before us are small matters compared to what lies with in us.' Reflect on the truth of this statement. When you are low and circumstances seem against you, you can get discourged and gloomy. But if you have got where you are in life.

It is because you are talented and capable. Believe in your innate ability 'Remember hope is the companion of progress and the mother of succes.'

Rely on your intuition - If you are stuck in situation where you are confused and have lost all sense of direction, simply move back and stop thinking about the situation. Your instinct will tell you what your eyes can not see and guide you even when your mind can not understand.

No matter how hectic or difficult your life, is keep your mind clear and your goals before you. As Deepak Chopra says - 'In the midst of movement and chaos, keep stillness inside of you.' distance yourself from everday occurrences that can demotivate you. Your long term objectives are what matter and you must be focussed to achieve them.

My School : 7 years

- Akshay Awashthi
(12 'A')

This idea 'Almost 7 years' struck my mind just five minute before starting this article.

The story starts from the time when my three or four past' friends and I were going to start 6th class. We studied in Saraswati Shishu Mandir. All of us were the 'Toppers' there and often used to clash our thoughts about our next schools, Satyam, my friend and I always quarrelled over B.N.S.D. and Deendayal. He prefered B.N.S.D. and always used to say that 'most of the I.I.T. ans are the products of B.N.S.D.' My mind used to be quite blank at the time as I did not know what kind of thing the I.I.T. was. I just said that Deendayal is better. ('In fact, I come to know about the I.I.T. when I passed clas 10th.}

There was a special glory in the name 'Deendayal' that always used, to visit my heart. It was a huge and heart touching name for me.

And at last, he got the selection in B.N.S.D. and I, in 'Deendayal' I jumped almost one and half a meter when I heard the news of my selection in 'Deendayal'. It was my dream college. I got a prize of Hundred Rupees from my principal of that school on my selection.

I very well remember my first day in this college. The wait for the school bus was time taking but I was so excited that I was not tired at all. When the bus came, I felt relieved.

On reaching the college, all of us went to 'Vishal-Kaksus' now known as 'Maruti-Mandir'. After some time, it started to rain. Ramtirth ji told us that 'It is a natural tradition for the first day of starting the new session in this college. I felt proud of myself as I was going to study in the great 'Traditional College.'

There we were introduced to our 'Principal'. On that very first day, he told us 'The emotions and the Ideas are the precondition for any action in the world.'

After this we were sent to our classes for the attendance. Manoj ji was our class-teacher. As we had not our roll-numbers, he was taking attendance with the help of our names. On the second number, as he pronounced 'A', I raised my hand. But this 'A' stood for 'Abhinav' not for 'Akshaya'. He rebuked me for this mistake.

So this was my first day. I was not able to forget this event for future or four days as I could not expect my first day in the great school so 'bad'.

In the same session, Bal-Bharti convened the birth-day of Subhash Chandra Bose on 23rd January. I gave my name for the programme. I wanted to sing the poem 'Khooni Hastakahar' which was collected in our Hindi-book 'Saras-Bharti'.

I was very excited before the programmes as I had been at the stage three or four times only before this in my pre-school. But when I started, I could 'speak' only, 3 lines of the poem and went back. In the school bus, on returning time, the students of class 8th said, 'You sang very well', and laughed satirically.

After this, I never participate in any programmes till class 10th.

In class 9th, on the way first day of the sesson, Manish ji came in our class. Because of intherisnm and also miofortunately, was sitting on th chair just in front of him. While teaching, he made me stand-up and asked the value of sinc ninty. Maths was like a ghost for me so naturally, I could not make an answer. He asked me for ups and downs. Thus my first day in class 9th passed away.

And, I can not forget the data of 4th October in the same session. On the morning time, while reading the news - paper, I saw a mercy on the life of Mahatma Gandhi which was made on 2nd October. It told that the people of Kanpur did not know about Mahatma Gandhi very much. Some of them did not know even the name of Mahatma Gandhi. This affected me in the depths of the heart. I told this to my classmates in the school-bus. Discussing the name event, I could not know when the bus reached the school but our diocussion was continued. Going down from the bus, I was saying 'The people say .... ' and just then, I saw principal sir passing from there. He asked me 'What the people say?' I was stunned at the question. He asked me again.' Tell me, what the people say? 'I hardly made myself able to give the answer and said, 'The newspaper tells that the people do not know even the name of Mahatma Gandhi'. and just after this, I would to my class in a farcimating speed.

I recall a thundersome happing of the same session our half yearly exams cases going on. On that day of biology's exam, principal sir aksed us to go in our examination room and manae all the things to be prepared for the exam. He strictly forbade us to 'Turn the pages of the books.'

But I could not reconile myself with his thought and started to read as much as I could before the paper. At the same time, principal sir, I could not know when, walked into the room in a running speed and slapped me on my face with a great anger on his face.

I was shocked. I could not move from my place for sometime. Then, I went to my dark and remained standing till he asked me to sit.

My exam was ruined, as it was natural.

After this, I news tried too perform the same manner.

I can not forget this throughout my life. The slap was not on my face but on my workness of fear for exams.

Just like these, there are many sweet and sour meamories realted to this school.

All these and other events are very important more for me today. This colege has given me the glinpse of the whole life. All the ideals which are given to me by this college are the most precious. I could not have got thee from any other place. All the teachers of this college have a spark of divinity in them.

Gururbrahma Gururuvishnu, Gururdevomaheshvarah;
Gursakshat Parambrahma, Tasmai Shree Gurve Namah.

❖

Awareness

- Nikhil Gupta
(7th - 'A')

A man who is aware,
He has a mind and he knows it,
He has a will he shows it,
He sees his way and goes it,

He draws a line and toes it,
He has a chance and takes it,
A rule and he never breaks it,
If there is no time, he makes it,

He hears a lie and slays it,
He owes a debt, the pays it,
As I have heard him praise it,
He knows the game and plays it,

He sees the path the Lord trod,
And grips the hand of God.

The 37th Annual Function : As I observed

- Akshay Awasthi
(XIIth 'A')

Paying homage to the ideans and ideas of Pt. Deen Dayal Upadhyaya, this school celebrated its 37th annual function this year in 2007. Pt. Deendayal Upadhyaya was great in his studies, he had a great internal power of long penance, he was a great devotee of Indian culture, he knew the art of constructing the pillars of the nation on the basis of Dharm and Satya, his thoughts were totally for the good of the Indian people and for the entire humanity, So, naturally, he was not liked by the bigots. They killed him heinously but could nod efface the influence of Deendayal ji. Well, this is the long ago tradition of the world. Good people are hardly left alive. But we can gird up our loins to follow his ideals.

In this series every year, we celebrate, our annual function so that every student is well aware of his thoughts and use his internal potential and lead in sone constructive deeds.

This year we started our prepartions for the event in mid September these preparation were for the exhibitions, for the cultural programme and for the main event of 25th of September.

On 23rd of September, a meeting of 'Yug Bharti', an organization of the ex-students of this college, was held. In this meeting, they got together and made their plans for future.

Before this, the exhibitions were held on 22nd of September. There were related to science, history, geography and computers. The students made many interesting models. All the students and their guardians enjoyed and increased their knowledge also. The exhitation of the old coins and stamps was also held.

On the eve of 23rd September, was held on the vision of Pt. Deen Dayal Upadhyaya about the ideal state 'Dharmarajya'. Many important scholars were present on this occassion Shri Madhav Govind Vaidya was the main speaker. He told that according to Pt. Updhayaya, 'The state is a political concept. The state exists for law and it has to be secular.'

In this reference he told about 'The principles of social and political theory' by the great thinker ARnest Parker.'

He told that in 1947, a new nation was not formed but it was only the change of the government. A nation is constructed by its people, So, the English call it is 'The People'.

Our country is not only a port of the earth, it is our mother, So,

Bankim Babu called it as 'Ma Bharti'. It is our mother and we are her sons.

The country is made by the great people who made some great efforts for their country like Panna, Shivaji, Sister Nivedita. These are our ideals.

He told that 'Dharm' is not the religion but it is all about our duties. It is always relative. To follow the laws of state, Not to do bad deeds, is 'Dharm'. 'Dharam' is the base and the aim of the life.

The state is a moral law. We can not get an ideal state in a day. Use shall have to peryorm setp by step.

Dharam says, 'Use can get the great God in many ways. All the religions are good so we must follow the 'Manawdharma.'

On this ocassion, our principal, the president of the management commettee Shir Gyanchand ji and other important persons were present.

On 24th of September, The Inter-school singing competition was organized in which most of the reputated schools of this city participated B.N.S.D. Shiksha Niketan, Inter College was the winner of this competition.

Now, on the next day, on 25th of September it was the most important function, the birthday of Pt. Deendayal Upadhyaya. It was to be held in the Madhaw Smriti ground. But unfortunatully, it was raining since morning. The black clouds over crowded the sky. so we were not able to perform before the chief guest Shri Krishna Bihari Pandey, the former president of 'Uttar Pradesh Lok Seva Ayog'. We were very disappointed as we had prepared for this day for many days.

The programme was held then in 'Deendayal Auditorium'. Our vice principal presented the annual progress report of the college and also told about the coming plans. Then the prizes were distributied to the boys who had done well in the field of academics.

Now, it was the time for the addren of the chief guest. He told us that we must be honest, truthful, sincere in our duties, towards our parents. We must be like Pt. Deendayal Upadhyaya. Ho noted that many Engineers and Doctors, from this college are famous in the society. today but there has not been a Deendayal from this college. He meant that we must not live only for ourselves but we, must be thoughtful about our contry also.

With this, the programme come to end, The next evening, thecultural programme was held. First Saraswati Vandana was presented and then a soul stirring play was staged based upon the great revolution of

1857 in India. In this function, Nandraj and Shashanka played the most important roles of Mangal Pandey and Nana Sahab Peshwa. The scene of Mangal Pandey conversing with Matadin, a man of lower caste was the most effective in which Matadin told him that it was not right to bite the cartridges greased with the fat of cows and pigs. I played the role of Bahadur Shah Zafar.

The students, who had done well in the cultural activities last year were presented awards of appreciation.

On 27th of September, in the mroning An inter-school debate was held in which, B.N.S.D. Shiksha Niketan, Jai Narayan Vidya Mandir, Saraswati Gyan Mandir etc. participated. In this competition, Nikhil Shrivastava and Divyanshu Tripathi of our college won the first and second prizes respectively.

In the evening session a congregation of poets was organised in which many poets and writers, were present notable among them Suresh Awashthi ji, Mahendranath Dubey, 'Sumanji' and Sankiji, guardians and some students also participated.

And with this, our annual function was accomplished with some sweet and brilter memories.

Conclusion - Pt. Deen Dayal Upadhyaya is not in this world today but his thoughts and ideals are the most effectives in this country. All of us are in this college to know and adopt the personality of this great thinker of India and our annual function is the most effective medium to empress our enthusiasm.

The Paradox of Our Age

- Ravi Shanker (9 th - 'B')

We have bigger houses and smaller families; more comforts, but less time; we have degrees, but less sense, more knowledge, but less judgement; more experts, but more problems; more medicles, but less healths; we've been all the way to the moon and back, but have trouble crossing the street to meet the new neighbour. We built more computers to hold more information, to produce more copies than ever, but have less communication, we've become long on quantity, but short on quality. These are times of fast and slow digestion; tall men and short character ; steep profits and shollow relationship.

Shiva Jee

- Padam Je Omar (XII 'A')

Shiva Jee was born in Poona in 1627. His father Shahji served as a loyal Jagirdar under the Sultans of Bijapur and Ahmednagar. Shiva jee was a born leader at the age of sixteen, he because the leader of a war like tribe living in the valleys adjoining Poona. He harassed and finally defeated the Sultan of Bijapur. Afzal Khan was sent to kill Shivaji but was himself killed by him. He later attacked and looted the Mughal territories. Aurangazeb tried to knock him off but badly failed. Shivaji was somehow persuaded to come to Delhi. There he was imprisoned by Aurangzeb but he managed to escape and safely reached Poona. Shiva ji became an independenet monarch and laid the foundation of the Maratha power in India. His ahchievement astonished the Mughals. Aurangzeb felt baffled. He gave fresh lease of life to the decadent Hindus. He was the son of a jagirdar and could lead a life of ease and luxury but he placed service of te country before self.

Shiva jee could bend his knees to kiss the dust of Delhi throne and could become the foremost Imperial General like Raja Jai Singh and Man Sing but he did not like to barter honour and self-respect for empty titles and vain glory.

He changed the course of History. He did something constructive for a cause not his personal cause, but the cause of an ideal. He fought against formidable, odds, facing individuals, groups of individuals, and even a whole community of people. He respected the KORAN. He was the embodiment of justice and toleration. He challenged the tyronny and bigotry of Aurangzeb. He was a saviour and a true nation builder. He know no defeat and was duly religious and god-fearing. He was selfless and a true son of Mother India. He was a great general and wise administrator.

Slip

- Aditya Pratap (7th - 'A')

A slip of the foot,
You may soon recover,
But a slip of the tongue,
You may never cover.

Ways of Living

- Vishwesh Shukla
(XIIth 'A')

(1) O youth with song and laughter,
Go not so lightly by,
Have pity, and remember,
How soon the roses die.

(O youth with blossoms Laden - A. W. Peach)

(2) Life is real! Life is earnest!
And the grave is not its goal;
'Dust thou art to dust returnest'
Was not spoken of the soul.

(The Psalm of Life - H. W. Long Fellow)

(3) It matters not how straight the gate,
How charged punishment the scroll,
I am the master of my fate,
I am the captain of my soul.

(Irvictus - W. E. Henley)

(4) The duties of life are sore indeed
And its pleasures fleeting, vain,
The goal so shadowy, seems and din,
Yet plod on throught the dark, brave heart,
With all they might and main.

(Hold on yet A while - Swami Vivekanand)

(5) It is right it should be so,
Man was made for joy and woe,
And, when this we rightly know,
Safely through, the world we go.

(Joy and Woe are Woven Fine - Williaam Blake)

(6) Never be bruised or broken
By life's hollow misery,
Dark deeds done or harsh words spoken.

(Lyrics of Optimism - H. Chattopadhyaya)

(7) Virtue is true happines,
Excellence, true heatuy,
Minds are of supernal birth,
Let us make a heaven of earth.

(Aspirations, of youth - James Montgomery)

(8) Torry - a while, O death I can not die,
With all my blossoming hopes unharvested,
My joys ungarnered all my songs unsung,
And all my tears unshed.

(The poet of Death - Sarojini Naiu)

जाने किस जीवन की सुधि ले

जाने किस जीवन की सुधि ले,
लहराती आती मधु - बयार!
रंजित कर दे यह शिथिल चरण ले नव अशोक का अरुण राग,
मेरे मण्डन को आज मधुर ला रजनीगन्धा का पराग,
यूथी की मीलित कलियों से
अलि दे मेरी कबरी सँवार!
पाटल के सुरभित रंगों से दे हिम सा उज्ज्वल दुकूल;
गुथ दे रशना में अलि-गुंजन से पूरित झरते बकुल-फूल;
रजनी से अंजन माँग सजनि
दे मेरे अलसित नयन सार!

- महादेवी वर्मा
(सान्ध्य गीत से साभार)

Our School Life

- Ravi Shanker Dixit
(IX - 'B')

School for us began with K.G.
for our study we were not a bit crazy.
When we were in class one,

Our study was fun
when we were in class two,
Our study and play were well todo,

When we come in class three.
We were naughty and free.
When we come in class four,

silence was never more,
Then we reached in class five,
we worked had and strove.

When we reached class six,
With the help of God study was fix.
Then we came in class seven,

Our aim was to make earth like heaven,
When we reached class eight,
We had only two years to wait,

Then at last we are in nine,
Our study runs in line,
After studying in class nine,

It will be like a lion's den
Because we will have to go in ten.

Time

- Vishal Sharma
(XI - 'B')

I want to describe my views about time to all of you.

"It is truly said"

"Time and tide wait for none'

So we must use time meticulously.

Every moment plays a prominent role in our life.

So smart people know 'Time is money. Time is important as life itself is.

'So it is said.'

'जिन्दगी एक माचिस की डिबिया की तरह है।
जिसकी एक-एक करके सारी तीली जल जाती हैं।
रह जाती है तो बस एक खाली डिबिया
जब एक आखिरी सॉस भी दगा दे जाती है।'

It means life is like a match box from which every stick is burnt. When we arrive at the last moment of our life. There remains only emply match box.

So time is more precious than any other thing in the world.

So we should realize the value of time and should not squander it. People who do not care for time always have to repent.

Please pay attenton to what I am saying friends.

We should use our present time with our utmost carefulness. Because.

"Yesterday is history, tomorrow is mystery."

"Today is a gift. According to a writer."

"God made time but man made has ate."

So we must use it carefuly to realise the value of one year ask a student, who has failed a grade ask a mother who has given birth to a pre mature baby. to realise thevalue of one week ask an editor of weekly magazine to realise the value of the day ask the person who missed his exam or intervies to realize the value of one hour ask a teacher who is

taking a class to realize the value of one minute ask the person who has missed his train and the value of second ask the person who has wont gold medal in olympics.

Through the ending lines I would like to say, 'Time is the only treasure that a person has in his life.

If he utilizes it he become successful person. But If he destroys the time It will destroy him.

So never waste time.

'According to one poet.'

'आने वाला पल जाने वाला है।'

It means coming moment is about go.'

Success - How to Achieve it

- Prakhar Awasthi
(VIII - 'A')

Success is the achievement of something that you have been trying to do. It is the result of our attitude. It is a choice, so success is a matter of choice and not chance. A person with absurd ideas keeps on waiting for the most voluable prize in a game without doing hard work. But is it possible for him to get success? The answer is 'No' success mainly comes to those who try for it.

Hardwork is key to success. Nothing can be achieved without hard work. If we adopt the qualities of successful people, we shall be successful, 'Only in dictionaries does success come before work.' is a well known saying. Not poverty but laziness, is a curse. If we waste time, time shall waste us. A life crammed with work is a life bubbling with joy of success. Great men of the world were born in cottages but they died in palaces. One can live in places only if he has the qualities mentioned above.

A Leader for the Youth of India

- Nitesh Kumar Singh
(XI, 'B')

When you view India through a prism, its multi-faceted refractions are awesome. Unique and party distressing. A multiethnic, multi-religious, multi lingual, multi-cultural diverse democracy, rich in its distinctive heritage. India is indeed, captivating.

Our democracy resonates through-out the world. More over the way in which India has transformed herself from a colonial, agribased back water economy into an independent, modern, knowledge driven one is the stuff of case & duties at the best in class business school the world over.

We face a daunting challenge in education in so far as millions of our children do not complete basic schooling in India the girl child is even killed before death.

Our demographic peak will come in 2030. That is the time when India will be the leader in the global pool at human capital. This asset, our youth, hold the patential to power our country to greater weights.

Inflection Point - We stand at an inflection point today. And for the takeoff listen to the words of our prime minister, Manmohan Singh, 'We need to build institutions, which are rofust, which inspire confidence and which can enforce the rule of law in a fair manner. We need a polity which is inclusive, equitable, caring and just we need a social order which every citizen owns and is proud of. These are goals which will take us to our destiny.

We need an ideal leader who is the captain of the ship. He should have the courage of conviction and be an optimist. Today, our education system puts our students on a process line.

Value-driver - The leader also needs to be driven by a frame work of values. The values that he espouses will define his character and personality. He should be steadfast on ethics, have a strong moral fibre and work towards good governane and probity in public life.

The youth leader must learn to master his mind. The leader should leverage his understanding of critical issue to connect people across divides while he himself communicate and connects with the diverse legments of society.

Indian Brains: Working abroad

A Gain or Drain

- Vibhas Misra
(XIth, 'A')

'Full many a gem, of purest ray serene,
The dark unfathomed caves of ocean bear.
Full many a flower is born to blushunseen,
And waste its fragrance is the desert air.'

I some how feel very cross when people even in this age of globalisation talk about brain drain. In this age when all the countries in the world are interlinked I would say that the term brain drain itself is obsolete.

The word Brain Drain refers to the migration of professional classes, to more developed countries where there are ample opportunities not only for the development of their talent, but also for better employment recognition. This migration is a great loss and educated. 'Brain Drain' came into vogue in '1963'.

One has to accept the solid truth that infrastructure in India is not up to the mark and thus one can't blame people going abroad. Well going abroad doesn't necessarily mean settling there and even settling there would definitely not imply working only for the other nations.

Infact what we call brain drain, is actually a mutural benefit for both the nations and the whole world. Consider an Indiain engineer who is working abroad. By his skill he would improve that nation but he will also benefit India as he will develop some new technologies and his skill as worker will also improve. We can see some examples also like Kiran Mazumdar Shah who worked in Britain, came back to India and setup the Bio on industry at Banglore. Like this only many instances are there.

So, what we call brain drain is it really brain drain?

Now also if you all are in its favour no one can stop anyone because everyone has the right to project his thoughts in Democracy.

But in todays world, which is a global village, it does not mean that a person who has gone abroad to work can't benefit his own country. Gone are those days when people who went abroad didn't come back or could not contribute to India.

In todays context therefore working abroad does not necessarily mean Brain Drain.

Kalam's 10 Points Oath for Students

- Ravi Raj Verma
(XIth - 'B')

- *I will pursue my education and work with dedication and I will excel in it.*
- *From now onwards I will teach at least 10 people to read and write.*
- *I will plant at least 10 sapling and shall ensure their growth through constant effort.*
- *I will visit rual and vrban areas and permanently wean away at least 5 persons from addiction and gambling.*
- *I will constantly endeavour to make a corruption free society.*
- *I will be honest and endevour to remove the pain of my suffering brethren.*
- *I will not support any religion, caste on language differentiation.*
- *I will work toward becoming an enlightened citizen and make my family righteous.*
- *I will always be a friend of the mentally and physically challenged and will work hard to make them feel normal like the rest of us.*
- *I will proudly celebrate the success of my country and my people.*

- Dr. APJ. Abdul Kalam

A Strange Conversation

Compilled by - Ravi Raj Verma (XIth - 'B')

Once a clerk in an office applied for two weeks leave because of his brother's marriage. The officer called him and this conversation took place.

Officer : How many days are there in this year?

Clerk : 366 days, Sir.

Officer : How many hours do you work everyday?

Cleark : 8 hours, Sir.

Officer : That is, you work 122 days in a year?

Clerk : Yes, Sir.

Officer : How many additional holidays do you bit in a year?

Clerk : 30 days. Sir.

Officer : That is you work 92 days in a year?

Clerk : Yes Sir.

Officer : Thre are 52 Sundays in a year, which means you work 40 days in a year?

Clerk : Yes Sir.

Officer : There are 52 Saturdays in a year. When you get half day leave, which amounts to 26 holidays.

Clerk : Yes Sir.

Officer : So, you are working for 19 days and you still want 14 days leave. This shows that you don't want to work even for a single day. Get lost and never apply for any leave in future.

Success

- Prasant Patel (7th - 'A')

Success is like a tower.
That is our Idea's power,
Success has the elements of joy and sorrow,
Its path is very risky and narrow.
Everyone wants success in his job,
But success requires great efforts in fog.
Success is like a deligtful rain.
But failure gives an unbearable pain.

TITANIC

- Pushpendra Pratap Singh
(XIth - 'B')

Ships have come and ships have gone,
They reached their destination except for one,
And one that did not reach,
was the one called Titanic.
It soiled across the ocean blue,
Titanic was a ship too good to be true,
The people on board were enjoying,
They did not know that,
Soon they would be dying.
The Titanic hit an iceberg and was wrecked,
In a few hours the water was up to the deck.
The people all ran helter-skelter.
Full of Panic and fright and the water was freezing,
It was not possible to saw all on board,
Very few passengers could be sound,
Other froze and were left to their faith,
Today, as we remember the Titanic,
Tears fill our eyes as we think;
This was the ship which was not supposed to sink.

ॐ

Just living is not enough one must have sunshine, freedom and a little love.

A MATHEMATICAL JOKE

- Pushpendra Pratap Singh
(XIth - 'B')

One there were three teachers. They were praising their subject. First of all Mr. History said, 'I can kill both of you with the sword of Maharana Pratap.' Then Mr. Chemistry started shouting, 'I can kill both of you with Ken (Potassium cyanide)'

Mr. Mathematics was sitting silent. Mr. History and Mr. Chemistry asked Mr. Mathematics, 'What can you do?' Mr. Mathematics thought for a while and said, 'I can put both of you in a bracket and multipy by zero.

Work, Work, Work

- Pushpendra Pratap Singh
(XIth - 'B')

If you are happy, keep right on working. If disappointments come, work. If your health is theatened, work. When faith falters, work, When dreams are shattered and hope seems dead, work. No matter what ails you, work. Idleness gives room for doubts or fears. Work as if your life were in peril, it really is. So work faithfully. Work with faith. Work is the greatest remedy available for mintal and Physical afflictions. Work is man's greatest, functions, he is nothing, he can do nothing, he can achieve nothing, fulfill nothing without working!

Procrastination is the thief of time.

In Brief: Tsunami

- Ujjawal Deep
(8th - 'A')

Tsunami is a very large fast moving and damaging high sea or cean wave. It is caused by some form of movement of the sea floor, for example- an earthquake, a volcanic explasion, landslide, very strong wind etc.

Tsunami pronounced qakanese 'tsoo-nah-mee' is a 19th century qapanese word that denotes 'harbour wave' Tsumeans 'harbour' and nami hints at 'wave'.

Thousands of lives have been lost in lands adjoining the Pacific acean because of Tsunami's which strike or hit coadstal areas with destructive force and deal a server blow to homes, industries, etc. Tsunamis may cross whale ocean brasins at speeds reaching 600 to 800 km/hour. the waves may also touch heights of over 30 metres.

In December 2004 Tsunami caused great damage to coastal areas in Indonesia, Thailand, South India, Sri Lanka, Somalia, etc.

Enhancing the Spiritual Powers

- Ajay Anand Yadav
(XIth, 'B')

A part from the physical, financial, political powers of the world, each one of us has hidden inside us the greatest spiritual powers.

Generally, power is symbolized by the strength in the arms and so the four or eight hands of the Goddess, Shakti stand for the spiritual powers innate within each human soul.

In reality there are many more powers. Time, Breath, thoughts, virtues are also powers. 'Samay bada balwan. (Time is very powerful)' and 'Samay ke Balihari. (It's all due to the importance of time). refer to the present crucial time of transormation of self and the world, the 'confluence age'. As the hand of time move, the future becomes present and present sests in the past. What is the duration of the present? It becomes the past in a moment. It is said that the past is cancelled cheque and future is promissory note, whereas the present in hard cash with can be enjoyed at this very moment. It is also said that the past is history. Future is a mystery, where as the present is the golden gift given to us by God. So we should make the best of the present by actually enjoying it. However, if we honestly check ourselves. We will see that 75% of our time goes in the past. and 20% in future, while hardly 5% of our time is spent in the present. When the mind lingers in the past, it is just thinking about 'Why', 'What', 'When', 'How' - it's just a post-mortem of whatever has happened and can't be changed. Those thoughts are waste and negative thoughts. On the otherhand when we think about future, it is generally filled with anxiety and uncertaity. Therefore about 95% of our time we are living in negativity. The only positive thought that can be taken from the past is to derive a lesson from whatever has happened and once this happens we need not waste a single thought over it again. So we should put a full stop to the past and future and enjoy the present.

"In asking for miracles, we are not asking for something outside us to change, but for something inside us to change.'

- Marianne Williamson

There are eight main powers that have particular importance at

the confluence Age : Power to withdraw, Power to pack-up. Power to tolerate, Power to adjust, Power to discriminate, Power to Judge, Power to face & Power to cooperate. We spiritual students, require the spiritual powers as this canopy of protection sustains, our virtues as we battle to conquer the vices.

Powers are like neutralizing factors, they neutralize the effect of the vices or negativity - the positivity then stands out like the bright sun after an eclipse. We now will delve into a detailed discussion of the eight, main, spiritual powers.

'Problems come not to trouble us but to humble us.'

Tulsidas Ji : A Great Hindi Poet

- Aditya Vikram Singi
(VIII - 'B')

Many great souls have been born on the pious earth of India. They have given us unforgettable inspiration which we can't forget. Tulsidas ji was one of them. His father Atma Ram Dubey was a man of simple nature. He used to live in form of a saint. His mother's name was Hulsi. She was very pious lady. It's said that Tulsidas was born at Rajapur in Banda district. It is heared that he utterend the world 'Rama' in the time of brith in palce of weeping like news born baby. It was a great mystery for his parents.

In the prime of his life, he was married to Ratna Bai. He was a great devotee of Rama, since his childhood, he visited many religious places and devoted his life in the devotion of his lord Rama. He wrote many epics and religious books like Barwe Ramayan, Ramalala Nahchoo, Vinay Patrika, Tulsi Manjari and the most popular religious book 'Ramcharit Manas'. This book has been composed with the extreme religious views including the affection of Bharat and Rama and moral duty of Laxman towards his younger brother.

Infact, Tulsidas got nothing by his own attempt it was the inspiration of his wife, who guided him towards spiritual awakening and divine contemplation of God as results of it he is remembered with a great respect even today his name is immoratal his books remind us of the knowledge of the spirituality.

Reality of Life

- Abhinav Shukla
(11th - 'B')

'All that glitters is not gold." the beauty of the moon inspired many to reach it but they were disap pointed to find that it is not as beautiful as it looks. The dazzling brightness of the desert made many thirsty people run to it but on reaching the spot they met failure. A king sitting on a golden throne, wearing a gold crown and having thousands of people at his command seems to be very happy but unfortunately 'Uneasy lies the head that wears the crown.' Great men holding high posts are just as dissatisfied as the rich men who are master of lakhs and crores. Their life is so busy and full of struggle that they find not even a single minute to live in peace. It is well known about our late Pt. Jawaharlal Nehru that he worked 18 hours out of 24 hours and nobody is unware of the fact that our Shastriji and Indira Gandhi also could not live in peace on account of the case and anixety of the state.

Inspite of the fact that happiness is a rare thing and it is impossible to attainit everyone wants to be happy and to lead a life of pleasure and peace. One who is devoid of the temptation of pleasure is either a God or a mad man. Though this desire for pleasure and peace is a universal desire, yet only very few are fortunate enough to be truly happy in life.

In fact meaning of happiness is to be fully satisfied with what we get contentment is the only key to be happy and free to case in life. In reality, the meaning of happiness is always misunderstood by us. We mix it with pleasure and are unable to know the difference between them. Peasure is short lived and connected with physical enjoyment while happiness is permanent and connected with the soul.

Ambition and desires for material gains may be regarded as fatal enemies of happiness and real pleasure and that is why the saints, hermits and poor folk whose ambition and desire are dead are able to enjoy both internal and external happiness and peace in life. The more a man is involved in pursuit of wordly pleasures and ambitions the more he is far from the boon and blessing of a calm and contented life.

All great men and religous teachers christ, Buddha and Gandhi believed in moral life and simple living. Though immoral, corrupt and dishonest persons generally seem to be happly, in reality they never enjoy happiness.

The great poet W.H. Davis says ;

'With the small house, this garden large,

this little gold this lovely mate,
With health in body peace at heart,
Show me a man more great.'

Wordsworth, the high priest of nature, finds natue a source of perennial joy. He is grieved to think -

'The world is too much with us.'

and

'What man has made of man.'

Men busy in material prosperity are deprivied of the pleasures of nature.

Though in order to get mental peace it is necessary to live under the open sky in the light of the sun and fresh air, it does not mean that we should cut off our relations with the rest of the world. Man is a social animal. A good family and a happy sorrounding is always a source of happiness to him.

Work is worship and an idle man's brain is the devil's workshop. In order to get real and inner happiness we should always keep ourselves busy and take pleasure in serving others without caring for money. We are sure to be happy in life if we leave the critical out look and develop a sense of looking for good in everything.

Thus by living a life of contenment and satisfaction and by following all the moral virtues, we can not only achieve real happiness but can be a source of bliss and joy to others also.

'Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out in-equalities imposed by birth and other circumstances.'

- Indira Gandhi

प्रिय-पथ के यह शूल मुझे अति प्यारे ही हैं!

हीरक सी वह याद, बनेगा जीवन सोना,
जल-जल तप-तप किन्तु, खरा इसको है होना!
चल ज्वाला के देश जहाँ अङ्गारे ही हैं!

तम तमाल ने फूल गिरा दिन पलकें खोलीं,
मैंने दुख में प्रथम तभी सुख-मिश्री घोली।
ठहरें पल भर देव अश्रु वह खारे ही हैं!

- महादेवी वर्मा *(सान्ध्य गीत से साभार)*

Money & Education

Money

- Vishal Sharma
(11th 'B')

Money is very important in our whole life. Very first when childern are born. He wants milk, clothes , oil talc and medicine etc. All these things we will buy with money. when the childern is 5 years old . He wants to go to school for school fees we want money when he is 17 years he does professional course and so he wants money and when he marries he wants money for his wife childern. So we also say that money is very necessary in our life.

In the Society man and woman are different or the basis of money they are called higher class. Middle class, lower class. In the society, no body respects lower class men and women, but money is not every thing in life with money we do not buy joy with money we can not make any one intelligent but with money can give the job to intelligent people.

With money we can have any degree but we can not be perfect in life money is very useful. When we have no money no one cares for us No body loves you. So I think that money is very important in life but it is not every thing.

Education

I want to tell some definitions of education according to some philosper. According to Socrates. 'Education means bringing out the ideas of universal, validity which are latent in the mind of every man.' According to Rousseau "Life is education". According to Herbert - 'Education is the development of good moral charcater.' According to Vivekanand" Education is the manifestation of divinity exsiting in man "and According to plato". Education is a process of physical, mental and intellectual development."

Education is very important in our life. Importance of Education in personal life for the Development of innate powers, for the control and sublimation of Instincts, for satisfaction of needs, for the importance of vocational Efficiency, for Re-Oranisation of experiences, for guidance.

Importance of education is in social life for the improvement of social efficency, for social and civil duties, for the security of culture and civilization, for preparation of good citizen, for national Integration and for social Reformation.

What is Mathematics

Compiled by -
Abhay Kumar Pandey
(11th 'B')

M - Manipulation of problems
A - Attention of Mind
T - Tension of Answer
H - Habit of Practics
E - Explanation of Theory
M - Multiplication of Digits
A - Assumption of Values
T - Toleration of sums
I - Information of Figures
C - Construction of Figures
S - Solition of Tricky Situation

Laughing Corner

- Abhay Kumar Pandey
(11th 'B')

A father asked his son if a hen gives two eggs per day. How many eggs will give in a week. The child answered 12. Father was surprised and asked How? Child answered - very simple because sunday is a holiday.

* * * * * * * * * * * * *

Teacher - What is the formula of water?
Student - Madam, H, I, J, K, L, M, N. O
Teaher - Who told you that?
Student - You told Mandam, You said that formula of under is H to O (H_2O)

Facts of Life

- Hariom Gupta (11th 'B')

At least 5 people in this world love you so much they would die for you.

They only reason anyone would ever hate you is because they want to be just like you.

Every night someone thinks about you before he goes to sleep.

If not for you somenone may not be living.

Some one that you don't know even exists loves you.

When you think the world has turned its back on you, take a look, you most likely turned your back on the world.

Always remember compliments you received forget about the rude remarks.

If you have a great friend take the time to let them know they're great.

At least 5 people in this world love you in someway.

A smile from you can bring happiness to anyone, even it they don't like you.

You mean the world to someone.

You are special and unique.

When you make the biggest mistake ever some thing good comes from it.

When you think you have no chance of getting what you want, you probably wont get it. But belive in yourself you probably sooner or later will get it.

Always tell some one how you feel about them; you will feel much better when they know.

Life

- Aditya Pratap (7th - 'A')

Life is a river,
Virtue is the bathing place,
Truth is its water,
Moral convictions are its banks,
Mercy is its waves,
In such a river bathe.

Ayurveda - A precious gift of Nature

- Aditya Kumar Uttam
(XI - 'B')

Everyone believes in Nature's healing power. If nature gives us difficulties she also provides us Solution. Nature is very kind towards her creations. She has many hidden secrets that are the precious gifts of nature to mankind.

Ayurveda is one such gift from Nature's beauty Ayurveda has saved men from incurable diseases. It has taught us how to live a healthful life. Ayurveda is an ancient medical science that utilizes herles, shruls, roots and even soil to beat the maladies. It does not violate the laws of nature. However in the modern age people are forgetting its importance.

According to the Ramayana when Laxman became unconscious, the famous Ayurvedacharya Sushen saved his life, will the hlep of the 'Sanjivani Buti' brought from Hanumanji from the Himalaya.

Mahatma Gandhi had great faith in Ayurveda and used herbal medicine to cure the people in his Ashram. Today there is a need to scene and promote this ancient system of medicine that is Natural's greatest gift to us. In the modern life stress and anxiety are taking then, tol on human life. He has became a slave to harmful chemical, pills, potions and drugs. Once again man should seek shelter in the lap of Nature and seek relief in 'Ayurveda'.

Silently

- Aditya Pratap (7th - 'A')

Do good works silently,
Love god and men silently,
Do your duty silently,
Accept God's will silently,
Be happy with others silently,
Conceal other's fault silently,
Wish and aspire secretly and silently,
Sacrifice and resign yourself silently,
Look towards heaven silently,
Attain virtual bless silentely,
Persevere until death silently.

His Holiness : The Dalai Lama

- Ujjwal Deep
(8th - 'A')

Awakening the mind,
Enlightening the world's heart.

These are the lines written by Cresha she-ka-wa as a result of his long experince of putting the mind training teaching into practice known as the 'Serven point mind training?' they are as follows -

(1) Explaining the preliminaries as a basis for the practice.

(2) The actual practice, training in the conventional awakening mind.

(3) Transforming adverse circumstances into the path to enlightenment.

(4) The integrated practice of a single life time.

(5) The measure of haring trained the mind.

(6) The commitments of mind training.

(7) The precepts of mind training.

A Sound mind lives in a sound body

- Nikhil Gupta
(7th - 'A')

'Health is wealth' this is the saying we have been heaving from our elders repeated from times immemorial. These are the golden words which touch our hearts and minds. A person in good health is a healthy body, fit for doing work at all times. These are the goods which keep control on diseases caused by deficiency of vitamins and minerals. A better way for the children to maintain good health is to take balanced diet because a boy (13-15 yrs) needs 2,500 caories, energy per day and in age of 16-19 yrs., he needs 3,150 calories energy per day. So, it is very necessary to maintain our health.

Our Annual Function Night

- Arpan Srivastava (X - 'B')
Secretary - Kishore Bharti

Every year we celebrate our annual function with great zeal and enthusiam. We wait anxiously for our cultural evening as it is always a same-stirring presentation of the noble ideals that our school is known for through our plays and programmes we project our ethical values and reiterate our commitment towards presevation of our ancient culture.

Following up our tradition we staged a full length drama inspired by India's first war of independence. It was written by our english teacher Mrs. Sharda Rao and directed by a velevan actor Mr. Baleshwar Sharma who was closely prociated with Priathvi theatre about 150 students participated in this mega event and it assumed the form of a holy 'Yagya'. We offered an homage to our heroes through the heat-touching performance of our students long practice semious were organized; all the character were brought to life by the dedication of the students. Shri Gaya Prasad ji was the driving force of the play and often cracked jokes to lighten the sense atmosphere. His constuant encourgement filled us with a new vigour our hostel worden Sri Sureah ji took a keen interest in the play and supervised the procedings. The N.C.C. cadets played a special role in the play and enacted the actual baller scenes on the field. The sige of Delhi by the revolutionaries, the capture of the revolutionaries by the cruel British forces presented a bloody seeme. The viewers were mesmeuzed. The execution of Mangal Pandey and Tantaya Tope brought tears to the eye of the spectators. The drama went on to be a huge success.

Family of Subjects

- Nikhil Gupta
(7th - 'A')

Mr. History is the head of the family. His wife is Mrs. Sanskrit. They are grandparents of Maths. She is very cute but good in calculation. Her mother Mrs. Hindi, is a simple woman. Mr. Geography is husband of Mrs. Hindi. He is very angry man. Mr. Science is the uncle of Maths. He is very intelligent. He also teaches Maths. They all love one another very much.

Iron Lady

- Pranav Tripathi
(9 - 'B')

People says that Indira Gandhi was an Iron Lady but in my opinion Benazir Bhutto was an Iron Lady. She was the former Prime Minister of Pakistan. She was not only a outstanding politician of Pakistan but also of whole Indian sub-continent.

Benezir was born on 1953 in Karanchi. Her father name was Julfikar Ali Bhutto. He was also former prime minister of Pakistan. Benazir had three siblings. She was married to Asif Ali Jardari who is presently the vice-president of Pakistan Peoples Party. Bhutto gave birth to three children.

President of Pakistan Pervez Musharraf absconded her. When she returned after five years from London to Pakistan, her supporters welcomed her. She was ready to face polls and she started attending assemblies in principal cities of Pakistan. On 27th Dec., 2007 in Rawalpindi, after attending a meeting she was assassinated.

She was an asset for the whole world. The whole world lost a great soul. She wanted democracy in Pakistan. Her contribution is immortal. We can't forget such an iron lady.

Good Health

- Prashant Patel
(7th - 'A')

Health is better than wealth. It is one of the best gifts to us. But is can easily be lost. It seems natural to us to be well when we are young. We do not think much about our health. We are often careless about things. When we have lost it we realize its values. How can we keepour good health?

First, we must eat plain food in the right time. We must eat enough and not too much secondly. We must have plenty of fresh air. Thirdly, we must get enough sleep. 'Early to bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise.' Fourthly we must work, heartily, we must avoid indulging in bad habits.

Art is Life and Life is Art

- Puspendra Yadav
(9th 'A')

It is said that 'Art is Life'. There is a close relationship between life and art. Art originates beauty in the world of man. The aim of art education is to sensitize the students so that they may learn to respond to the beauty in live colour, form movement harmony, rhythmand perspective.

Art is the medium to express the creative bent of mind. Figures and sketch forms make us understand anything very clearly in a lucid manner. The history of art is as ancient as the evolution of man. The painting in the caves of early man shows the fascination of human life, shapes and colours. Without art life is like curry without spices that is to say dull and taste-eless. It is source of joy, it also recreates the eyes and satisifies the soul of both the astist and the spectator.

Art in every age has portrayed the inner thoughts, feelings of a common man. It also depiets the sorrow struggle. failures and success. God has created every form of life, a perfection of design and creativity. Everyone is born with talents. There is however a need to identify it for yourself. Having an aptitude for fine arts is equivalent to have talent in other field. Regular practice and determination. Undoubtelly, brings the best out of you sooner than you can think of.

Now with the help of computers you can enhance the quality of your talent and take art as a bright career option. 'Art is that creation of Man. Which provids an ever ending joy.'

Time

- Puspendra Yadav
(9th 'A')

Take time to think, it is a source of power.
Take time to play, it is a secret of perpetual youth.
Take time to love, it is a god given privilege.
Take time to pray, it is the greatest power on earth.
Take time to give, life is too short to be selfish.
Take time to succeed, it is price of hard work.

Indian Police

- Pushpendra Yadav
(IXth, 'A')

'Our Indian Police is go great,
that it always comes late
when some one is killed.
it comes to see murderer's skill,
it catches only the persons innocent
washes them like clothes, using sticks as detergent.

In case it comes across the culprits hide
Takes been and lets them on a drive
I am not doing the wrong publicity,
this is the story of every town and city
In the paper you read and on AIR you hear,
Loots in train and roads by these alvers
Truth is that they are the tools of polit-icians
Politicians who are police charmer and social magicians.

They use police as personal property
of course the property enjoys own liberty
In Netaji's rallies and Bahajni's B'day treats
They work round the clock standing on feet
out of rallies get nothing, in the latter get share,
No criminals except politican enter there.
Politicians are their first duty.
Public as past time.
However, you get them ahead of time.
Where these is chance of wealth woman and wine.

NASA

- Shwetank Singh Bhadauriya
(9th - 'B')

National Aeronauties and Space Administration

'NASA' an agency of united states government was established by the National Acronautics and Spece Act of 1958. The administration of NASA is appointed from civilian life by the president with the advice and consent of the U.S. Senate.

The Physics of Space Provided by 'NASA'

Th physics of Space - The boundary between the atmosphere of the earth and space is diffuse rather than sharp because the density of air diminishes gradually with inceasing altitude, the air in the upper atmosphere is so thin that is merges almost imperceptibly with space. It is 30 km. above sea level, the barometric pressure is one high of that at sea level; at 60 km. it is 1/36000, at 90 km. it is 1/400,000. Even at an attitude of 200 : sufficient residual atmosphere remains to slow down artificial satelites by aerodynamic drying; thus long duration satellites must have a higher orbital altitude.

Do You Know?

- Shwetank Singh Bhadouriya
- (9th - 'B')

Some Important Satellite -

(1) Environmental Satellite, (2) Communication Satellite, (3) Solar Satelite.

(1) Environmental Satellite - The Nimbus satellite circle the earth in an orbit that passess over the North and South Pole several times a day, imaging the surface on each pass.

(2) Comunication Satellite - The Syncom 4 communication satelite was leunched from the space shuttle discovery. Modern communication satelites receive signals from the earth. amplify them adn reransmit them, providing television, telefan, telephone, radio and digital data links around the world.

(3) Solar Satellite - The Solar munimum mission satelite was a scientific satelite designed to study solar radiation.

Webcasting

- Yash Awasthi
(IX - 'B')

Webcasting, a data communication technique that uses the interest and particularly the world wide web, to borad cast information.

Webcasting is synonmyous with push technology, which is the distribution of information across the world wide web by 'pushing' it on to a user computer. The recipient doesn't have to request the information specifically, as would normally be the case, this contrasts with the established 'pull' technology where he user's brower must requist a even page before it is sent the principle of webcasting is similar to radio or television brood casting, except that audio and video is processed by special encoding software before being made available over the internet. The user's computer decodes the information befores displaying & playing it the technology that enables webcaiting was introduction by the 'pointcast' company in 1996 up to that time, usershad to activity seek information by browsing web sites and selecting the itesms they wanted. In the webcasting model, the user can indicate an interest in a specific site or topic, such as local weather, their favourite football, team, or the latest cricket scroes. Updated information is then downloaded into their computers.

In creasingly, companies are using webcasting used to deliver information probably the oldest and most urdely example of this is e-mail, which is a push technology as the sender pushes the mesage.

Nowdays, webcasting is mostly new technique in companies and it important in our life and the whole world.

Leader and Boss

- Divyansh Chaudhari (9th - 'B')

The Boss drives the people; the leader coaches then the Boss depends on authority; the leader on Good will. The Boss says, 'I', the leader says, 'We' the boss fires the flame for the breakdown; the leader fixes the breakdown.

The Boss knows how it is done; the leader shows how to do it.

The Boss says, 'Go' the leader says, 'Lets go'!

Word in its Number

- Ram Ji Mishra
(VIII - 'A')

The most selfish ONE letter word .....

'I'

Avoid it

The most satisfying TWO letter word .....

'WE'

Use it

The most poisonous THREE letter word .....

'EGO'

Kill it

The most used FOUR letter word ....

'LOVE'

Value it

The most pleasing FIVE letter word....

'SMILE'

Keep it

The fastest spreading SIX letter word ....

'RUMOUR'

Ignore it

The hardest working SEVEN letter word ....

'SUCCESS'

Achieve it

The most enviable EIGHT letter word ...

'JEALOUSY'

Keep Away

The most powerful NINE letter word ....

'KNOWLEDGE'

Acquire it

The most essential TEN letter word ....

'CONFIDENCE'

Trust it

Never Forget

- Ramji Mishra
(VIII - 'A')

Education is Journey, not a destination.
शिक्षा एक यात्रा है, न कि गन्तव्य।
To have balance in all situations is the key to happines..
सभी परिस्थितियोंम में समान रहना ही सफलता की कुंजी है।
Be like a flower, which mesmerizes the world that crushes it.
पुष्प की तरह बनो, जो स्वयं कुचलकर संसार को सुगन्धित करता है।
The greatest loss is the loss of self confidence.
सर्वश्रेष्ठ हानि अपने विश्वास की हानि है।
Reading without thinking is like eating without digesting.
बिना सोचविचार के पढ़ना बिना पचे हुए भोजन के सदृश है।
Enjoy the day 'Everyday'.
दिन का आनन्द प्रत्येक दिन की तरह लो।
Do not wait for the leaders' do it alone.
पथ प्रदर्शकों की प्रतीक्षा मत करो, अपना कार्य स्वयं करो।
To receive the best, you have got to give your best.
अच्छी सफलता ही सर्वश्रेष्ठ परिश्रम का फल है।
The blue bird carries the sky on its back.
कर्मवीरों के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है।
Treat today as if you won't exist tomorrow.
काल करै सो आज कर, आज करै सो अब, पल में परलय होगी।
There is no achievement without objectives.
बिना लक्ष्य के प्राप्ति नहीं होती है।
Attitude is a little thing that makes a big difference.
आचरण एक छोटी वस्तु है जो बड़ा अन्तर पैदा कर देती है।
Pray for the dead and struggle for the living.
मृत्यु के लिए प्रार्थना एवं जीवन के लिए संघर्ष करना चाहिए।
Heroes and winners are not the same thing.
वीर एवं विजयी समान नहीं होते हैं।
Beauty lies in the eyes of beholder.

सुन्दरता देखने वालों के नेत्रों में होती है।

Nothing but the heart can change the heart.

कुछ नहीं मगर हृदय हृदय को परिवर्तित कर सकता है।

Knowledge is the frontier of tomorrow.

ज्ञान कल की सीमा है।

An injury is much sooner forgotten than an insult.

अपमान की अपेक्षा चोट को शीघ्रता से भुलाया जा सकता है।

Character is much easier kept than recovered.

पुनः प्राप्त करने की अपेक्षा चरित्र को रखे रहना अधिक सरल है।

The Pride of Being an Indian

- Shreyansh Tiwari
(8th - 'A')

'At midnight hour, when the world sleeps, India shall awaken to freedom and life.' These were the words of Pt. Jawahar Lal Nehru on the event of India's independence day. India has always been a great nation. It has produced men of great minds, great courgage, and great virtue, Even today, Indians all over the world have made their mark in every field. They rule the hearts of people of other nations with their sicerity and hard work. Our culture is one of the oldest in the world, will the values taught by it still told true in next century?

We, students are about to step into adult hood. It will be a world totally different from the sheltered world where we now live. We may have to face evils such as corruption but we must fight such evils. Our values should be deeply instilled in our souls. Even though India today is in clutches of corruption, bad leadership and financial crises. We must fight these and take pride in our culture, our values and the teaching of our forefathers. We are all moving towards different fields but wherever we go. We must carry the torch of our culture within our hearts.

'You can take a man out of India
but you can not take
India out of man.'

विद्यालय प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ० प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्रीकृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्रजीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्रजीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	पं० रामबालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	श्री ओमप्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेमचन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	डॉ० देवेन्दु बहादुर सिंह	अ० प्रा० कर्नल	कानपुर
	डॉ० शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	जयपुर
	डॉ० योगेन्द्र भार्गव	अ० प्रा० अभियन्ता	कानपुर
	श्री तरुण विजय	पत्रकार	दिल्ली
	डॉ० अशोक वार्ष्णेय	सामाजिक कार्यकर्ता	कानपुर
	श्री ओम शंकर त्रिपाठी	प्रधानाचार्य	कानपुर

सन्ध्या-सुन्दरी

दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुन्दरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे।

तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,

किन्तु जरा गंभीर, -नहीं है उनमें हास-विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक

गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से

हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

Printed at : Maheshwari Brothers, Kanpur • Ph.: 2378419